THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 205 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) आश्विन कृ.13 2080 गुरुवार, 12 अक्टूबर-2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

इजराइल का गाजा पर फास्फोरस बम से हमला

इससे इलाके में ऑक्सीजन कम हो जाएगी; जंग में अब तक 2,150 लोगों की मौत

तेल अवीव, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इजराइल-हमास जंग का आज पांचवां दिन है। इस बीच इजराइल ने फिलिस्तीन पर फास्फोरस बम दागे हैं। फिलिस्तीन की न्यूज एजेंसी 'वाफा' के मुताबिक, इजराइली सेना ने गाजा से लगे हुए अल-करामा शहर पर इजराइल ने प्रतिबंधित फास्फोरस बम का इस्तेमाल किया है। ये बम जिस इलाके में गिरते हैं वहां ऑक्सीजन लेवल कम हो जाता है। इसके कण इतने छोटो होते हैं कि मानव शरीर में घुस जाते हैं।

वहीं, रातभर में इजराइल ने गाजा में हमास के 200 ठिकानों पर हमले किए। इजराइली एयरफोर्स ने बताया है कि उन्होंने हमास कमांडर मोहम्मद देइफ के पिता के घर पर अटैक किया है। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक इस हमले में देइफ के भाई की मौत हुई है।

गाजा में यूएन के 9 कर्मचारी मारे गए

इजराइल और हमास की जंग में अब तक 2,150 लोगों की मौत हुई है। इनमें से करीब 1,200 इजराइली हैं। वहीं अब तक करीब 950 फिलिस्तीनियों ने भी जान गंवाई है। गाजा पर इजराइल के हमले में यूएन के 9 कर्मचारी मारे गए हैं। इस बीच मंगलवार रात अमेरिका का पहला ट्रांसपोर्ट प्लेन गोला-बारूद के साथ इजराइल के नेवातिम एयरबेस पर पहुंच गया। दूसरी तरफ, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने पहली बार जंग को लेकर बयान दिया। उन्होंने कहा- यह युद्ध अमेरिकी विदेश नीति की विफलता है। अमेरिका फिलिस्तीनियों के हित को नजरअंदाज कर रहा है।

इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और उप राष्ट्रपति कमला हैरिस ने इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से युद्ध के हालात की जानकारी ली। बाइडेन ने देर रात व्हाइट हाउस से अपने संबोधन में कहा कि अमेरिका इजराइल के साथ है। इजराइल में एक हजार लोगों की अमानवीय तरह से हत्याएं की गई हैं। इनमें 14 अमेरिकी नागरिक मारे गए। इजराइल में नरसंहार हुआ है। इजराइल को इस हमले का जवाब देने का अधिकार है।

इसके साथ ही उन्होंने इजराइल के लिए मदद को दोगुना करने की घोषणा की। बाइडेन ने कहा- यह आतंकवाद है, लेकिन दुख की बात है कि यहूदी लोगों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। वहीं अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने बताया कि इजराइल के साथ एकजुटता दिखाने के लिए विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन आज इजराइल पहुंच सकते हैं।

फिलिस्तीन की एनर्जी अथॉरिटी के चेयरमैन थाफर मेल्हेम ने वॉयस ऑफ फिलिस्तीन रेडियो को बताया कि गाजा पट्टी के एकमात्र पावर प्लांट में 9 घंटे का ईंधन बचा है। इसके पूरे इलाके की बिजली सप्लाई रुक जाएगी। 9 अक्टूबर को गाजा बॉर्डर पर कब्जे के बाद इजराइल ने गाजा तक होने वाली बिजली सप्लाई रोक दी थी।

लेबनान के बाद सीरिया से भी इजराइल पर हुए हमले

लेबनान के बाद इजराइल पर सीरिया ने भी हमला कर दिया है। इजराइली सेना ने दावा किया कि वह सीरिया की ओर से हो रही गोलीबारी और रॉकेट हमलों का जवाब तोपखाने और मोर्टार से दे रही है। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने भी कहा है कि फिलिस्तीनी गुट ने सीरियाई क्षेत्र से इजराइल की तरफ रॉकेट हमले किए। दूसरी तरफ, लेबनान से भी इजराइल पर दोबारा हमला हुआ। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, लेबनान से 15 रॉकेट दागे गए। ये रॉकेट इजराइल के

हमें खत्म करना चाहते हैं पीएम : केजरीवाल

हमारे खिलाफ 170 से ज्यादा केस, 140 के फैसले हमारे पक्ष में; एक पैसे का घोटाला नहीं

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आम आदमी पार्टी को खत्म करना चाहते हैं। हमारे विधायकों और नेताओं के खिलाफ झूठे केस दर्ज किए जा रहे हैं। अब तक हमारे खिलाफ 1%0 केस दर्ज किए गए। 140 फैसले हमारे पक्ष में आए। एक पैसे का घोटाला नहीं मिला।

केजरीवाल ने कहा- आप नेताओं के खिलाफ फर्जी मामला चल रहा है। दो साल से हमारे सीनियर नेताओं को लगातार गिरफ्तार किया जा रहा है। मनीष सिसोदिया के खिलाफ ईडी के पास कोई सबूत नहीं है। उन्होंने संजय सिंह को गिरफ्तार किया और अमानतुल्ला खान के घर पर छापेमारी की। एक पैसे का घोटाला नहीं निकला। भ्रष्ट नेता भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर देश का माहौल खराब करने का आरोप लगाया। केजरीवाल ने कहा- मोदी की चाल और जुबान में अहंकार है। उनसे सब कोई डरा हुआ है। प्रधानमंत्री की पूरी कोशिश है कि आप को कुचल दिया जाए। 2015 में जैसे ही हमारी सरकार बनी तो शुंगलू कमेटी बनाई, 400 फाइल जांच की गई लेकिन कोई गड़बड़ी नहीं मिली। अब तक

जितने भी जजमेंट आए हैं, उसमें हमारे खिलाफ कुछ नहीं निकला।

दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने बुधवार को शराब नीति घोटाले में गिरफ्तार आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह की रिमांड 3 दिन के लिए बढ़ा दी। ईडी ने मंगलवार को पांच दिन की रिमांड पूरी होने के बाद दोबारा उन्हें स्पेशल कोर्ट में पेश किया था।

रिमांड बढ़ाते हुए कोर्ट ने यह भी आदेश दिया कि, ईडी अदालत को बिना बताए संजय सिंह को कहीं नहीं ले जा सकती। दरअसल आप का आरोप था जांच एजेंसी संजय को दो बार किसी अनजान जगह ले गई थी। तब संजय ने सवाल किया था कि, उनका एनकाउंटर हो गया तो कौन जिम्मेदार होगा।

संजय सिंह के परिवार को परेशान करने का आरोप

आप विधायक दिलीप पांडे ने बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा- उनकी पार्टी कोर्ट की शुक्रगुजार है कि उन्होंने साफ शब्दों में लिखा कि अनुमति के बगैर संजय सिंह को कहीं नहीं ले जा सकते, और मिलने के समय में कोई ऊंच नीच नहीं की जाएगी। ईडी बीजेपी की कोई रूल बुक फॉलो कर रही है, नहीं तो कोर्ट को इतना स्पष्ट लिखित में क्यों देना पड़ता।

पांडे ने कहा- ईडी के ऊपर कौन बैठा है जो आधारहीन गिरफ्तारी करता है। संजय सिंह के परिवार को भी मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। परिवार के मिलने का समय शाम 6-% बजे होता है लेकिन परिवार को लंबा इंतजार करवाया जाता है।

न्यूजक्लिक फॉरेन फंडिंग केस में सीबीआई ने जांच शुरू की

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। चीन से फंड लेने और चाइनीज प्रोपेगेंडा फैलाने के आरोप में न्यूजक्लिक के खिलाफ अब सीबीआई टीम भी छानबीन कर रही है।

बुधवार को सीबीआई की एक टीम दिल्ली में न्यूजक्लिक के फाउंडर और एडिटर प्रबीर पुरकायस्थ के घर गई और तलाशी ली।

लगभग आठ लोगों की टीम पुरकायस्थ के घर पर मौजूद थी। टीम ने पुरकायस्थ की पत्नी गीता हरिहरन से पूछताछ की। पुरकायस्थ फिलहाल इस मामले में एचआर हेड अमित चक्रवर्ती के साथ पहले से ही ज्यूडिशियल कस्टडी में हैं।

गृह मंत्रालय पर ममता बनर्जी का आरोप

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने बुधवार को दावा किया कि राजद्रोह कानून के तहत प्रावधानों को वापस लेने के नाम पर केंद्रीय गृह मंत्रालय प्रस्तावित भारतीय न्याय संहिता में और अधिक गंभीर और मनमाने उपाय पेश कर रहा है।

अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा ईडी के सामने पेश हुई

कोलकाता। टीएमसी के नेशनल सेक्रेटरी अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा बनर्जी कोल स्कैम केस के संबंध में कोलकाता के ईडी ऑफिस पहुंचीं। इसके पहले भी ईडी अभिषेक और रुजिरा को स्कूल भर्ती घोटाले में समन दे चुकी है।

रेप के आरोपी के बच्चों की याचिका खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने नाबालिग के साथ रेप के आरोपी अधिकारी प्रमोदय खाखा के बच्चों की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी। खाखा की बेटी और बेटे पर अपराध को बढ़ावा देने का आरोप है। खाखा ने कथित तौर पर नवंबर 2020 से जनवरी 2021 के बीच एक नाबालिग लड़की से कई बार बलात्कार किया।

उनकी पत्नी सीमा रानी, जिन पर लड़की को गर्भपात कराने के लिए दवा देने का आरोप है। वह भी न्यायिक हिरासत में हैं। प्रमोदय खाखा दिल्ली सरकार में महिला और बाल विकास विभाग में डिप्टी डायरेक्टर के पद पर तैनात था।

सेना के जवान की अपनी ही राइफल से गोली लगने से मौत

जम्मू। पुंछ जिले में बुधवार को लाइन ऑफ कंट्रोल के पास सेना के एक जवान की अपनी ही राइफल से गोली लगने से मौत हो गई। पुलिस अधिकारी ने बताया कि सिपाही अमृतपाल सिंह, मानकोट के सेक्टर में तैनात था। सुबह 5 बजे उसके साथियों ने गोली चलने की आवाज सुनी, जिसके बाद देखा तो अमृतपाल खून से लथपथ पड़ा था। अधिकारी ने बताया कि जांच शुरू कर दी गई है। पता लगाया जा रहा है कि सिपाही की मौत दुर्घटनावश हुई है या फिर उसने आत्महत्या की है।

अफगानिस्तान में फिर आया 6.3 तीव्रता का भूकंप

तेहरान। अफगानिस्तान में बुधवार को एक बार फिर भूकंप आया। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, भूकंप की तीव्रता 6.3 थी। यह हेरात प्रांत की राजधानी से लगभग 28 किलोमीटर दूर था। हेरात में ही % अक्टूबर को भूकंप आ चुका है। उस वक्त भी भूकंप की तीव्रता 6.3 थी। जिसमें 2000 लोगों की जान चली गई थी।

बीजेपी नेता शाहनवाज हुसैन की बढ़ी मुश्किलें

रेप और धमकी देने के आरोप में कोर्ट ने किया तलब

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दिल्ली की एक अदालत ने बलात्कार और आपराधिक धमकी दिए जाने का आरोप लगाने वाली महिला की शिकायत पर बुधवार (11 अक्टूबर) को भारतीय जनता पार्टी के नेता सैयद शाहनवाज हुसैन को तलब किया। अदालत ने कथित अपराध का संज्ञान लिया और पूर्व केंद्रीय मंत्री को 20 अक्टूबर को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया।

न्यायाधीश ने कहा, अदालत ने एफआईआर रद्द करने की रिपोर्ट, शिकायतकर्ता की दायर विरोध याचिका, जांच अधिकारी की विरोध याचिका पर दाखिल जवाब और रिकॉर्ड पर रखी गई अन्य सामग्री पर गौर करने के बाद यह पाया है कि शिकायतकर्ता ने पुलिस, अदालत, मजिस्ट्रेट के सामने दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरसीपी) की धारा 164 के तहत एक समान बयान दिए हैं।

पुलिस रिपोर्ट को किया खारिज

पुलिस ने अदालत में रिपोर्ट दाखिल कर प्राथमिकी रद्द करने का अनुरोध किया था. न्यायाधीश ने पुलिस रिपोर्ट को खारिज करते हुए कहा, "रद्द करने की रिपोर्ट दाखिल करते समय जांच अधिकारी ने मुद्दे उठाए । यह ऐसे मामले हैं जिन पर सुनवाई के दौरान निर्णय लिया जा सकता है। न्यायाधीश ने कहा, इसके अलावा इस अदालत का मानना है कि शिकायतकर्ता के बयान और उसकी विश्वसनीयता का परीक्षण केवल मुकदमे के दौरान ही किया जा सकता है जब आरोपी की उससे जिरह की जाती है।

बालासोर ट्रेन हादसा, 28 लावारिस शवों का अंतिम संस्कार हुआ

3 महिलाओं ने मुखाग्नि दी, कहा- हो सकता है वे पूर्वजन्म के संबंधी हों

भुवनेश्वर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। ओडिशा के बालासोर ट्रेन हादसे के 4 महीने बाद 28 लावारिस शवों का अंतिम संस्कार कर दिया गया है। भरतपुर शवागार में मंगलवार शाम से शुरू हुई प्रक्रिया बुधवार सुबह पूरी हो गई। इस दौरान सीबीआई के अधिकारी भी मौजूद रहे। एम्स भुवनेश्वर ने नगर निगम को सभी डेड बॉडी डिस्पोज करने की जिम्मेदारी दी थी। पहले तीन शवों को तीन महिलाओं ने मुखाग्नि दी। मधुमिता प्रुस्टी (37), स्मिता मोहंती (53) और स्वागतिका राव (34) ने बताया- ये शव पुरुषों के थे या महिलाओं के, इनका धर्म या जाति क्या थी हम नहीं जानते। वे इंसान थे और इसी नाते हमने उन्हें सम्मान के साथ विदा किया। हो सकता है ये लोग पूर्वजन्म में हमारे संबंधी रहे हों। बीएमसी की मेयर सुलोचना दास ने बताया- ये शव पिछले चार महीने से डीप फ्रीजर में रखे-रखे बर्फ में तब्दील हो गए थे। पहचान करना मुश्किल था कि शव महिला का है या पुरुष का।

लिथियम समेत दो दुर्लभ तत्वों के लिए रॉयल्टी दर तय

नई दिल्ली , 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। केंद्र सरकार ने बुधवार को लिथियम और नाइओबियम के लिए तीन-तीन प्रतिशत और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों (आरईई) के लिए एक प्रतिशत की रॉयल्टी दरों को मंजूरी दे दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में तीन महत्वपूर्ण और रणनीतिक खनिजों के लिए रॉयल्टी दरों पर फैसला किया गया। इसमें कहा गया है कि मंत्रिमंडल की ओर से रॉयल्टी दर को मंजूरी दिए जाने से केंद्र देश में पहली बार लिथियम, नाइओबियम और आरईई ब्लॉकों की नीलामी कर सकेगा। खनन मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया, ''केंद्रीय मंत्रिमंडल...खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 (एमएमडीआर अधिनियम) की दूसरी अनुसूची में संशोधन को मंजूरी दी गई है, ताकि तीन महत्वपूर्ण और रणनीतिक खनिजों जैसे लिथियम, नाइओबियम और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के संबंध में रॉयल्टी की दर तय की जा सके।

हाईकोर्ट से एन. चंद्रबाबू नायडू को राहत

अमरावती इनर रिंग रोड मामले में दी अग्रिम जमानत

विजयवाड़ा , 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने अमरावती इनर रिंग रोड मामले में पूर्व मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम पार्टी प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू को अग्रिम जमानत दे दी है। नायडू की ओर से दायर अग्रिम जमानत याचिका पर बहस सुनने वाली कोर्ट ने अस्थायी जमानत दी और मामले में 16 अक्टूबर तक गिरफ्तारी न करने का अंतरिम आदेश जारी किया। कोर्ट ने सीआईडी को अंगालू 307 मामले में कल तक कोई गिरफ्तारी नहीं करने का भी निर्देश दिया। हाईकोर्ट ने सीआईडी विजयवाड़ा एसीबी कोर्ट द्वारा दायर इनर रिंग रोड याचिका पर पीटी वारंट पर रोक लगा दी।

इससे पहले इसी मामले में चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश की मुसीबतें बढ़ती जा रही हैं। बीते दिन उनसे सीआईडी ने पूछताछ की तो आज वे एसआईटी कार्यालय पहुंचे। टीडीपी महासचिव नारा लोकेश इनर रिंग रोड मामले की जांच में शामिल होने के लिए अमरावती में विशेष जांच दल (एसआईटी) कार्यालय पहुंचे हैं।

क्या है मामला?

आरोप है कि आंध्र प्रदेश की 2014-2019 के बीच रही सरकार में उच्च अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त रहे और इस दौरान अमरावती के मास्टर प्लान की डिजाइनिंग और रिंग रोड और अन्य सड़कों को जोड़ने की योजना में धांधली की गई। इस मामले में कई अन्य आरोपी भी हैं।

नारा लोकेश को इस मामले में 14वां आरोपी बनाया गया है। सीआईडी का आरोप है कि नारा लोकेश ने अमरावती इनर रिंग रोड के आदेश में बदलाव कर लाभ कमाया और घोटाले में अहम भूमिका निभाई।

नारा लोकेश के खिलाफ मामला दर्ज

सीआईडी ने ही टीडीपी चीफ चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश के खिलाफ मामला दर्ज किया था। इस पर नारा लोकेश की कानूनी सलाहकार टीम ने आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट में अग्रिम जमानत याचिका दायर की लेकिन अदालत ने याचिका को खारिज कर दिया था और नारा लोकेश को सीआईडी की पूछताछ में सहयोग करने को कहा है। बता दें कि सीआरपीसी की धारा 41ए के तहत दिए गए नोटिस में नारा लोकेश को पूछताछ के लिए पुलिस अधिकारी के सामने पेश होना होगा।

2050 तक 97 लाख लोगों की जा सकती है जान

स्ट्रोक की पहचान के लिए क्या है बीई-फास्ट तरीका

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पिछले एक दशक में वैश्विक स्तर पर जिन रोगों के कारण मृत्यु के सबसे ज्यादा मामले रिपोर्ट किए गए हैं, उनमें हार्ट अटैक और स्ट्रोक की समस्या प्रमुख रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक साल 2020 में स्ट्रोक के कारण दुनियाभर में 66 लाख से अधिक लोगों की मौत हुई। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, स्ट्रोक का खतरा युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक किसी को भी हो सकता है, इससे बचाव के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। हालिया अध्ययन की रिपोर्ट में कहा गया है, समय के साथ स्ट्रोक के जोखिम बढ़ते जा रहे है, इससे मौत के आंकड़ों के बढ़ने की भी आशंका है।

एक हालिया रिपोर्ट में स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा, आगे दो-ढाई दशक में स्ट्रोक के बड़े जोखिम के तौर पर उभरने की आशंका है,

इसको लेकर अलर्ट रहना बहुत जरूरी है। विश्व स्ट्रोक संगठन और लैंसेट न्यूरोलॉजी कमीशन ने अध्ययन में कहा, 2050 तक निम्न और मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) में स्ट्रोक से होने वाली मौतों के आंकड़े 86 प्रतिशत से बढ़कर 91 प्रतिशत हो सकती हैं।

स्ट्रोक के जोखिमों और आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि साल 2020 में स्ट्रोक से मरने वालों की संख्या 66 लाख लोग थी जिसके 2050 तक 9% लाख तक पहुंचने की आशंका है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, लाइफस्टाइल और आहार में गड़बड़ी स्ट्रोक का प्रमुख जोखिम हो सकती है, इसपर कम उम्र से ही विशेष ध्यान दिए जाते रहने की जरूरत है।

स्ट्रोक तब होता है जब मस्तिष्क के हिस्से में रक्त की आपूर्ति बाधित या कम हो जाती है। मस्तिष्क के ऊतकों को रक्त और ऑक्सीजन न मिल पाने की स्थिति में चलने, बोलने और समझने में परेशानी से लेकर लकवा, हाथ-पैर के सुन्न होने और गंभीर स्थितियों में जान जाने का भी जोखिम रहता है।

इन लोगों में स्ट्रोक का खतरा अधिक

स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं, कुछ स्थितियां स्ट्रोक के लिए आपके जोखिमों को बढ़ाने वाली हो सकती हैं। शोधकर्ताओं ने पाया शराब या धूम्रपान का सेवन करने वालों में स्ट्रोक होने का जोखिम हो सकता है। इसके अलावा अनियंत्रित ब्लड प्रेशर और ब्लड शुगर की समस्या भी आपमें स्ट्रोक के खतरे को बढ़ाने वाली हो सकती है। ये सभी स्थितियां रक्त वाहिकाओं को क्षति पहुंचाती हैं जिससे आपमें स्ट्रोक का जोखिम अधिक हो

पुणे-नागपुर फ्लाइट में महिला के साथ बदसलूकी

बगल में बैठे आरोपी ने अश्लील इशारे किए, गिरफ्तार

नागपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। एक प्राइवेट एयरलाइन की पुणे-नागपुर फ्लाइट में एक महिला ने को-पैसेंजर पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि ये घटना सोमवार की है। आरोपी फिरोज शेख (32) पुणे का रहने वाला है, जोकि पेशे से इंजीनियर है। सोनेगांव पुलिस थाना के अधिकारी ने बताया कि चंद्रपुर की रहने वाली 40 वर्षीय महिला अपने पिता के अंतिम संस्कार के लिए नागपुर जा रही थी। फ्लाइट में उनके साथ को-पैसेंजर ने मास्टरबेट और गंदे इशारे किए।

महिला ने बताया कि फ्लाइट के उड़ान भरने के तुरंत बाद उसे झपकी लग गई थी। तभी खिड़की वाली सीट पर बैठा यात्री मास्टरबेट और गंदे इशारे करने लगा। जब सभी पैसेंजर फ्लाइट से उतर रहे थे,

आईएएफ ने ब्रह्मोस मिसाइल का किया सफल परीक्षण, सेना की बढ़ेगी ताकत

कोलकाता, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारतीय वायुसेना (आईएएफ) ने हाल ही में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पास ब्रह्मोस मिसाइल के सतह से सतह संस्करण का सफल परीक्षण किया। मिसाइल फायर सफल रहा और मिशन ने अपने सभी उद्देश्यों को हासिल कर लिया।

विस्तारित रेंज की यह नई ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल 450 किलोमीटर तक के लक्ष्य को निशाना बना सकती है। सेना की ब्रह्मोस मिसाइल रेजिमेंट ने यह सफल परीक्षण पिन प्वाइंट सटीकता के साथ किया। इसके लिए एक अन्य द्वीप पर लक्ष्य रखा गया था, जिसे मिसाइल ने सटीक निशाना बनाया। इसके साथ भारतीय सेना के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है।

ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल दुनिया की सबसे तेज गति से मार करने वाली मिसाइल है। भारतीय सेना ने इसके भूमि हमले संस्करण का पहला परीक्षण 24 नवंबर 2020 को अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से ही किया था।

आईएनडीआईए में शामिल होने की खबरें निराधार : मायावती

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने बुधवार को विपक्षी दलों के गठबंधन आईएनडीआईए में उनकी पार्टी के शामिल होने की खबर को बेबुनियाद बताया। मायावती ने एक्स पर कहा कि सपा नेता प्रो। रामगोपाल यादव के हवाले से बसपा के आईएनडीआईए में शामिल होने से संबंधित बेबुनियाद खबर का एक टीवी चैनल पर प्रसारण पूरी तरह से गलत है।

उन्होंने सवाल किया कि बार-बार ऐसी मनगढंत खबरों से मीडिया अपना इमेज खराब करने पर क्यों तुला है, कहीं ये सब किसी एजेंडे के तहत तो नहीं हो रहा है? बसपा प्रमुख ने कहा कि ऐसी अनर्गल खबरों का सपा एवं उनके नेता द्वारा खंडन नहीं करना क्या यह साबित नहीं करता है कि उस पार्टी की हालत यहां उत्तर प्रदेश में काफी बदहाल है और वे भी उस घृणित राजनीति का हिस्सा हैं जो बसपा के खिलाफ लगातार सक्रिय है। मायावती ने ऐसी निराधार खबरों को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं को सावधान भी किया।

सुप्रीम कोर्ट ने रजनीकांत की पत्नी के खिलाफ

आपराधिक मामला बहाल करने का दिया आदेश

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने सुपरस्टार रजनीकांत की पत्नी के खिलाफ फिल्म 'कोचादाइयां' के पोस्ट-प्रोडक्शन के लिए दिए गए पैसे का कथित तौर पर दुरुपयोग करने के मामले में दर्ज धोखाधड़ी के मामले को बहाल करने का निर्देश दिया है। पीठ में शामिल जस्टिस एएस। बोप्पना और जस्टिस एमएम। सुंदरेश ने कहा कि लता रजनीकांत को या तो आरोपमुक्त करने के लिए आवेदन दायर करना चाहिए या मुकदमे की कार्यवाही का सामना करना चाहिए।

पीठ ने कहा कि यदि ट्रायल कोर्ट के समक्ष आरोपमुक्त करने की मांग करने वाला आवेदन दायर किया जाता है, तो आईपीसी की धारा 196, 199 और 420 के तहत लिए गए संज्ञान को आंशिक रूप से रद्द करने वाला कर्नाटक उच्च न्यायालय का आदेश आड़े नहीं आएगा। उच्च न्यायालय ने अगस्त 2022 में कहा था कि धोखाधड़ी और बेईमानी से संपत्ति की डिलीवरी के लिए प्रेरित करने से संबंधित आरोप को लापरवाही से शामिल किया गया है। शिकायत इस आरोप पर आधारित है कि लता रजनीकांत ने चेन्नई स्थित एक विज्ञापन कंपनी के प्रबंध निदेशक को फिल्म की पोस्ट-प्रोडक्शन लागत के बहाने पैसे देने के लिए धोखाधड़ी से प्रेरित किया था। हालांकि, उसने कथित तौर पर पैसे को अन्य उद्देश्यों के लिए डायवर्ट कर दिया, जिससे उसे गलत नुकसान हुआ। 2018 में, सुप्रीम कोर्ट ने इसी विवाद में एफआईआर को रद्द करने के कर्नाटक उच्च न्यायालय के एक और आदेश को यह कहते हुए रद्द कर दिया था कि उच्च न्यायालय को मुकदमे को आगे बढ़ने देना चाहिए था। हम यह स्पष्ट करते हैं कि... शिकायत में दिए गए कथन मुकदमे की शुरुआत के लिए प्रथम दृष्टया मामला बनाते हैं,

यह कहते हुए कहा था कि विवाद में आपराधिक मुकदमे के माध्यम से निर्णय लिए जाने के लिए प्रथम दृष्टया सभी सामग्रियां मौजूद हैं। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि मामले में लता की भौतिक उपस्थिति तब तक समाप्त रहेगी, जब तक कि ट्रायल कोर्ट द्वारा इसकी आवश्यकता न हो। शीर्ष अदालत ने कहा, हम यह भी स्पष्ट करते हैं कि हमने मामले की योग्यता पर कोई राय व्यक्त नहीं की है और पक्ष मध्यस्थता के माध्यम से भी इस मुद्दे को सुलझाने के लिए स्वतंत्र हैं।

राष्ट्रपति के दौरे के कारण घर से निकलने से रोक दिया गया है : महबूबा का आरोप

श्रीनगर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने बुधवार को आरोप लगाया कि उन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के जम्मू कश्मीर के दौरे के मद्देनजर अपने घर से बाहर निकलने से रोक दिया गया। राष्ट्रपति मुर्मू केंद्र शासित प्रदेश के दो दिवसीय दौरे पर बुधवार को श्रीनगर पहुंचीं और इस दौरान वह कश्मीर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाग लेंगी। पूर्ववर्ती जम्मू कश्मीर राज्य की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा ने आरोप लगाया कि उन्हें मुर्मू के दौरे के कारण शहर के बाहरी खिंबर इलाके में अपने आवास से बाहर नहीं निकलने दिया गया। महबूबा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''यह जानकर हैरान हूं कि मैं अपने पार्टी कार्यालय जाने के लिए घर से बाहर तक नहीं निकल सकती क्योंकि माननीय राष्ट्रपति आज श्रीनगर का दौरा कर रही हैं। आवाजाही का अधिकार कभी भी अचानक छीन लिया जाता है।'' राष्ट्रपति के इस दौरे के मद्देनजर श्रीनगर और आसपास के इलाकों में सुरक्षा बढ़ा दी गयी है। पुलिस तथा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल समेत सुरक्षा बलों को कश्मीर विश्वविद्यालय तथा उसके आसपास तैनात किया गया है। शहर में निगरानी के लिए ड्रोन और सीसीटीवी कैमरों जैसे आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

सांसद सुमेर सिंह सोलंकी ने राहुल गांधी पर साधा निशाना

बोले- आदिवासियों में फूट डालने की कोशिश कर रहे

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भाजपा के राज्यसभा सांसद और पार्टी की राज्य इकाई के प्रवक्ता सुमेर सिंह सोलंकी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की आलोचना करते हुए कहा कि वह राज्य में आदिवासियों के बीच विभाजन पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। इंदौर में पत्रकारों से बात करते हुए सोलंकी ने कहा, गांधी 'आदिवासी', 'जनजाति' या 'वनवासी' जैसे शब्दों में अंतर करके लोगों को गुमराह कर रहे हैं। अंग्रेजों की विचारधारा आपकी मानसिकता में है और आप अपनी पार्टी (कांग्रेस) के चरित्र के अनुरूप आदिवासियों को भ्रमित कर उनमें फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं। राज्य विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद मंगलवार को शहडोल जिले के ब्योहारी में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए गांधी ने आदिवासियों के लिए वनवासी शब्द के इस्तेमाल पर कड़ी आपत्ति जताई थी।

युद्ध कभी भी बच्चों को नहीं बख्शाता

इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध पर मलाला यूसुफजई

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। गाजा-इजरायल के बीच चल रहे युद्ध के बीच नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफजई ने तत्काल युद्धविराम का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि जब भी युद्ध होता है तो सबसे ज्यादा परेशानी बच्चों को होती है। मलाला ने कहा कि वह युद्ध क्षेत्र में शांति और न्याय की उम्मीद कर रहे लोगों के लिए दुखी हैं। मलाला ने सोशल मीडिया साइट एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लिखा कि वह जंग में फंसे फिलिस्तीनी और इजरायली बच्चों के बारे में सोच कर चिंतित हैं। उन्होंने कहा कि युद्ध कभी भी बच्चों को नहीं बख्शता है।

'युद्ध में फंसे बच्चों के लिए दुखी हूं'

मलाला ने कहा कि युद्ध में उन बच्चों को नहीं बख्शा गया, जिनको इजरायल से बंधक बनाया गया था या फिर जो हवाई हमले के बाद छिपे हुए थे या फिर वो बच्चे जो गाजा में बिना खाना-पानी के छिपे हुए थे। मलाला ने कहा कि आज वह शांति और न्याय की चाह रखने वाले सभी बच्चों और लोगों के लिए दुखी हैं।

मलाला ने तालिबान के आतंक को किया याद

मलाला यूसुफजई ने साल 2012 के उस भयावह आतंक के दृश्य को याद किया, जब वह सिर्फ 11 साल की थीं। उस समय तालिबान फोर्सेस ने उको मारने की कोशिश की थी लेकिन वह बच गईं। मलाला ने कहा कि जब उन्होंने हिंसा और आतंकवाद देखा उस समय वह सिर्फ 11 साल की थीं। वह हर दिन मोर्टार, गोलों की आवाज से जागती थीं और अपने स्कूलों और मस्जिदों को सामने नष्ट होते हुए देखा। उस समय शांति के बारे में वह सिर्फ सोच ही सकती थीं।

'हमास ने इजरायल के 40 बच्चों को मार डाला'

रिपोर्ट के मुताबिक हमास के आतंकियों ने करीब 40 बच्चों की हत्या कर दी। यह दृश्य कल्पना से परे था ।कुछ सैनिकों ने उस भयावह मंजर का जिक्र करते हुए बताया कि उन्हें ऐसे बच्चे भी मिले जिनके सिर कटे हुए थे। पूरे परिवारों को सोते हुए ही गोलियों से भून दिया गया था। अब तक ऐसे करीब 40 बच्चों को बाहर निकाला जा चुका है। बता दें कि शनिवार को हमास के हमले के बाद युद्ध और भी तेज हो गया है। दोनों तरफ से 3 हजार से ज्यादा लोग अब तक मारे जा चुके हैं। इस भयावह स्थिति के बीच मलाला यूसुफजई ने सोशल मीडिया पर तत्काल युद्धविराम का आह्वान किया है।

दिल्ली की सड़कों पर फिर दरिंदगी

टैक्सी लूटने के बाद आरोपियों ने चालक को 200 मीटर तक घसीटा, मौत

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दिल्ली में एक टैक्सी चालक को बीच सड़क पर 200 मीटर तक घसीटने का एक दर्दनाक वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में दिख रहा है कि किस तरह से आरोपी शख्स कार को तेज गति से चला रहा है और इस दौरान कार का चालक उसपर लटका हुआ है। इस घटना का वीडियो उस कार के पीछे से आ रही कार में बैठे किसी शख्स ने अपने फोन में रिकॉर्ड कर लिया। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने अपनी जांच शुरू कर दी है। पुलिस की शुरुआती जांच में पता चला है कि आरोपी पीड़ित चालक की टैक्सी को लूटकर भाग रहे थे। इसी दौरान जब उसने इसका विरोध किया और आरोपियों को पकड़ने की कोशिश की तो वह उसे घसीटते हुए भागने लगे। इस घटना में पीड़ित टैक्सी चालक की मौत हो गई है। पुलिस ने इस घटना को लेकर एक मामला दर्ज कर अपनी जांच शुरू कर दी है। घटना दक्षिणी दिल्ली के महिपालपुर इलाके की बातई जा रही है। पुलिस ने मृतक की पहचान 43 वर्षीय बिजेंद्र के रूप में की गई है। बिजेंद्र फरीदाबाद का रहने वाला है। पुलिस ने फिलहाल इस घटना को लेकर एक मामला दर्ज कर अपनी जांच शुरू कर दी है।

दिल्ली में यौन उत्पीड़न के आरोप में स्वयंभू बाबा गिरफ्तार

नयी दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। महिलाओं का यौन उत्पीड़न करने के आरोप में 33 वर्ष के एक स्वयंभू बाबा को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस उपायुक्त (द्वारका) एम। हर्षवर्धन ने बताया कि विनोद कश्यप को द्वारका उत्तर पुलिस थाने में दर्ज यौन उत्पीड़न की दो शिकायतों के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया है। अधिकारी ने कहा, ''विनोद ककरोला इलाके में माता मसानी चौकी दरबार लगाता था।

भारी मात्रा में मादक पदार्थों के साथ एसटीएफ के हत्थे चढ़ा तस्कर

कोलकाता, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने मुर्शिदाबाद के शमशेरगंज थाना अंतर्गत धुलियान में पुख्ता सूचना के आधार पर छापेमारी कर जाली नोटों के तस्कर को धर दबोचा है। उसकी पहचान तासीरूद्दीन उर्फ तौसीफ शेख (27) के तौर पर हुई है। वह मूल रूप से मालदा जिले के वैष्णवनगर थाना क्षेत्र का रहने वाला है। उसके पास से 98 हजार 500 के 197 जाली नोट बरामद किए गए हैं। सारे नोट 500 रुपये के हैं। एसटीएफ के एसपी आईपीएस इंद्रजीत बसु ने बताया कि पुख्ता सूचना के आधार पर मंगलवार रात औचक छापेमारी कर उसे घेर लिया गया। हिरासत में लेकर तलाशी लेने पर भारी मात्रा में जाली नोट बरामद हुए। उसके खिलाफ भारतीय दंड विधान की धारा 120 बी, 489 बी और 489 सी के तहत मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई शुरू की गई है।

कीर्तिनगर में गुलदार की दहशत, जंगल में घास लेने गई महिला पर किया हमला, मौके पर हुई मौत

श्रीनगर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। गढ़वालउत्तराखंड में गुलदार के हमलों के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। बुधवार को श्रीनगर में कीर्तिनगर ब्लॉक के ग्राम पंचायत नौर में घास लेने जंगल गई एक महिला पर गुलदार ने हमला कर दिया। इस दौरान महिला की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, घटना सुबह नौ बजे की है।

गोवा में एसटी आरक्षण पर मंत्री अठावले का यू टर्न, बयान पर मांगी माफी

बोले- नहीं थी तथ्यों की सही जानकारी

गोवा, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। केंद्रीय सामाजिक न्याय मंत्री रामदास आठवले ने गोवा में अनुसूचित जनजातियों (एसटी) की कम आबादी वाले अपने बयान को वापस लेते हुए माफी मांग ली है। केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने कहा था कि अनुसूचित जनजातियों की कम आबादी है, ऐसे में उन्हें गोवा विधानसभा में आरक्षण नहीं मिल सकता। दरअसल गोवा में राज्य की 40 विधानसभा सीट में से चार सीट अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित करने की मांग की जा रही है। ये मांग अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए आरक्षण मिशन के बैनर तले विभिन्न जनजातीय संगठन द्वारा की जा रही है। गोवा विधानसभा ने मानसून सत्र में एसटी के लिए आरक्षण की मांग का प्रस्ताव भी पारित किया था। इसी आरक्षण की मांग को लेकर एक संवाददाता सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले से सवाल किया गया था। जिसके जवाब में उन्होंने कहा कि गोवा विधानसभा में एसटी समुदाय को आरक्षण देना मुमकिन नहीं है क्योंकि राज्य की जनगणना के अनुसार राज्य में एसटी समुदाय की आबादी बेहद कम है। केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले के इस बयान की गोवा फॉरवर्ड पार्टी के प्रमुख विजय सरदेसाई और अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए आरक्षण मिशन ने काफी निंदा की। विधायक विजय सरदेसाई ने कहा कि बीजेपी को केंद्रीय मंत्री के बयान पर जवाब देना चाहिए और इसे स्पष्ट करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आरक्षण को लेकर केंद्रीय मंत्री अठावले का बयान बेहद चौकानें वाला है।वहीं इस बयान पर फतोर्दा के विधायक ने कहा कि बीजेपी और मुख्यमंत्री कार्यालय को केंद्रीय मंत्री अठावले के बयान पर अपनी प्रतिक्रिया देकर स्पष्ट करना चाहिए,

सच को छुपाने के लिए माफिया की तरह काम करती है केंद्र सरकार

घोटाला उजागर करने वाले सीएजी के अधिकारियों के तबादले पर जयराम

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पार्टी महासचिव (जनसंचार) ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर पीएम मोदी पर जमकर हमला किया। उन्होंने कहा, मोदी सरकार सच को छुपाने और डराने-धमकाने के लिए माफ़िया की तरह काम करती है। यदि कोई उसके भ्रष्टाचार के तौर-तरीकों को सामने लाता है, तो या तो उन्हें धमकी दी जाती है या हटा दिया जाता है। जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि आयुष्मान भारत और द्वारका एक्सप्रेसवे घोटालों पर रिपोर्टिंग के प्रभारी सीएजी के तीन अधिकारियों का मोदी सरकार में फैले भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए ट्रांसफर कर दिया गया है।

माफ़िया की तरह काम करती है सरकार- रमेश

कांग्रेस नेता ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, मोदी सरकार सच को छुपाने और डराने-धमकाने के लिए माफ़िया की तरह काम करती है। यदि कोई उसके भ्रष्टाचार के तौर-तरीकों को सामने लाता है, तो या तो उन्हें धमकी दी जाती है या हटा दिया जाता है। उसके ताज़ा शिकार नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) के तीन अधिकारी हैं, जिन्होंने संसद के मानसून सत्र के दौरान पेश की गई एक रिपोर्ट में सरकारी योजनाओं में बड़े पैमाने पर घोटालों का ख़ुलासा किया था।

भ्रष्टाचार छुपाने के लिए सीएजी के तीन अधिकारियों का हुआ तबादला

जयराम रमेश आगे लिखा, सीएजी रिपोर्ट में इंफ्रास्ट्रक्चर और सामाजिक योजनाओं में घोटाले को उजागर किया गया था। रिपोर्ट में द्वारका एक्सप्रेसवे में 1400% लागत बढ़ने और टेंडरिंग में धांधली सामने आई थी।

साथ ही साथ हाईवे परियोजनाओं से 3,600 करोड़ रुपए की हेराफेरी, दोषपूर्ण बोली प्रक्रिया और भारतमाला योजना की लागत 60% बढ़ने की बात भी रिपोर्ट में थी। इतना ही नहीं, आयुष्मान भारत योजना के ऑडिट में मृत मरीज़ों के लाखों क्लेम्स और कम से कम 7.5 लाख लाभार्थी एक ही मोबाइल नंबर से जुड़े हुए पाए गए। अब, आयुष्मान भारत और द्वारका एक्सप्रेसवे घोटालों पर रिपोर्टिंग के प्रभारी सीएजी के तीन अधिकारियों का मोदी सरकार में फैले भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए ट्रांसफर कर दिया गया है। कांग्रेस नेता ने सवाल किया कि क्या इन सब के बाद सीएजी को स्वतंत्र निकाय माना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि, हमारी मांग है कि ट्रांसफर के इन आदेशों को तुरंत रद्द किया जाए, अधिकारी सीजीए वापस जाएं और द्वारका एक्सप्रेसवे, भारतमाला और आयुष्मान भारत से जुड़े इन महाघोटालों पर कार्रवाई हो।

तेल टैंकर से भारी मात्रा में गांजा बरामद, दो गिरफ्तार

गुवाहाटी, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। गुवाहाटी के वशिष्ठ और पलटन बाजार पुलिस ने संयुक्त अभियान के दौरान एक तेल टैंकर से भारी मात्रा में गांजा बरामद किया है। वहीं इस मामले में पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया हैं। पुलिस ने बुधवार को बताया कि एडीसीपी सेंट्रल नंदिनी काकती के नेतृत्व में पलटन बाजार और वशिष्ठ पुलिस ने संयुक्त अभियान के दौरान तेल टेंकर (एनएल-01एएच-0501) से भारी मात्रा में गांजा बरामद किया है। टैंकर में 2640 किलो गांजा 134 पैकेट में भरकर ले जाया जा रहा था। पुलिस ने प्रारंभिक जांच में पाया कि तेल टैंकर सिलचर से बंगाईगांव जा रहा था।

5 करोड़ कैश, नोट गिनने की मशीन लुधियाना से दबोचा गया ड्रग तस्कर

जम्मू, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। कश्मीर पुलिस और पंजाब पुलिस ने लुधियाना के मुल्लांपुर दाखा में इंटर स्टेट नारकोटिक्स नेटवर्क के खिलाफ संयुक्त अभियान चलाया। दोनों राज्यों की पुलिस ने लुधियाना के मुल्लांपुर दाखा में छापेमारी की। पुलिस ने यहां से 4.94 करोड़ रुपये की ड्रग मनी और 38 गाड़ियों की फर्जी नंबर प्लेट बरामद की है। पुलिस ने आरोपियों के पास एस एक रिवॉल्वर भी बरामद की है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक लुधियाना के मुल्लापुर दाखा के मोहल्ला दशमेश नगर में जम्मू-कश्मीर पुलिस और काउंटर इंटेलिजेंस टीम ने एआईजी सिमरत पाल सिंह के नेतृत्व में एक घर में छापेमारी की।

पुलिस को अंदेशा था कि यहां पर लाखों रुपये की नकदी जमा की गई है। इस मौके पर पुलिस जिला लुधियाना ग्रामीण के एसएसपी नवनीत सिंह बैंस, डीएसपी राखा अमनदीप सिंह और काउंटर इंटेलिजेंस की टीम भी मौके पर पहुंची थी। सूत्रों से यह भी पता चला है कि कुछ दिन पहले जम्मू-कश्मीर के रामगन पुलिस स्टेशन में 30 किलो कोकीन बरामद की गई थी। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने लुधियाना काउंटर-इंटेलिजेंस टीम के साथ संयुक्त अभियान चलाया और गोदाम पर छापा मारा। मौके से पुलिस ने एक शख्स को गिरफ्तार किया है करोड़ों की नकदी बरामद की गई है। पुलिस ने आरोपी के पास से नोट गिनने की मशीनें और फर्जी आईडी कार्ड भी बरामद किए हैं।

पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी है है कि अंतरराज्यीय ड्रग नेटवर्क को बड़ा झटका लगा है। जम्मू-कश्मीर पुलिस और पंजाब पुलिस ने संयुक्त ऑपरेशन में मुल्लांपुर दाखा से एक ड्रग तस्कर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने ड्रग तस्कर से 4.94 करोड़ रुपये नकद और 38 फर्जी गाड़ियों की नंबर प्लेट बरामद की है। आरोपियों के पास से एक रिवॉल्वर भी बरामद हुई है जिसमें जिंदा कारतूस लोडेड थे।

हाईकोर्ट: मथुरा बांके बिहारी मंदिर में सुविधाओं के मामले में सुनवाई 30 अक्तूबर को, चढ़ावे को लेकर खींचतान जारी

प्रयागराज, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। मथुरा, वृंदावन स्थित बांके बिहारी मंदिर में दर्शनार्थियों की सुविधा व सुरक्षा के लिए प्रस्तावित कॉरिडोर निर्माण के मामले की अगली सुनवाई 30 अक्टूबर को होगी। मंदिर के चढ़ावे को लेकर 45 मिनट की बहस में सेवायतों व राज्य सरकार की खींचतान जारी रही। दोनों पक्षों ने अपनी पुरानी ही दलीलें पेश कीं। सरकार की तरफ से दोहराया गया कि हम सिर्फ चढ़ावे व चंदे की रकम से कॉरिडोर का निर्माण करना चाहते हैं। यह कॉरिडोर श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। सरकार मंदिर के मैनेजमेंट में किसी तरह का दखल नहीं देना चाहती है। मंदिर से जुड़े लोगों को पहले की तरह ही सभी अधिकार बने रहेंगे। दूसरी तरफ मंदिर से जुड़े लोगों ने कॉरिडोर का विरोध नहीं किया, किंतु कहा सरकार इसके लिए मंदिर का पैसा न ले। सरकार कॉरिडोर के नाम पर वृंदावन की कुंज गली व अन्य पौराणिक स्थलों का स्वरूप बिगाड़ना चाहती है।, सरकार मंदिर मामले में दखलअंदाजी करना चाहती है। मंदिर की तरफ से साफ तौर पर कहा गया कि मंदिर को परंपरा के मुताबिक ही चलते रहने देना चाहिए। मथुरा के सामाजिक कार्यकर्ता अनंत शर्मा व मधु मंगलदास के साथ ही अन्य लोगों ने याचिका दाखिल कर श्रद्धालुओं की सुरक्षा इंतजाम करने की मांग की है। अनियंत्रित भीड़ के कारण मौतों का हवाला दिया गया है। सेवायतों को याचिका में पक्षकार बनाने की अर्जी के औचित्य पर सवाल खड़े कर पक्षकार बनाने का विरोध किया।

पाक में मारा गया भारत का मोस्ट वांटेड शाहिद लतीफ, पठानकोट हमले का था मास्टरमाइंड

पठानकोट, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारत के मोस्ट वांडेट आतंकी और पठानकोट हमले के मास्टरमाइंड शाहिद लतीफ पाकिस्तान में गोली मारकर हत्या कर दी गई है। पाकिस्तान के सियालकोट में अज्ञात हमलावरों ने उसे मौत के घाट उतारा। लतीफ आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद का कमांडर था। लतीफ जैश के लिए सियालकोट में काम करता था। इसके जिम्मेदारी आतंकियों को तैयार करने और हमले की प्लानिंग करने की थी। उसने पठानकोट के अलावा जम्मू कश्मीर में कई जैश के ऑपरेशन को हैंडल करता था। आज सुबह जब वो सियालकोट में अपने एक साथी के साथ था, दौरान हमलावरों ने उस गोलियों से भून दिया। जैश का ये आतंकी भारतीय एजेंसियों की रडार पर था। भारतीय एजेंसियां भी शाहिद लतीफ पर हुए हमले की डिटेल्स ले रही है क्योंकि वह भारत में मोस्ट वांटेड था। बता दें कि जैश के आतंकियों ने साल 2016 में पठानकोट एयरबेस पर हमला कर दिया था।

सुविचार

जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो। उससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस पर ध्यान मत दो।

पुलिस द्वारा नकदी जब्त किए जाने से व्यापारियों में दहशत

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में विधानसभा चुनावों की घोषणा और आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) लागू होने के साथ, पुलिस अब राज्य में 'बेहिसाबी नकदी' जब्त करने में व्यस्त है। हालाँकि, नकदी की जब्ती से जनता, विशेषकर शहर के व्यापारी समुदाय में घबराहट पैदा हो रही है। मोहम्मद अतीक (बदला हुआ नाम) जिन्होंने अपनी बेटी की शादी के लिए आभूषण खरीदने की योजना बनाई थी, ने कुछ दिनों के लिए अपनी योजना रद्द कर दी। हम नहीं जानते कि कौन से दस्तावेज़ ले जाएं या कैसे साबित करें कि नकदी हमारी है। हमें कुछ स्पष्टता की जरूरत है।

यहां तक कि पुलिसकर्मी भी इस मुद्दे पर अनभिज्ञ नजर आ रहे हैं। जनता से केवल यही कहा गया था कि यदि वे 50,000 रुपये से अधिक की कोई भी चीज़ ले जा रहे हैं तो नकदी के स्वामित्व को साबित करने के लिए दस्तावेज़ अपने साथ रखें। हालाँकि, भारत निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों में उल्लेख है कि केवल पार्टी कार्यकर्ताओं या पार्टी उम्मीदवारों को 50,000 रुपये से अधिक नहीं ले जाना चाहिए। एक पुलिस अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि हम कैसे जान सकते हैं कि कोई व्यक्ति पार्टी कार्यकर्ता है या नहीं। मामले के आधार पर, हम नकदी जब्त कर रहे हैं या वैध कारण होने पर व्यक्ति को जाने की अनुमति दे रहे हैं। कुछ मामलों में, चुनाव अधिकारियों या आयकर विभाग को सूचित किया जाता है और आगे की कार्रवाई के लिए राशि सौंप दी जाती है।

हालांकि, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि पुलिस कर्मियों को नकदी जब्त करते समय सतर्क रहने के लिए कहा गया है, अगर लोग इसे चिकित्सा खर्च, शादी से संबंधित खरीदारी और स्कूल या कॉलेज की फीस के लिए ले जा रहे हैं। अधिकारी ने कहा कि अस्पताल की रसीदें या प्रिस्क्रिप्शन, शादी का निमंत्रण कार्ड, स्कूल प्रमाणपत्र या बैंक पासबुक के साथ प्रवेश फॉर्म जैसा कोई भी दस्तावेज ऐसे मामलों में मददगार होगा।

इस बीच, हैदराबाद किराना मर्चेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष दामोदर दास ने कहा कि पुलिस चेकिंग और नकदी जब्त करने की जानकारी मिलने के बाद आंध्र प्रदेश और राज्य के अन्य जिलों के व्यापारी दूर रह रहे हैं। छोटे व्यापारी रिकॉर्ड नहीं रखते हैं और ऑनलाइन लेनदेन के बजाय नकद लेनदेन को प्राथमिकता देते हैं। यदि उनकी राशि जब्त कर ली जाती है तो इसका मतलब वित्तीय समस्याएं हैं, उन्होंने कहा कि अगर स्पष्ट दिशानिर्देश जारी नहीं किए गए तो आने वाले दिनों में और अधिक समस्याएं होंगी। एक अन्य व्यापारी ने बताया कि वे आम तौर पर दैनिक नकदी को दुकानों से सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित करते हैं। एक अन्य व्यापारी ने कहा कि यह हमारे लिए मुश्किल स्थिति है, हम न तो दुकानों पर नकदी रख सकते हैं और न ही इसे सुरक्षित स्थानों पर ले जा सकते हैं।

पुलिस का तलाशी अभियान जारी, करोड़ की संपत्ति बरामद

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। 30 नवंबर को होने वाले तेलंगाना विधानसभा चुनावों के लिए चुनाव नियम लागू होने के बाद से, हैदराबाद सिटी पुलिस ने शहर भर में व्यापक जांच करके अवैध नकदी, शराब, ड्रग्स और अन्य मतदाताओं को लुभाने वाली वस्तुओं पर अपनी छापेमारी तेज कर दी है। 9 अक्टूबर से आज (सुबह) तक किए गए औचक निरीक्षण में बड़ी मात्रा में नकदी, शराब और अन्य सामान जब्त किए गए। इस दौरान 7.706 किलो सोने की कीमत 42 करोड़, 11.700 किलो चांदी की कीमत 8.77 लाख, 5.1 करोड़ रुपये नकद,110 लीटर शराब, 23 मोबाइल फ़ोन, राशन का चावल 43 क्विंटल बरामद किया गया। पुलिस, फ़्लाइंग स्क्वाड टीमें, टास्कफोर्स और अन्य एजेंसियों ने 24/7 निगरानी के साथ सख्त कार्रवाई की है। सभी लोगों से अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र में किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना दें।

मंचेरियल में 12 लाख रुपये की बेहिसाब नकदी जब्त

मंचेरियल, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। जिले में बुधवार को तीन अलग-अलग घटनाओं में 12 लाख रुपये की बेहिसाब नकदी जब्त की गई। पहली घटना में, नासपुर के उप-निरीक्षक एम रवि कुमार और उनकी टीम ने कुशनपल्ली गंगाराम से 5 लाख रुपये जब्त कर लिए क्योंकि वह वाहन जांच के दौरान धन के प्रासंगिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं करा सके। नकदी को आगे की कार्रवाई के लिए उड़न दस्ता टीम को सौंप दिया गया। पुलिस ने जनता को यात्रा के दौरान 50,000 रुपये से अधिक नकदी की रसीद साथ रखने की सलाह दी। इस बीच, जयपुर पुलिस ने इंदाराम गांव में बेहिसाब 4 लाख रुपये जब्त किए, जबकि लक्सेटीपेट पुलिस ने 3 लाख रुपये पकड़े।

महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव 15 को

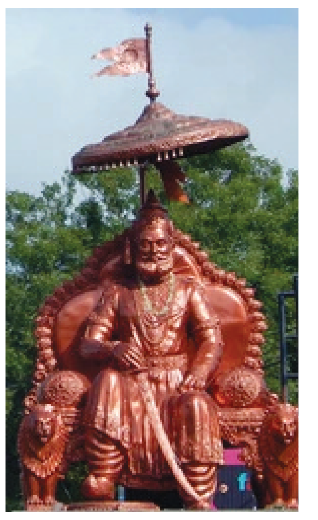

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन एवं अग्रवाल समाज तेलंगाना के संयुक्त तत्वावधान में 15 अक्टूबर को प्रातः 10.30 बजे से बंजाराहिल्स, रोड नं. 12 स्थित महाराजा अग्रसेन चौक पर महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सांसद तथा अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गिरीश कुमार संघी करेंगे। प्रेस विज्ञप्ति में नगरद्वय के सभी वैश्य बंधुओं से कार्यक्रम में उपस्थित होकर सफल बनाने का आग्रह किया गया है।

टीएसआरटीसी एमडी वीसी सज्जनर ने नई इलेक्ट्रिक बसों के निर्माण का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। दूर-दराज के इलाकों के लिए जल्द ही एक्सप्रेस, डीलक्स और सुपर लग्जरी इलेक्ट्रिक बसें चलने वाली हैं। जबकि विजयवाड़ा मार्ग पर वर्तमान में 10 इलेक्ट्रिक एसी बसें चल रही हैं, पहली बार, तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (टीएसआरटीसी) ने अन्य मार्गों पर यात्रियों के लिए एक्सप्रेस, डीलक्स और सुपर लक्जरी इलेक्ट्रिक बसें उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। कंपनी, जो पहले ही 1860 इलेक्ट्रिक बसों का ऑर्डर दे चुकी है, उनमें से कुछ को दिसंबर में उपयोग में लाने की योजना बना रही है।

प्रोटो (प्रोटोटाइप) बसों का निरीक्षण किया गया। जेबीएम ग्रुप हेड सेल्स (नॉर्थ) मुकेश शर्मा ने जीएम ऑपरेशंस प्रशांत शर्मा से चर्चा की और कई सुझाव दिए। एमडी वीसी सज्जन ने उनसे इन बसों का निर्माण शीघ्र पूरा कर टीएसआरटीसी को उपलब्ध कराने को कहा। टीएसआरटीसी के एमडी वीसी सज्जनर ने कहा कि समझौते के अनुसार जेबीएम समूह

टीएसआरटीसी को 500 इलेक्ट्रिक बसों की आपूर्ति करेगा। कंपनी इन्हें किश्तों में उपलब्ध कराएगी। कुछ इलेक्ट्रिक बसें दिसंबर में उपलब्ध होंगी। कंपनी यात्री सुविधा से कोई समझौता किए बिना इन बसों को अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ उतारेगी।''

उन्होंने कहा कि इन बसों में यात्रियों की गिनती की सुविधा के साथ-साथ सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे भी लगाए जा रहे हैं। बताया गया कि आग की दुर्घटनाओं का जल्द पता लगाने और उन्हें रोकने के लिए बसों में फायर डिटेक्शन सप्रेशन सिस्टम (एफडीएसएस) लगाया जा रहा है। बताया गया है कि बस को रिवर्स करने में सक्षम बनाने के लिए एक रिवर्स पार्किंग सहायता कैमरा भी होगा और बस में गंतव्य विवरण के लिए एलईडी बोर्ड होंगे। कार्यक्रम में टीएसआरटीसी ग्रेटर हैदराबाद जोन के कार्यकारी निदेशक वेंकटेश्वरलू, रंगारेड्डी आरएम श्रीधर, सिकंदराबाद के डिप्टी आरएम भीम रेड्डी, विशेष अधिकारी (परियोजनाएं) भानु प्रसाद, जेबीएम समूह के प्रतिनिधि निखिल ओझा, अमित वर्मा, मनोहर लाल और अन्य ने भाग लिया।

सहकारिता देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ : राज्यपाल

दक्षिण क्षेत्र के राज्यों के लिए सहकारी विकास पर एक दिवसीय सम्मेलन

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ (भारतीय सहकारी आंदोलन का शीर्ष संगठन), नई दिल्ली ने आज केएलएन प्रसाद सभागार, द फेडरेशन ऑफ तेलंगाना चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, रेड हिल्स में दक्षिण क्षेत्र के राज्यों के लिए सहकारी विकास पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में तेलंगाना की राज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन उपस्थित रहीं। इनके अलावा पूर्व संसद सदस्य, पूर्व केंद्रीय मंत्री और भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष दिलीप संघानी ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि 1929 में स्थापित एनसीयूआई शीर्ष संगठन के रूप में काम कर रहा है और देश में पूरे सहकारी आंदोलन के पथप्रदर्शक के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि आजादी के 75 साल बाद और ऐसे समय में जब सहकारिता आंदोलन की सबसे ज्यादा जरूरत है। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सहकारिता को और मजबूत करने के लिए केंद्रीय स्तर पर एक स्वतंत्र सहकारिता मंत्रालय का गठन किया।

इस अवसर पर बोलते हुए राज्यपाल ने सहकारी विकास पर सम्मेलन के आयोजन के लिए हैदराबाद को चुनने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि सहकारी समितियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ में से एक हैं। सहकारिता के लिए स्वतंत्र मंत्रालय बनाने की प्रधानमंत्री की पहल प्रशंसनीय है। राज्यपाल ने आगे कहा कि एनसीयूआई कृषि, गैर-कृषि, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र जैसे सभी क्षेत्रों को कवर कर रहा है और उन्हें नियमित प्रशिक्षण प्रदान करके अपने क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीति का ज्ञान और मार्गदर्शन कर रहा है।

कोंडुरु रविंदर राव, अध्यक्ष, एनएएफएससीओबी और अध्यक्ष तेलंगाना राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड, राधाकृष्णन, सलाहकार, एनसीयूआई, सुधीर महाजन, आईएएस (सेवानिवृत्त), सीई, एनसीयूआई, रमेश कुमार बंग, सदस्य, सहकारी शिक्षा समिति, एनसीयूआई और अध्यक्ष, एपी महेश सहकारी शहरी बैंक और वीपी सेठिया, कार्यकारी निदेशक, एनसीयूआई ने मंच की अध्यक्षता की। सम्मेलन में एम. गंगा रेड्डी, अध्यक्ष, टीएसएममार्कफेड, श्रीमती. बी अरुणा, एससीडीआर और प्रबंध निदेशक, टीएस सहकारी संघ, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और पुडुचेरी के सहकारी क्षेत्र के शीर्ष अधिकारी और प्रतिष्ठित सहकारी नेताओं ने बड़ी संख्या में सम्मेलन में भाग लिया।

उच्च न्यायालय ने सिंगरेनी ट्रेड यूनियन चुनाव स्थगित कर दिया

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना उच्च न्यायालय ने बुधवार को देश की सबसे बड़ी कोयला खनन कंपनियों में से एक, सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) में मान्यता प्राप्त ट्रेड यूनियन के चुनाव 27 दिसंबर तक के लिए स्थगित कर दिए। ट्रेड यूनियन चुनाव 28 अक्टूबर को होने हैं। हालांकि, 13 ट्रेड यूनियनों और एससीसीएल के प्रबंधन ने तेलंगाना विधानसभा चुनावों के मद्देनजर ट्रेड यूनियन चुनावों को स्थगित करने की मांग करते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

अपील में कहा गया है कि एससीसीएल से संबंधित लगभग 700 कर्मचारियों को विधानसभा चुनाव की चुनाव ड्यूटी पर तैनात किया गया है और अनुपस्थित कर्मचारियों के कारण ट्रेड यूनियन चुनाव कराना बहुत मुश्किल है। एससीसीएल की याचिका को ध्यान में रखते हुए, उच्च न्यायालय ने ट्रेड यूनियन चुनाव स्थगित करने का आदेश दिया और प्रबंधन को 27 दिसंबर को यूनियन चुनाव कराने को कहा। इसके अलावा, उच्च न्यायालय ने एससीसीएल प्रबंधन को मतदाता सूची की प्रक्रिया 30 नवंबर तक पूरी करने का भी निर्देश दिया है।

तेलंगाना में अकेले विधानसभा चुनाव लड़ेगी बीजेपी : बंडी

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद बंडी संजय ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए गठबंधन पर स्पष्टता दी है। वह आज मीडिया से बात कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भाजपा तेलंगाना में आगामी चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने मंगलवार को तेलंगाना में चुनाव प्रचार का शंखनाद किया। उन्होंने दावा करते

हुए कहा कि राज्य में भाजपा के लिए अनुकूल माहौल है। भाजपा अगला चुनाव जीतेगी। उन्होंने दावा किया कि लोग बीआरएस पार्टी को हराने के लिए तैयार हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार ने रैतु बंधु योजना लागू करके सभी सब्सिडी बंद कर दी। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राज्य के युवा ड्रग्स और गांजे के आदी हो रहे हैं। तेलंगाना में, लोग चुनाव का इंतजार कर रहे हैं। लोग बीआरएस को करारा जवाब देंगे। उन्होंने राज्य मंत्री केटीआर से सीएम केसीआर की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में बताने की मांग की। बंडी ने दिलचस्प टिप्पणी करते हुए कहा कि वह केसीआर की सलामती के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे। उन्होंने सत्तारूढ़ पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि यह विडंबना है कि बीआरएस ने रजाकर फिल्म पर आपत्ति जताई थी, जो रजाकारों द्वारा किए गए अत्याचारों की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

बंडी संजय ने एआईएमआईएम पार्टी पर भी जमकर निशाना साधा। संजय ने एआईएमआईएम को तेलंगाना की सभी 119 सीटों पर चुनाव लड़ने की चुनौती दी। उन्होंने पूछा कि एमआईएम हैदराबाद के पुराने शहर को नए शहर में क्यों नहीं बदल रही है।

एसपी ने दहेगांम और बेज्जूर पुलिस स्टेशनों का अचानक किया निरीक्षण

कुमरम भीम आसिफाबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। बुधवार को जिले के एसपी के. सुरेश कुमार आईपीएस ने दहेगांम और बेज्जूर थाने का औचक निरीक्षण किया। थाने के रिकार्ड, रिसेप्शन, हवालात, पुरुष बैरक, तकनीकी कक्ष, आसपास का निरीक्षण किया, संबंधित थाने के कर्मियों से बात की और उनके कर्तव्यों के संबंध में निर्देश दिए और उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। इसी तरह, दहेगाम एसआई सनथ रेड्डी और बेजूर एसआई विक्रम को चुनाव के संबंध में उचित निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि शिकायतें हर समय प्राप्त होनी चाहिए और पीड़ितों की शिकायतों पर त्वरित प्रतिक्रिया देकर सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए।

कहा कि लोगों तक पहुंच हमेशा बनी रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्थिक अपराधों को रोकने के लिए कालोनियों में सीसी कैमरे लगवाने के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए। इसमें असामाजिक गतिविधियों पर नकेल कसने की बात कही गयी है।इस बैठक में डीएसपी करुणाकर, सीआई नागराजू, एसएसआई सनथ रेड्डी, विक्रम और स्टाफ ने भाग लिया।

सीमावर्ती इलाकों में चेक पोस्टों का एसपी ने निरीक्षण किया

कुमरम भीम आसिफाबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। कुमरम भीम आसिफाबाद जिले के एसपी के सुरेश कुमार आईपीएस ने बुधवार को विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बनाए गए अंतरजिला चेक पोस्ट और बॉर्डर चेक पोस्ट का निरीक्षण किया। इस मौके पर एसपी ने कहा कि चुनाव आचार संहिता को सख्ती से लागू किया जाएगा।जिले में नकदी और शराब के मुफ्त वितरण पर विशेष निगरानी रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि जब से आदर्श आचार संहिता लागू हुई है, वैसे लोग जो 50 हजार रुपये से अधिक नकदी लेकर चलते हैं, जो लोग बड़ी मात्रा में सोना लेकर आते हैं। अन्य वस्तुओं को सबूत दिखाना होगा। यदि नहीं, तो उन्होंने चेतावनी दी कि नकदी, अन्य सामान और सोने के आभूषण जब्त कर लिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि चूंकि चुनाव नियम लागू हैं, इसलिए पुलिस विभाग के निर्देशन में प्रवर्तन कार्य किया जाएगा और कोई भी व्यक्ति मतदाताओं को

लुभाने का कार्य नहीं करेगा और ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ मामला दर्ज किया जाएगा।

एसपी सुरेश कुमार ने सुझाव दिया कि चेक पोस्ट कर्मियों को दिन-रात 24 घंटे शिफ्ट में ड्यूटी पर रहना चाहिए और हथियारों से लैस वाहनों की जांच करनी चाहिए, सतर्कता से काम करना चाहिए, प्रत्येक वाहन की अच्छी तरह से जांच करनी चाहिए और वाहन निरीक्षण की पृष्ठभूमि में एक वीडियो बनाना चाहिए। इस कार्यक्रम में कागजनगर डीएसपी करुणाकर, कागजनगर ग्रामीण सीआई नागराजू, एसआई और पुलिस कर्मियों ने भाग लिया।जिले में स्थापित चेक पोस्टों का विवरण इस प्रकार है: रायपल्ले वाडा रेबेना पुलिस स्टेशन रेंज, कलवाडा दहेगम पुलिस स्टेशन रेंज, वानकिडी वानकिडी पुलिस स्टेशन रेंज, सोमिनी बेज्जूर पुलिस स्टेशन रेंज, गुडेम चिंतालमनेपल्ली पुलिस स्टेशन रेंज, वेंकटरावु पेट सिरपुर (टी) पुलिस स्टेशन रेंज, स्थापित किये गये हैं।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें ट्विट्टर@SCRailwayindia पर फालो करें। दमरे निविदा सूचनाओं का विवरण हमारे वेबसाइटः www.scr.indian-railways.gov.in पर भी उपलब्ध है।

ई -निविदा सूचना सं. सी-एसजी-पीटी-एलटीइ-03, दि.9/10/2023 PUB/1129

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता /परियोजना/टेलि./सिकंदराबाद, दक्षिण मध्य रेलवे, नीचला तल, माइक्रोवेव बिल्डिंग, सिकंदराबाद-500025 व्दारा निम्न कार्यों हेतु निर्धारित प्रारूप में खुली ई-निविदा आमंत्रित की जाती हैं।

निविदा सं. व तिथिः सी-एसजी-पीटी-एलटीइ-03, दि.9/10/2023, कार्य विवरणः दमरे के सिकंदराबाद डिवीजन के आरकेएम 523 में 4जी एलटीइ-आर के प्रावधान से जुडा व्यापक जमीनी बुनियादी ढांचा कार्य(काम्प्रेहेन्सिव ग्राउंड इन्फ्रास्ट्रक्चर वर्क) कार्य।
निविदा का अनुमानित मूल्यः रु.50,12,11,248.73, बोली सुरक्षा राशिः रु.25,06,100/-, स्वीकृत पत्र की जारी की तिथि से कार्य। पूरा करने की अवधिः600 दिन, निविदा बंद करने की तिथिः.10-11-2023 के 15.00 बजे तक, पूर्व बोली सम्मेलन तिथिः 17-10-2023 के 15.00 बजे, निविदा खोलने की तिथि व समयः 17-11-2023 के 15,00 बजे के बाद, आफर की वैधताः बोली की नियत तिथि से 180 दिन, निविदा पुस्तिका का मूल्यः रु.शून्य।

तत्संबंधित अधिक जानकारी, इंडियन रेलवे की वेबसाइटः www.ireps.gov.in प्राप्त की जा सकती है। जो निविदादातागण इन आमंत्रित निविदाओं में भाग लेना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि, वेबसाइटः www.ireps.gov.in पर जाकर, अनिवार्य तौर पर रजिस्टर करें। अधिक जानकारी हेतु कृपया तत्संबंधित वेबसाइट का अवलोकन करें।

उप मुख्य सिग्नल एवं दूर संचार अभियंता, (परियोजनाएं/दूरसंचार), सिकंदराबाद

ई-निविदा आमंत्रण सूचना (http://ireps.gov.in व्दारा) PUB/1130

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, मुख्य बिजली अभियंता(निर्माण), दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद व्दारा निम्न कार्यों हेतु निविदा की एकल पैकेट प्रणाली के तहत ई-निविदा आमंत्रित हैं।

क्रम सं. 1, निविदा आमंत्रण सूचना सं. निविदा सं. 12-2023-2024-इ-जीएस-सीएन-बीजेडए, दि.10-10-2023, कार्य विवरणः विद्युतीय निर्माण/विजयवाडा जंक्शनः विजयवाडा-काजीपेट स्टेशनों के मध्य विद्युतीकरण सहित न्यू बीजी तीसरी लाइन के हिस्से के रूप में प्रि-एनआय/एनआय वर्किंग के एनडब्ल्यूबीएच-बीजेडए, पीएनडीपी-सीकेएन,सीकेएन-एमटीएमआय, वायपी-एमडीआर तथा एमडीआर-एमटीएमआय सेक्शनों से संबंधित डीजी सेट्स सहित अस्थायी तौर पर अबाधित बिजली आपूर्ति का प्रावधान के साथ प्रकाश(लाइटिंग) व्यवस्था, एयर कूलर्स, पंखों, शामियानाज व कुर्सियों की व्यवस्था का कार्य।
विवरणः अनुमानित मूल्यः रु.72,92,346/, पूधराः रु.1,45,900/-, निविदा दस्तावेज मूल्यः शून्य, पूरा करने की अवधिः 12(बारह) महिने, बंद करने की तिथिः 31-10-2023 के 15.00 बजे।

बोली दस्तावेज एवं अन्य विवरण हेतु, कृपया **वेबसाइटः** http://ireps.gov.in पर लागआन करें।
बोली सुरक्षा राशि/पूधरा को आयआरइपीएस के इ-पेमेंट गेटवे व्दारा नकद रूप में जमा करना होगा या शेड्यूल्ड कमर्शियल बैंक आफ इंडिया(भारतीय अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक) से एफए एंड सीएओ/सी/एससी के पक्ष में बैंक गारंटी के रूप में जमा करना होगा या निविदा दस्तावेज में विवरित निर्देशानुसार जमा करना होगा। तत्संबंधित बैंक गारंटी बांड जो अनुलग्नक-वीआयए नुसार होना चाहिए तथा बोली वैधता अवधि से परे, 90 दिनों तक वैध होना चाहिए।
निविदादाता अपने आफर्स को, आनलाईन रूप में, निविदा प्रस्तुति की अवधि के दौरान, जो निविदा बंद की तिथि के पंद्रह दिन पहले, की अवधि में, जमा कर सकते हैं।
निविदादाता तत्संबंधित किसी भी शुध्दिपत्रों(केवल आनलाइन रूप मे जारी) को निविदा जमा करने की अवधि प्रारंभ होने की तिथि तक ही अवलोकन कर सकते हैं।

-उप मुख्य बिजली अभियंता,(निर्माण), विजयवाडा
A1559

निविदा शर्तों/ तत्संबंधित अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्सः https://www.ireps.gov.in या www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

पूर्व तट रेलवे

Tender Notice No. WAT-RSO-TENDER-12-2023, Dtd. 05.10.2023

कार्य का नामः तीन वर्ष की अवधि के लिए गैस, सूखे रासायनिक पाउडर को फिर से भरने और Elect (OP)/WAT मंडल के दोषपूर्ण स्पेयर पार्ट्स के प्रतिस्थापन सहित विभिन्न प्रकार के अग्निशामक यंत्रों का रखरखाव।

निविदा मूल्यः ₹2,44,512/-, EMD: ₹4,900/-

निविदा दस्तावेज की कीमतः ₹1,180/-

पूर्णता अवधि : 03 (तीन) वर्ष

निविदा बंद होने की तिथि एवं समयः 27.10.2023 को 1500 बजे

निविदा दस्तावेज एवं पूर्ण विवरण http://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध हैं।

निविदादाताओं को जारी किए गए शुद्धिपत्र को देखने के लिए वेबसाइट का अवलोकन करें।

वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (OP), वाल्टियर

PR-651/O/23-24

भारतीय रेल

रेल विद्युतीकरण

www.ireps.gov.in

प्रपत्र 10-01

सार्वजनिक अधिसूचना PUB/1132

एतद्वारा निम्न विवरित खंड के पूर्ण खंड पर स्थित रेलवे लाइनों तथा परिसरों के सभी उपयोगकर्ताओं को सूचना दी जाती है कि:

तत्संबंधित कार्य के उपलक्ष्य में उपरोक्त सेक्शन के 25000 वोल्ट्स, 50 एचजेड, ए.सी. ओवरहेड ट्रैक्शन वायर्स को तत्संबंधित सेक्शन की निर्दिष्ट तिथि को या इसके बाद उर्जित (एनर्जाइज) किया जायेगा। अतः निर्दिष्ट तिथि या उसी तिथि से ओवर हेड ट्रैक्शन लाइनस् को निरंतर लाइव या सक्रिय माना जायेगा तथा इसके चलते कोई भी अनधिकृत व्यक्ति उक्त ओवर हेड लाइन के निकट न पहुंच सकेगा न कोई कार्य ही कर सकेगा।

सेक्शन	लोकेशन से	लोकेशन तक	तिथि	जोन
सेक्शनः--गति शक्ति मल्टि-मोडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) मेसर्स	94/14ए(सी एचः 0/680.60)	एसबीडब्ल्यू/35-35ए(सीएचः 1/801.60)	20-10-2023 को या इसके बाद	जोनः दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद

साई बालाजी वेयर हाउसिंग एंड लाजिस्टिक्स प्रा. लि. जो थिप्पार्थी रेलवे स्टेशन से थिप्पार्थी -कुक्कडम सेक्शन के मध्य़ उतारना।

प्रपत्र 10-02
(एसीटीएम अनुच्छेद 21020, खंड ।।, भाग ।- सुधार पर्ची सं.32, दि.09.10.2020)
एसी 25 केवी ट्रैक्शन का प्रारंभ
सडक उपयोगकर्ताओं को चेतावनी

आम जनता को एतद्वारा निम्न सेक्शन के तहत 25 केवी ए.सी. इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन के प्रारंभ से जुड़े, सेक्शनः--गति शक्ति मल्टि-मोडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) मेसर्स साई बालाजी वेयर हाउसिंग एंड लाजिस्टिक्स प्रा. लि सेक्शन. दमरे के थिप्पार्थी रेलवे स्टेशन से थिप्पार्थी -कुक्कडम सेक्शन के मध्य़ उतारना के बारे में अधिसूचित किया जाता है कि,तत्संबंधित कार्य के मध्देनजर अत्यधिक ऊंचाई के भार के संपर्क में आने या लाइव ट्रैक्शन वायर्स (संपर्क वायर्स) के खतरनाक निकटता की रोकथाम के लिए सभी लेवल क्रासिंग्स पर सड़क के स्तर से उपर 4.78 मीटर्स की स्पष्ट अधिकतम ऊंचाई के साथ हाइट गेजेस स्थापित किए गए हैं।

सेक्शन	तिथि	जोन
सेक्शनः--गति शक्ति मल्टि-मोडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) मेसर्स साई बालाजी वेयर हाउसिंग एंड लाजिस्टिक्स	20-10-2023 को या इसके बाद	दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद

प्रा. लि. जो थिप्पार्थी रेलवे स्टेशन से थिप्पार्थी -कुक्कडम सेक्शन के मध्य़ उतारना।

अतः आम जनता को एतद्वारा अधिसूचित किया जाता है कि, लदान करने वाले वाहनों के प्रति उक्त निर्दिष्ट ऊंचाई का कडाई से पालन किया जाए और इसका पूरा ध्यान रखें कि, किसी भी परिस्थिति में सड़क वाहनों में लदान किए गए भार, उपरोक्त हाइट गेज का उल्लंघन कतई न करते हो।

अत्यधिक ऊंचाई के भार के खतरे निम्न प्रकार हैं-

हाइट गेज के लिए खतरा और सड़क के साथ-साथ रेलवे लाइन के लिए रुकावट I

2. मटेरियल या उपकरण को खतरा या तत्संबंधित वाहन में लदान किये गये उपकरण के लिए खतरा।

3. कंडक्टर्स के संपर्क में आने से या इसके खतरनाक निकटता के कारण आग का खतरा तथा जिंदगी का जोखिम ।

A1562 **वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता, ट्रैक्शन/गुंटूर**

बेख़ौफ बदमाश, कोर्ट से लौट रहे युवक की गोली मारकर हत्या

शामली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। यूपी में बदमाश बेख़ौफ होकर आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। शामली जिले में बदमाशों ने कोर्ट से लौट रहे युवक को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया।शामली के थानाभवन क्षेत्र के गांव मंटी हसनपुर निवासी 25 वर्षीय प्रशांत पुत्र लोकेश को उस समय अज्ञात बदमाशों ने गोली मार दी। जब वह न्यायालय से वापस करीब शाम को अपने घर लौट रहा था। प्रशांत जब गांव के पास पहुंचा तभी अज्ञात बदमाशों ने घटना को अंजाम दिया।

'आयोग का अधिकार अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा तक सीमित'

इलाहाबाद हाईकोर्ट की अहम टिप्पणी

प्रयागराज, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा है कि राष्ट्रीय व राज्य अल्पसंख्यक आयोग को चर्च की दुकान के किराएदार के पार्टनर को अतिचारी व भू-माफिया करार देकर बेदखल करने, एफआइआर दर्ज करने का आदेश जारी करने का अधिकार नहीं है। आयोग को अदालत के अधिकारों का इस्तेमाल कर अधिकारियों को तलब कर अवैध कब्जा खाली कराने का आदेश देने का भी अधिकार नहीं है। कोर्ट ने कहा आयोग का अधिकार अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा तक सीमित है।

हाईकोर्ट ने खारिज की याचिका

दोनों आयोगों के निर्देश का पालन कराने की मांग को लेकर दाखिल याचिका पर हस्तक्षेप से इन्कार करके याचिका खारिज कर दी। कोर्ट ने याची को नियमानुसार बेदखली के लिए सिविल अदालत में जाने की नसीहत दी। यह आदेश न्यायमूर्ति एमसी त्रिपाठी व न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार की खंडपीठ ने संभल के डिवाइन फेथ फेलोशिप चर्च व अन्य की याचिका पर दिया है।कोर्ट ने आयोग द्वारा सिविल कोर्ट के अधिकार का इस्तेमाल कर शक्तियों का दुरुपयोग करने के कृत्य को निंदनीय करार दिया।

कोर्ट ने कहा- आयोग न जाए अधिकार क्षेत्र से बाहर

कोर्ट ने अपने आदेश की प्रति मुख्य सचिव सहित अन्य अधिकारियों को भेजने का निर्देश दिया और टिप्पणी की है कि आयोग अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर काम कर रहा है। कहा कि अगर सदस्य या अध्यक्ष ऐसा कर रहे हैं तो उन्हें पद से हटाया जा सकता है। आयोग अदालतों जैसा रवैया अपना रहे हैं। वे बिना किसी तुक या कारण के अधिकारियों को तलब कर रहे है। याची की ओर से दावा किया गया कि चर्च क्षेत्र के आसपास उनकी 17 दुकानें हैं, जो चर्च की संपत्ति है। एक दुकान पर किसी ने अवैध रूप से कब्जा कर लिया। शिकायत अल्पसंख्यक आयोग से की गई। आयोग ने नायब तहसीलदार को तलब किया। हाजिर होकर नायब तहसीलदार ने रिपोर्ट दी कि वे किरायेदार हैं। आयोग ने अतिचारी के खिलाफ कार्रवाई करने का आदेश दिया। इसका पालन न होने पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को शिकायत की। एसडीएम हाजिर हुए तो अतिक्रमण हटाने व एफआइआर दर्ज कर कार्रवाई का आदेश दिया। इस आदेश का भी पालन नहीं हुआ तो यह याचिका दायर कर आयोग के आदेश का पालन कराने की मांग की गई।

पीएफआई से जुड़े अन्य संगठनों के ठिकानों पर एनआईए ने यूपी के कई जिलों में मारा छापा

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पीएफआई से जुड़े अन्य संगठनों के ठिकानो पर एनआईए ने यूपी में कई जगह छापा मारा। लखनऊ में मदेगंज के बड़ी पकरिया इलाके में एक ही मोहल्ले के तीन घरों में एनआईए ने जांच की। बुधवार सुबह पांच बजे से एनआईए की टीम पैरा मिलट्री फोर्स और महिला पुलिसकर्मियों के साथ छापेमारी कर रही है। लखनऊ के अलावा बाराबंकी, बहराइच, सीतापुर और हरदोई में भी छापा मारने की सूचना है। सीतापुर जिले की महमूदाबाद तहसील में एनआईए ने बुधवार सुबह छापेमारी की है। दो गाड़ियों से बुधवार सुबह पहुंचे अधिकारी पीएफआई से जुड़े नेटवर्क की कड़ियां खंगाल रहे हैं। बुधवार को जिन ठिकानों पर छापे मारे गए, वे पीएफआई पर बैन लगने के बावजूद युवाओं को देश विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए जुटा रहे थे। लखनऊ के अलावा बाराबंकी और बहराइच में पीएफआई के सक्रिय सदस्यों को एनआईए और एटीएस पहले भी गिरफ्तार कर चुकी है। इनमें पीएफआई का प्रदेश अध्यक्ष और दिल्ली दंगों में संलिप्त पाये गए सदस्य शामिल हैं। एनआईए समेत तमाम जांच एजेंसियां अब पीएफआई के सहयोगी संगठनों जैसे सीएफआई, महिला विंग और सियासी चेहरे एसडीपीआई की गतिविधियों पर पैनी नजर रखे हैं।

चिराग ने दो सीटों पर ठोका दावा

चाचा पारस फिर किस लोकसभा क्षेत्र से लड़ेंगे चुनाव?

पटना, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। बिहार में आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर सियासी पारा चढ़ा हुआ है। राजनीतिक दलों के नेताओं ने पार्टी की सियासी ज़मीन मज़बूत करने के लिए रणनीतियां बनानी भी शुरू कर दी हैं। वहीं विभिन्न दलों के नेताओं ने अपने गठबंधन के तहत लोकसभा सीटों पर दावेदारी ठोकना भी शुरू कर दिया है।

जमुई सांसद चिराग पासवान ने एनडीए में टिकट बंटवारे से पहले ही जमुई और हाजीपुर लोकसभा सीट को बड़ा दावा कर दिया है। मीडिया से मुख़ातिब होते हुए चिराग पासवान ने कहा कि जमुई और हाजीपुर सीट से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ही चुनावी मैदान में उतरेगी। चिराग पासवान ने कहा कि मेरी कोशिश है कि हाजीपुर से उनकी मां चुनावी मैदान में उतरें, वहीं जमुई से ख़ुद चिराग चुनावी दांव खेलेंगे। चिराग पासवान ने तो दो सीटों पर अपनी रणनीति बना दी है। अब सवाल यह उठता है कि हाजीपुर से मौजूदा सांसद पशुपति पारस क्या अपनी सीट छोड़ देंगे। एनडीए गठबंधन के सहयोगी दलों में चिराग पासवान और पशुपति पारस दोनों ही शामिल हैं। पशुपति पारस हाजीपुर से मौजूदा सांसद हैं।

वह कह भी चुके हैं कि हाजीपुर सीट से ही वह चुनाव लड़ेंगे क्योंकि भाई ने अपनी विरासत बचाने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी थी। ऐसे में सवाल यह उठता है कि अगर चिराग पासवान की पार्टी दोनों सीटों पर चुनाव लड़ती है, तो फिर पशुपति पारस कहां से चुनाव लड़ेंगे। हाजीपुर सीट के जातीय समीकरण की बात करें तो यह सीट पासवान परिवार और मौजूदा वक्त में एनडीए के पक्ष में है। हिन्दुओं की आबादी लगभग 90 फ़ीसद है, वहीं मुस्लिम मतदाताओं की तादाद फीसद के करीब है। जातीय आधार पर यादव, राजपूत, भूमिहार, कुशवाहा, पासवान और रविदास समुदाय की तादाद अधिक है।

इस सीट पर अति पिछड़ों की भी तादाद भी काफी है, जो कि चुनाव में अहम किरदार निभाते रहे हैं। रामबिलास पासवान इस सीट से 1997 के बाद से सिर्फ़ 2 बार ही चुनाव हारे हैं। उन्होंने हाजीपुर सीट को अपनी कर्मभूमि बनाई थी। यही वजह है कि पासवान परिवार के लिए केंद्र की सियासत में पहुंचने के बहुत ही आसान रास्ता है। पशुपति पारस जितना ज़्यादा, चिराग पासवान का विरोध करेंगे उतना ही सहानुभूति चिराग के पक्ष में होगा। चाचा-भतीजे की सियासी लड़ाई में हाजीपुर पर एनडीए को चुनौती का सामना भी करना पड़ सकता है।

सीएम योगी के सिंध वाले बयान पर

शफीकुर्रहमान बर्क का तीखा हमला, कहा- 'राम मंदिर बना लें, लेकिन इतिहास माफ नहीं करेगा।

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के सांसद डॉ शफीकुर्रहमान बर्क अक्सर अपने बयानों को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। इस बार फिर से सपा सांसद ने सीएम योगी के सिंध को वापस लेने वाले बयान पर ऐसी प्रतिक्रिया दी है, जिस पर सियासत गरम हो गई है। सपा नेता डॉ बर्क ने कहा कि राम जन्मभूमि मामले में इंसाफ नहीं हुआ, नाइंसाफी हुई है। वहीं सिंध को लेकर उन्होंने कहा कि पाकिस्तान का सिंध लेना आसान नहीं है। सपा सांसद डॉ शफीकुर्रहमान बर्क ने सीएम योगी को नजूमी (ज्योतिषी) बताते हुए कहा कि योगी आदित्यनाथ तो ज्योतिषी हैं। वह तो नीचे और ऊपर की सब बातें करते हैं, लेकिन राम जन्मभूमि मामले में इंसाफ नहीं हुआ है। उसमें नाइंसाफी हुई है और वह संविधान और कानून के खिलाफ हुआ है। चाहे आप उसमें राम मंदिर बना लें, लेकिन इतिहास माफ नहीं करेगा। डॉ। बर्क ने आगे कहा कि बाबरी मस्जिद को तो यहां इन्होंने गैरकानूनी तरीके से अपनी ताकत के बल पर कब्जे में लेकर उसे तोड़ दिया और फिर वहां जबरदस्ती मंदिर बना रहे हैं। इसे जायज नहीं ठहराया जा सकता। यह कोई कानूनी बात तो हुई नहीं, लेकिन पाकिस्तान का सिंध ले लेना आसान बात नहीं है। वहां बहुत टेढ़ी बात है अब यह जाने और वह जाने। वहां का मसला अलग है। यह कोई कानूनी बात तो कर नहीं रहे हैं यह तो अपनी ताकत की बात कर रहे हैं।

सीएम योगी ने क्या कहा था

दरअसल सीएम योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में राष्ट्रीय सिंधी सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था कि जब 500 वर्षों के बाद अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है। अगर राम जन्मभूमि वापस ली जा सकती है, तो कोई कारण नहीं कि हम सिंध प्रांत को वापस न ले पाएं।

पुलिसवाला छेड़ रहा था; 14 साल की बच्ची ने आरोपी का हुलिया बताया, मगर पुलिस अबतक ढूंढ़ नहीं सकी

गया, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। बोधगया में छात्रा के साथ छेड़खानी का मामला सामने आया है। मंगलवार को एक निजी स्कूल की छात्रा छुट्टी होने के बाद अन्य दोस्तों के साथ दोमुहान से ऑटो पर बैठकर बोधगया आ रही थी। इसी क्रम में ऑटो पर पुलिस की वर्दी पहने एक व्यक्ति ने छात्रा के साथ अभद्रता की और छेड़छाड़ करने लगा। इस दौरान छात्रा विरोध करती रही। जब छात्रा के साथियों ने भी विरोध करना शुरू किया तो आरोपी वर्दीधारी नोड वन के पास ऑटो से उतर गया। उक्त वर्दीधारी ने नेम प्लेट और बैच नहीं लगाया था। घटना के बाद छात्रा ने हिम्मत दिखायी और अपने दोस्तों के साथ बोधगया थाना पहुंच कर शिकायत दर्ज करायी। छात्रा ने थाने की पुलिस को बताया कि आरोपी व्यक्ति पुलिस वर्दी में था। लेकिन, वर्दी पर नेम प्लेट और बैच नहीं था। छात्रा की शिकायत पर पुलिस बल नोड वन पहुंची, लेकिन आरोपी वहां पर नहीं था। जिसके कारण आरोपी की पहचान नहीं हो सकी।

पूर्णिया में मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट के 4 सदस्यों के घर आईटी का छापा

आंख खुलते ही धमक पड़े इनकम टैक्स के अधिकारी

पूर्णिया, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। बिहार के पूर्णिया में सुबह-सुबह इनकम टैक्स के अधिकारियों ने छापेमारी की है। यह छापेमारी मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट के चार सदस्यों के घर एक साथ पड़ी है। स्थानीय लोगों की मानें तो टीम में सिर्फ इनकम टैक्स के अधिकारी ही हैं। इसमें ईडी की टीम शामिल नहीं है। बुधवार की सुबह करीब सात बजे पटना नंबर की दो दर्जन से अधिक गाड़ियां पूर्णिया के लाइन बाजार शिव मंदिर के पास पहुंचीं। इससे पहले कुछ जानकारी मिलती आधा दर्जन भर अधिकारी और उनके साथ फोर्स एक साथ चार अलग-अलग घरों में छापेमारी के लिए घुस गए। जानकारी के अनुसार, मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट के संस्थापक असद इमाम के घर बड़ी संख्या में फोर्स के साथ इनकम टैक्स के अधिकारी जांच के लिए घुसे हैं। हालांकि कोई भी अधिकारी कुछ कहने से फिलहाल कतराते नजर आ रहे हैं। छापेमारी के बाद हो सकता है कि इसकी जानकारी प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी जाए या फिर शाम तक छापेमारी के बाद पटना से आधिकारिक जानकारी सामने आए कि क्या कुछ बरामद हुआ है। बताया जा रहा है कि मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट के सदस्य कैसर इमाम, गुलाम हुसैन और महमूद के घर आईटी की रेड चल रही है। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो इस दौरान ट्रस्ट के सदस्य महमूद को संस्थापक असद इमाम के घर लेकर अधिकारी गए हैं। पूर्णिया के अलावा भागलपुर समेत अन्य जगहों पर भी छापेमारी की खबर है। बता दें कि मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट का पूर्णिया सहित सीमांचल में शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा नाम है। मिलिया एजुकेशनल ट्रस्ट के अंतर्गत पूर्णिया मिलिया कॉन्वेंट स्कूल, मिलिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मिलिया पॉलिटेक्निक, मिलिया हाई स्कूल एवं किशनगंज में मिलिया इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित है।

बाहुबली पूर्व विधायक और जिप अध्यक्ष को कोर्ट ने सुनाई तीन-तीन साल की सजा, कहा- हाईकोर्ट जाएंगे

पटना, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। खगड़िया के पूर्व विधायक रणवीर यादव और उनकी पत्नी कृष्णा कुमारी यादव (जिला परिषद अध्यक्ष) को अदालत ने सजा सुनाई है। एसीजेएम-1 विभा रानी की कोर्ट ने रंगदारी के केस में सुनवाई करते हुए रणवीर यादव और कृष्णा कुमार यादव को तीन-तीन साल की सजा सुनाई है। इतना ही नहीं अदालत ने दोनों को दस-दस हजार रुपये अर्थदंड भी लगाया। अदालत ने कहा कि दंड की राशि अदा नहीं करने पर छह मास जेल में गुजारना होगा।

दरअसल, 2005 में आलोक तालुकदार के लिखित आवेदन पर शिकायत दर्ज करवाई गई थी। आलोक ने आरोप लगाया गया था कि कृष्णा यादव और रणवीर यादव ने फोन पर उनसे रंगदारी मांगी है। इस मामले में कोर्ट में सुनवाई हुई। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने रणवीर यादव और उनकी पत्नी के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य मिले। इन सबूतों के आधार पर कोर्ट ने दोनों को सुना सुनाई। इधर, पूर्व विधायक रणवीर यादव की ओर से कहा गया है कि वह इस मामले में पटना हाईकोर्ट में अपील करेंगे। रणवीर यादव ने आरोप लगाया कि उनकी पत्नी कृष्णा यादव की राजनीतिक भविष्य खत्म करने के लिए यह साजिश की गयी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पूर्व रणवीर यादव पहले भी अन्य मामले में जेल जा चुकें हैं। चुनाव आयोग ने पहले ही उन्हें चुनाव लड़ने के अयोग्य करार दे दिया था। अब इस सजा के बाद उनकी पत्नी का भी पॉलिटिकल करियर पर विराम लगता दिख रह है। लोगों का कहना है कि वर्तमान में जिला पराषिद अध्यक्ष कृष्णा कुमारी यादव को कोर्ट ने दोषी करार दिया है। ऐसे में उनका जिला परिषद अध्यक्ष की कुर्सी से जाना तय है। कई जिला पार्षदों ने जिलाधिकारी से तत्काल कृष्णा यादव को जिला परिषद अध्यक्ष पद से हटाने की मांग भी कर दी है। चर्चा यह भी है कि कृष्णा कुमारी यादव लोकसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही थी, लेकिन सजा मिलने के बाद अब वह चुनाव नहीं लड़ पाएंगी।

यूपी में पुलिस कर्मियों की छुट्टियों पर लगी रोक

डीजीपी ने जारी किए आदेश, इस वजह से लिया फैसला

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के डीजीपी विजय कुमार ने आने वाले दिनों में पड़ने वाले त्योहारों को देखते हुए सभी जिलों को अलर्ट रहने के साथ-साथ पुलिसकर्मियों को विशेष परिस्थितियों में ही छुट्टी मिलने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पुलिस कर्मियों की छुट्टियों पर 15 अक्टूबर से 20 नवंबर तक रोक लगा दी है। इस दौरान विशेष परिस्थितियों में ही पुलिसकर्मियों को अवकाश मिल सकेगा। उत्तर प्रदेश के डीजीपी ने आदेश जारी करते हुए यूपी के सभी एडीजी, आईजी, पुलिस कमिश्नर और जिले के कप्तानों को साफ किया है कि आने वाले दिनों में दुर्गा पूजा, विजयदशमी, दीपावली और छठ पूजा को देखते हुए पुलिसकर्मियों की छुट्टियों पर रोक लगाई जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि विशेष परिस्थितियों में संबंधित अधिकारी पुलिसकर्मियों की छुट्टियां अपने विवेकाधिकार से ही दे। डीजीपी ने इस आदेश को तत्काल पालन करने का निर्देश भी दिया है। अक्टूबर की 15 तारीख से इस बार नवरात्रि शुरू हो रही है। वहीं 24 अक्टूबर को दशहरे का पर्व है। जिसे पूरे प्रदेश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इसके साथ ही 24 के बाद भी आगामी 10 दिनों तक अलग-अलग जगह पर भी तरह तरह के मेलों का आयोजन होता है जिसको लेकर के पुलिस की छुट्टियां रद्द की गई हैं। दशहरे के बाद अगले महीने नवंबर में 12 तारीख को दीपावली का पर्व पड़ रहा है और इसके एक हफ्ते बाद 17 नवंबर से शुरू करके 20 नवंबर तक छठ पूजा रहेगी। जिसको देखते हुए पुलिसकर्मियों की यह छुट्टियां रद्द की गई है।

अखिलेश को रोकने के लिए जेपीएनआईसी गेट पर जड़ा ताला

नहीं मिली जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण की अनुमति

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। समाजवादी चिंतक जयप्रकाश नारायण की जंयती पर बुधवार को सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के जेपीएनआइसी जाने से रोकने के लिए एलडीए ने मंगलवार देर शाम गेट पर ताला लगा दिया। इतना ही नहीं गेट को फांदकर कोई बाहर से भीतर न पहुंच सके, इसके लिए लोहे की चादर की दीवार भी लगा दी गई है। एलडीए ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को जेपीएनआइसी में माल्यार्पण कार्यक्रम की अनुमति देने से मना कर दिया है। अखिलेश यादव ने जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल सेंटर (जेपीएनआइसी) में जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने का कार्यक्रम तय किया था। सपा प्रदेश कार्यालय की ओर से एलडीए उपाध्यक्ष डा। इंद्रमणि त्रिपाठी ने अनुमति मांगी गई थी।

एलडीए ने दिया सुरक्षा कारणों का हवाला

पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र चौधरी को जयंती कार्यक्रम की जिम्मेदारी दी गई थी। राजेंद्र चौधरी ने मंगलवार दोपहर भी जेपीएनआइसी पहुंचकर तैयारियों की समीक्षा की थी। इस बीच शाम को एलडीए ने सपा के प्रदेश कार्यालय को पत्र भेजकर सुरक्षा कारणों का हवाला देकर कार्यक्रम की अनुमति देने से मना कर दिया। एलडीए ने जेपीएनआइसी के गेट पर ताला लगा दिया। जेपीएनआइसी के गेट पर लोहे की चादरों की दीवार एलडीए ने देर शाम खड़ी कर दी।

जब हुआ था निलंबन

पिछले साल विधानसभा चुनाव के समय एक चैनल को साक्षात्कार देने के लिए अखिलेश यादव जेपीएनआइसी के हेलीपैड तक पहुंच गए थे। बिना अनुमति जेपीएनआइसी आने पर एलडीए ने इंचार्ज सहित तीन कर्मचारियों को निलंबित कर दिया था।

महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद की बढ़ेंगी मुश्किलें

सीएम योगी को अपशब्द बोलने पर हुई एफआईआर

गाजियाबाद, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सीएम योगी को अपशब्द बोलने पर यह एफआईआर दर्ज कराई गई है। जानकारी के मुताबिक महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी पर थाना मसूरी में एफआईआर दर्ज हुई है। हिंदू रक्षा दल के अध्यक्ष भूपेंद्र तोमर उर्फ पिंकी चौधरी के खिलाफ गुंडा एक्ट और हिस्ट्रीशीटर की कार्रवाई करने के खिलाफ गाजियाबाद में डीएम दफ्तर पर प्रदर्शन किया गया। जनपद में धारा 144 लगे होने के बावजूद सैकड़ों की तादाद में कार्यकर्ता डीएम ऑफिस के अंदर मुख्य सड़क पर धरना देकर बैठ गए थे। खुद पिंकी चौधरी कार्यकर्ताओं के कंधे पर बैठकर डीएम ऑफिस पहुंचे थे। हिंदू रक्षा दल के कार्यकर्ताओं में पुलिस की कार्यप्रणाली को लेकर जबरदस्त गुस्सा देखने को मिला। इधर, डासना देवी मंदिर से पिंकी चौधरी को समर्थन देने डीएम ऑफिस जा रहे महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरि को पुलिस ने वहीं पर रोक दिया था। इसे लेकर पुलिस और महामंडलेश्वर के बीच तीखी नोकझोंक हुई। इस दौरान धक्का-मुक्की में वे जमीन पर गिर पड़े। एसीपी ने हाथ जोड़कर उन्हें उठाया और वापस मंदिर में ले गए। पुलिस के इस दुर्व्यवहार से नाराज महामंडलेश्वर ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जारी संदेश में अपशब्द कहे। उन्होंने कहा कि अगर हिम्मत है तो दारुल उलूम देवबंद और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी पर कार्रवाई करके दिखाए। यति नरसिंहानंद ने कहा कि सीएम योगी जितने मुकदमे चाहें लगा लें। हमें मार दें, ।मरना मंजूर है । या तो जेल डाल दीजिए धाराएं नकली लगा सकते हैं तो लगा दें। केवल मैं अपने बच्चों के लिए लड़ाई लड़ रहा हूं।। यही गलती है मेरी। आप राजा बनकर बैठे हो मेरे बच्चों की मेहनत पर हमारे खून पसीने पर। उन्होंने कहा कि योगी आदित्यनाथ के पास मौका था महाराणा प्रताप बनने का लेकिन वो जो भी बने वह दुनिया देखेगी। यति नरसिंहानंद गिरी पर थाना मसूरी में एफआईआर दर्ज हुई है। ये एफआईआर डासना चौकी इंचार्ज प्रशांत गौतम ने दर्ज कराई है, जिसमें महामंडलेश्वर पर आईपीसी सेक्शन 505, 295ए और 67 आईटी एक्ट के सेक्शन लगाए गए हैं।

मठ में चल रहा था सेक्स रैकेट! नाबालिग लड़की से रेप के आरोपी के फोन में मिले वीडियो

कथित धर्मगुरु गिरफ्तार

श्रावस्ती, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। धर्म नगरी श्रावस्ती के एक मठ में अधर्म का पर्दाफाश हुआ है। मठ के संचालक तथाकथित धर्मगुरु को पुलिस ने रेप के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, एक सप्ताह पहले जिले के इकौना थाना क्षेत्र अंतर्गत चौक बाजार की एक नाबालिग लड़की को कस्बे का ही राजा उर्फ राजन पटवा बहला-फुसलाकर ले गया था। कल्याण मैत्री बौद्धी सोसाइटी (मठ) में ले जाकर उसने बच्ची के साथ छेड़छाड़ और दुष्कर्म किया। इसके अलावा उसे जान से मारने की धमकी भी दी। इसकी जानकारी होने पर लड़की के पिता ने इकौना पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की थी।

पीड़ित पिता की तहरीर पर इकौना पुलिस ने आरोपी राजन के खिलाफ धारा 354, 504, 506, 376 और पॉक्सो ऐक्ट के तहत

मुकदमा पंजीकृत कर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की पूछताछ और आरोपी का मोबाइल फोन चेक करने के दौरान कई चौंकाने वाले खुलासे हुए। पूछताछ के दौरान मामले में कथित धर्मगुरु अशोक कुमार बौद्ध तथा उसके मठ कल्याण मैत्री बौद्धी सोसाइटी की संलिप्तता उजागर हुई थी। इस पर इकौना पुलिस ने अशोक कुमार बौद्ध को भी उसके मठ से गिरफ्तार कर उसके खिलाफ धारा-120बी और पॉक्सो ऐक्ट की कार्यवाही करते हुए जेल रवाना कर दिया है। सूत्रों की मानें तो आरोपी राजन पटवा के मोबाइल से पुलिस को कई अश्लील वीडियो मिले हैं, जो कल्यान मैत्री बौद्धी सोसाइटी (मठ) के कमरों के बताए जा रहे हैं। इकौना पुलिस के अनुसार कथित धर्मगुरु अशोक कुमार बौद्ध अपनी सोसाइटी को गलत कार्यों के लिए प्रयोग में कर रहा था।

2016 में भी इस मठ में हो चुका है सेक्स रैकेट का खुलासा

मठ को गलत कार्यों के लिए इस्तेमाल करने वाले तथाकथित धर्म गुरू अशोक कुमार बौद्ध के इसी मठ में सितम्बर 2016 में सेक्स रैकेट का भांडाफोड हुआ था। 2016 में तत्कालीन पुलिस अधीक्षक हेमन्त कुटियाल ने विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त सेक्स रैकेट संचालन की सूचना पर स्पेशल ब्रांच की टीम को मामले की खुलासा के लिए लगाया था। इस पर स्पेशल ब्रांच की टीम ने 25 सितम्बर 2016 को कलयान मैत्री बौद्धी सोसाइटी में छापा मारकर दो कमरों से दो युवतियों को दो लड़कों के साथ बेहद आपत्तिजनक हालत में बरामद किया था। इस दौरान स्पेशल ब्रांच की टीम को उक्त कमरों से बड़ी मात्रा में पोर्न डीवीडी के साथ उत्तेजक दवाएं तथा कंडोम के पैकेट भी मिले थे। इस पर पुलिस ने मठ धर्मशाला के संचालक तथाकथित धर्म गुरू अशोक कुमार बौद्ध समेत पकड़े गए युवक व युवतियों को जेल भेज दिया था।

पुलिस एवं खुफिया तंत्र क्यों नहीं होती अधर्म की जानकारी

बौद्ध तीर्थ क्षेत्र श्रावस्ती अन्तर्गत नवीन मार्डन पुलिस थाना से चंद कदम की दूरी पर संचालित कल्यान मैत्री बौद्धी सोसाइटी (मठ) में वर्षों से चल रहे सेक्स रैकेट की जानकारी स्थानीय पुलिस को न होना उनके कार्यशैली पर बड़ा सवाल खड़ा कर रहा है। 2016 में जब स्पेशल ब्रांच की टीम ने उक्त मठ में छापा मारकर सेक्स रैकेट का भांडाफोड़ किया था, तब चंद कदम की दूरी पर स्थित रिपोर्टिंग पुलिस चौकी श्रावस्ती के पुलिस कर्मियों को इस मठ के अवैध कार्यों की भनक तक नहीं थी, जिससे उनके कार्यशैली पर तमाम सवाल खड़े हुए थे और अब 2023 में इकौना पुलिस द्वारा उसी धर्म गुरू के मठ को गलत कार्यों के लिए प्रयोग करने का खुलासे किए जाने से नवीन मार्डन पुलिस थाना सवालों में घिरती नजर आने लगी है। बता दें कि श्रावस्ती में स्थापित रिपोर्टिंग पुलिस चौकी को हीं थाने का दर्जा प्राप्त हो चुका है। जिससे यहां पर पुलिस स्टाफ में भारी बढ़ोत्तरी के साथ हीं खुफिया एजेंसियों के जवान भी तैनात किए गए हैं।

'बंद करना ही होगा', मुखर्जी नगर के कोचिंग सेंटर्स को राहत नहीं, दिल्ली एचसी सख्त

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दिल्ली के मुखर्जी नगर के कोचिंग सेंटरों पर हाई कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए कहा है कि विद्यार्थियों की सुरक्षा से किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं किया जा सकता। ऐसे में दिल्ली मास्टर प्लान 2021 के तहत वैधानिक आवश्यकताओं का पालन नहीं करने वाले कोचिंग सेंटरों को बंद करना होगा। दरअसल दिल्ली हाई कोर्ट ने मुखर्जी नगर में कोचिंग केंद्रों के संचालन से संबंधित याचिकाओं पर सुनवाई की थी। इस दौरान मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति संजीव नरूला की पीठ ने कहा कि छात्रों की सुरक्षा के मामले पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

'मानदंडों का अनुपालन किया जा रहा है'

वहीं कोर्ट में कोचिंग केंद्रों के संघ का प्रतिनिधित्व कर रहे वकील ने कहा कि नियम के मुताबिक सभी मानदंडों का अनुपालन किया जा रहा है। इसके जवाब में कोर्ट ने कहा कि मानदंडों का पालन हो रहा है या नहीं ये अधिकारी देखेंगे। हाई कोर्ट ने मुखर्जी नगर के निवासियों और कोचिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा पक्षकार बनाने के लिए दायर दो अलग-अलग आवेदनों को भी अनुमति दे दी। कोर्ट का कहना है कि जो लोग पक्षकार बनाए गए हैं वो मामले में जवाब दाखिल करने के लिए स्वतंत्र हैं। कोर्ट ने कहा कि कोचिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया को सुना जाना जरूरी है।

कोर्ट ने केंद्र को दिया था कोचिंग संस्थानों को बंद करने का आदेश

कोचिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया फेडरेशन ने कोर्ट के उस आदेश की समीक्षा की भी मांग की है, जिसमें कोर्ट ने केंद्र को सभी कोचिंग सेंटरों को बंद करने का आदेश दिया था। कोर्ट का कहना था कि अग्निशमन सेवा विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र के बिना चल रहे सभी कोचिंग सेंटरों को बंद कर दिया जाए। इसके अलावा कोर्ट ने दिल्ली नगर निगम, दिल्ली सरकार और मुखर्जी नगर थाने के प्रभारी को इस मामले में अपनी रिपोर्ट दाखिल करने को कहा है, जिसके लिए कोर्ट ने उन्हें चार सप्ताह का समय दिया है। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने कोर्ट में एक रिपोर्ट पेश कर बताया था कि, दिल्ली में चल रहे 583 कोचिंग सेंटरों में से महज 67 सेंटरों के पास ही दिल्ली अग्निशमन सेवा से अनापत्ति प्रमाण पत्र है।

23 नवंबर को होगी अगली सुनवाई

इस मामले में कोर्ट 23 नवंबर को अगली सुनवाई करेगा।आपको बता दें कि जून में मुखर्जी नगर के एक कोचिंग सेंटर में आग लग गई थी। जिसमें कई लोगों ने मुश्किल से अपनी जान बचाई थी। इस घटना पर दिल्लीहाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए याचिका पर सुनवाई शुरू की थी।

लव मैरिज करने वाली महिला पर अत्याचार

गर्दन पर चाकू रख पोर्न मूवी दिखाई; पीरियड्स के दौरान जबरदस्ती संबंध बनाए

अंबाला, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। हरियाणा के अंबाला में युवती ने परिजनों से खिलाफ जाकर युवक से लव मैरिज की। कुछ दिन बाद वह ससुराल में रहने लगी। यहां पति की घिनौनी करतूत के साथ-साथ सास द्वारा दी गई मानसिक प्रताड़ना झेलनी पड़ी। पति पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह नशे में धुत होकर उसकी मर्जी के खिलाफ शारीरिक संबंध बनाता था। पीरियड्स के दौरान भी उसने जबरदस्ती की। एक बार तो मना करने पर चाकू गर्दन पर रख जबरदस्ती अश्लील मूवी दिखा कर गलत तरीके से संबंध बनाए। नवंबर-2019 में पीरियड्स के दौरान रिलेशन न बनाने पर मारपीट कर उसके कपड़े उतार कमरे से बाहर खड़ा कर दिया।

9,300 पीआरडी कर्मियों को मिलेंगी सारी सरकारी छुट्टियां, संशोधित एक्ट में है ये व्यवस्था

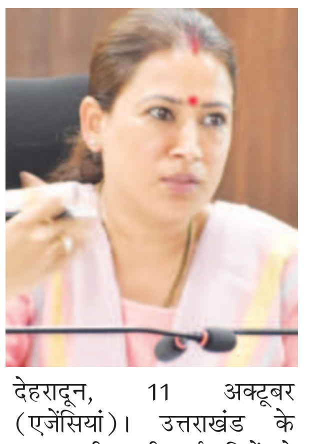

देहरादून, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। उत्तराखंड के 9,300 पीआरडी कर्मचारियों को सभी सरकारी छुट्टियां मिलेंगी। राजभवन से उत्तराखंड संयुक्त प्रांतीय रक्षक दल अधिनियम संशोधन विधेयक को मंजूरी मिल गई है। जिस विभाग से जवानों की मांग की जाएगी, उनके दैनिक भत्ते का भुगतान भी संबंधित विभाग की ओर से किया जाएगा। प्रदेश के विभिन्न सरकारी विभागों में पीआरडी के लगभग छह हजार कर्मचारी कार्यरत हैं। कंप्यूटर ऑपरेटर, अनुसेवक, डाक सेवक, चौकीदार, कार्यालय सहायक, वाहन चालक आदि विभिन्न पदों पर कार्यरत इन कर्मचारियों के मानदेय का भुगतान संबंधित विभाग करेगा इससे पीआरडी में भर्ती की अधिकतम आयु सीमा भी 45 वर्ष से घटकर अब 42 वर्ष हो जाएगी, जबकि सेवानिवृत्ति की आयु सीमा 50 साल से बढ़ाकर 60 वर्ष होगी।

संशोधित एक्ट में यह की गई है व्यवस्था

स्वयं सेवकों को अन्य विभागों, संस्थानों में कर्तव्य पालन के लिए बुलाने पर उनके दैनिक भत्ते का भुगतान संबंधित विभाग व संस्थान करेगा। इसके लिए संबंधित विभाग व संस्थान की ओर से आवश्यक धनराशि की व्यवस्था के लिए नियमानुसार बजट में प्रावधान किया जाएगा।

राजभवन से इन विधेयकों को भी मिली मंजूरी

सचिव राज्यपाल रविनाथ रमन के मुताबिक, उत्तराखंड संयुक्त प्रांतीय रक्षक दल अधिनियम संशोधन विधेयक के साथ ही जमीदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था, जीएसटी, विनियोग विधेयक को भी मंजूरी मिली है, जबकि अन्य का परीक्षण किया जा रहा है। पीआरडी एक्ट में संशोधन के बाद नए पंजीकरण पर विचार किया जाएगा। पीआरडी के माध्यम से अन्य विभागों में भी कर्मचारियों के लिए रोजगार का रास्ता खुलेगा।

इजराइल-हमास युद्ध में फंसी एमपी की छात्रा

टीकमगढ़, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इजराइल-हमास युद्ध के बीच मध्यप्रदेश की एक छात्रा फंस गई। उसने अपने पिता को फोन पर बताया कि सायरन बजते ही डेढ़ मिनट के अंदर बंकर में जाना पड़ता है। हॉस्टल में जो कुछ खाने-पीने का इंतजाम है, उससे ही काम चला रही है। टीकमगढ़ जिले के शिव धाम कुंडेश्वर की रहने वाली स्वाति सिरोटिया 2020 में एग्रीकल्चर से एमएससी करने इजराइल गई थी। इसी महीने डिग्री कंप्लीट होने पर उन्हें घर लौटना था, लेकिन 7 अक्टूबर को हमास ने इजराइल पर हमला कर दिया। उनके पिता राजेंद्र सिरोटिया ने बताया कि स्वाति येरूशलम की हिब्रू एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी से मास्टर्स कर रही हैं।

पंजाब में एसवाईएल पर बढ़ी रार

सीएम भगवंत मान ने विपक्ष को घेरा, कहा- सुनील, सुखबीर और वड़िंग शर्म करो

चंडीगढ़, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पंजाब में सतलुज यमुना लिंक नहर (एसवाईएल) के मुद्दे पर सियासत गरमाई हुई है। सुप्रीम कोर्ट से फटकार के बाद से पंजाब में पक्ष-विपक्ष आमने सामने हैं। कांग्रेस, अकाली दल और भाजपा ने इस मुद्दे पर पिछले दिनों प्रदर्शन किया। इसके बाद सीएम भगवंत मान ने बुधवार सुबह एक तंज भरा ट्वीट किया। सीएम ने लिखा-माननीय सुनील जाखड़ सुखबीर बादल, बाजवा, राजा वड़िंग, कोई थोड़ी बहुत शर्म नाम की चीज घर से लेकर चलते हो या नहीं?? चांदी की कस्सी से टक लगाने वाली फोटो में कैप्टन के साथ बलराम जाखड़ भी खड़े हैं! देवीलाल ने हरियाणा विधानसभा में प्रकाश सिंह बादल की एसवाईएल के सर्वे करने की अनुमति देने की प्रशंसा की। सुखबीर सिंह गुड़गांव के ओबेराय होटल की फर्द लेकर आना जहां तक पानी की बात है, तो उसकी चिन्ता मत करो, बचपन में भी मेरी ड्यूटी खेत की निगरानी के लिए लगती थी, कि खाल में कोई छेद न पड़ जाए।

परमात्मा ने आज भी मेरी ड्यूटी खाल पर ही लगाई है, बस उस खाल का नाम 'सतलुज' है। 1 नवंबर को अपने पुरखों द्वारा कुर्सी के लिए किए गए कुर्सीनामे जरूर साथ लेकर आना, ताकि मेरे वतन पंजाब के लोगों को भी पता चले कि 'कुर्बानी' देने की बात कह कर कितनी बार उनकी कुर्बानी ली गई।

मुख्तार अंसारी के बेटे उमर को बड़ी राहत

एससी से मिली अग्रिम जमानत, लखनऊ में अवैध जमीन हथियाने का मामला

लखनऊ, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। मुख्तार अंसारी के बेटे उमर अंसारी की ओर से दायर अग्रिम जमानत याचिका के मामले पर बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुनवाई के बाद अदालत ने उमर अंसारी को बड़ी राहत दी है। कोर्ट से मुख्तार अंसारी के बेटे को अग्रिम जमानत मिली है। हालांकि इससे पहले हाईकोर्ट ने उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया था। लखनऊ की जियामऊ स्थित जमीन को अवैध तरीके से हथियाने के आरोप में उमर अंसारी को अग्रिम जमानत मिल गई है। दरअसल, उमर अंसारी को 13 अप्रैल को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अग्रिम जमानत देने से इनकार कर दिया था। इलाहाबाद हाईकोर्ट के इस फैसले को उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

हाईकोर्ट से राहत नहीं

जिसके बाद बुधवार को सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में उमर अंसारी को अग्रिम जमानत दी है। इस मामले में मुख्तार अंसारी के साथ उनके दोनों बेटे उमर अंसारी और अब्बास अंसारी भी आरोपी हैं। इस केस में एफआईआर को खारिज करने की मांग को लेकर भी उमर हाईकोर्ट गए थे लेकिन वहां से राहत नहीं मिली थी। मुख्तार अंसारी के साथ ही उमर अंसार और अब्बास अंसारी के खिलाफ ये मामला 27 अगस्त 2020 को लखनऊ के हजरतगंज थाने में दर्ज किया गया था। जिसमें आरोप था कि इन सभी लोगों ने मिलकर फर्जी दस्तावेजों पर अपनी दबंगई के बल पर जियामऊ में सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया था।

कांग्रेस-भाजपा पांचों चुनावी राज्यों में तैनात कर रहे हैं कर्नाटक के पार्टी प्रचारकों को

बेंगलुरु, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। कांग्रेस और भाजपा पांच चुनावी राज्यों यानी मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और मिजोरम में पार्टी के प्रचार के लिए कर्नाटक से अनुभवी प्रचारकों को तैनात कर रही हैं। इन राज्यों में कांग्रेस की ओर से 33 मंत्री और बीजेपी की ओर से 66 विधायकों के साथ वरिष्ठ पदाधिकारी तैनात करने का फैसला किया गया है। बीजेपी के ज्यादातर नेताओं की तैनाती पड़ोसी राज्य तेलंगाना में की गई है। इससे पहले कर्नाटक भाजपा के 45 विधायकों ने बीते अगस्त में ही विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी के प्रचार का काम किया था। करीब 20 विधायक जमीनी स्तर पर काम कर रहे हैं और कई कार्यकर्ता अगले सप्ताह चले जायेंगे। बीवाई विजयेंद्र, राज्य भाजपा अध्यक्ष और बीएस येदियुरप्पा के बेटे के पास तेलंगाना के विकाराबाद जिले के चार निर्वाचन क्षेत्रों का प्रभार है। वहीं धारवाड़ के केंद्रीय विधायक और राज्य भाजपा महासचिव महेश तेंगनाकी पालकुर्थी विधानसभा सीट के प्रभारी हैं। इसी तरह कांग्रेस नेतृत्व भी 5 राज्यों में जमीनी स्तर पर अपने पदाधिकारियों की नियुक्ति चाहता है क्योंकि पार्टी कर्नाटक मॉडल का पालन करने पर जोर दे रही है। जिसने मई के विधानसभा चुनावों में महत्वपूर्ण संख्या में वोट हासिल किए थे। इसी क्रम में कांग्रेस के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार एमपी और तेलंगाना के प्रभारी बन गये हैं। वहीं अनुभवी विधायक बीके हरिप्रसाद को राजस्थान में तैनात किया गया है। लेकिन इस कदम से बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस में भी चिंता बढ़ गई है। चिंता की बात यह है कि मंत्रियों की अनुपस्थिति से पार्टी के अन्य महत्वपूर्ण काम धीमे हो जाएंगे और साथ ही प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और विधानमंडल में विपक्ष के नेताओं की नियुक्ति के मुद्दे में भी देरी होगी। मामले में राज्य कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष सलीम अहमद ने कहा, 'कार्यकर्ताओं को बैचस में काम करने के लिए भेजा जाएगा। कर्नाटक हमेशा हमारी प्राथमिकता रहेगा।' इधर बीजेपी की ओर से एमपी में जबलपुर संभाग के प्रभारी पूर्व विधायक सीटी रवि ने कहा कि प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष और विपक्ष के नेताओं के पद जल्द भरे जाएंगे। चुनाव कार्य पार्टी के इन कार्यों में बाधा नहीं बनेगा।

कुख्यात चोर अवैध देशी कट्टा व एक राउण्ड के साथ धराया, आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

सीहोर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। कुख्यात चोर अवैध देशी कट्टा व एक राउण्ड के साथ धरा गया। आरोपी अपराध की दृष्टि से देवनखेड़ी जोड़ के पास खड़ा हुआ था। सूचना पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार का कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी के द्वारा इकाई के समस्त थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया है कि आगामी चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए, सघन वाहन चेकिंग की जाए, विश्वसनीय मुखबिर तंत्र को सक्रिय कर प्रभावी कार्रवाई की जावे एवं अवैध शस्त्र रखने वालों के विरूद्ध भी प्रभावी कार्रवाई की जाए। इसी तारतम्य में थाना आष्टा पुलिस ने अवैध रूप से देशी कट्टे व राउण्ड के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। जानकारी के अनुसार आष्टा पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति देवनखेड़ी जोड़ के पास कोई वारदात करने की नियत से घूम रहा है और उसके पास अवैध देशी कट्टा भी है।

टेरर फंडिंग मामले में एटीएस की कार्रवाई

नीमच से दीपक सिंघल हिरासत में, देश भर में 12 ठिकानों पर एक्शन

भोपाल, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। देश विरोधी गतिविधियों में संलिप्त और अंतर्राष्ट्रीय आतंकी संगठनों से संबंध रहने वाले पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली सहित करीब 12 ठिकानों पर मंगलवार देर रात से एनआईए छापेमारी कर रही है। केंद्र सरकार पीएफआई पर पिछले साल सितंबर महीने में आतंकी संगठन पीएफआई पर पांच साल के लिए प्रतिबंध लगा चुकी है। केंद्रीय जांच एजेंसियों के इनपुट पर मध्यप्रदेश एटीएस और एनआईए की संयुक्त टीम ने बीती देर रात प्रदेश के नीमच निवासी कारोबारी दीपक सिंघल के ठिकानों पर छापा मारा है। दीपक सिंघल शैल कंपनियों के माध्यम से पैसों का हवाला किया और जीएसटी को भी करोड़ों का चूना लगा चुका है। जीएसटी भी उसके खिलाफ कार्रवाई कर चुकी है। मप्र एटीएस और एनआईए की टीम दीपक सिंघल से टेरर फंडिंग को लेकर पूछताछ कर रही है। मध्यप्रदेश में जड़े जमाने की कोशिश में जुटा पीएफआई आतंकी संगठन और उसके राजनीतिक संगठन सहित अन्य सहयोगी संगठनों पर बीते एक साल में कई बार छापेमारी हो चुकी है। मप्र एटीएस ने प्रकरण दर्ज किया था। बाद में मामला अंतरार्ज्जीय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जुड़ने के कारण जांच का जिम्मा राष्ट्रीय जांच अभिकरण (एनआईए) को सौंपा गया है। एनआईए भोपाल, इंदौर, खंडवा, बुरहानपुर सहित कई अन्य स्थानों पर अलग-अलग छापेमारी कर दो दर्जन से अधिक पीएफआई के सक्रिय सदस्यों को गिरफ्तार कर चुकी है। भोपाल, इंदौर में पीएफआई और उसके राजनीतिक विंग के कार्यालय सील किए जा चुके हैं। पीएफआई संगठन से जुड़े लोगों का टेरर फंडिंग में भी शामिल होने के पुख्ता सबूत एनआईए को मिले हैं। इसके बाद टेरर फंडिंग को लेकर जांच की जा रही है। कथित आतंकी संगठन के आकाओं से संपर्क रखने वाले कुछ और पीएफआई सदस्यों की गिरफ्तारी और आतंकी संगठन को सहयोग करने वालों को लेकर बीती देर रात से एनआईए मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के 12 ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है।

मलयालम अभिनेत्री के साथ हुई विमान में उत्पीड़न की घटना, दर्ज कराई शिकायत

कोच्चि, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। एक मलयालम फिल्म अभिनेत्री ने कोच्चि जाने वाली एयर इंडिया की उड़ान में एक पुरुष यात्री पर उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। यह घटना कथित तौर पर मुंबई से उड़ान के दौरान हुई। मंगलवार रात को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अभिनेत्री ने आरोप लगाया कि संबंधित साथी यात्री नशे में और उपद्रवी था। ग्राउंड ऑफिस की प्रतिक्रिया थी निराशाजनक घटना का विवरण देते हुए एक इंस्टाग्राम पोस्ट में, उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि एयरलाइन के ग्राउंड ऑफिस और फ्लाइट क्रू की प्रतिक्रिया निराशाजनक थी। महिला ने अफसोस जताते हुए कहा कि एयर होस्टेस को रिपोर्ट करने के बावजूद, उड़ान भरने से ठीक पहले उसे दूसरी सीट पर स्थानांतरित करने की एकमात्र कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि यहां हवाईअड्डे पर उतरने के बाद, इस मुद्दे की सूचना हवाईअड्डे और एयरलाइन अधिकारियों को दी गई, जिन्होंने उन्हें वहां पुलिस सहायता चौकी पर भेज दिया। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पेज पर इस संबंध में ईमेल के माध्यम से स्थानीय पुलिस के पास दर्ज शिकायत की एक प्रति भी साझा की। उसे याद आया कि कैसे नशे में धुत यात्री ने उसकी सीट पर कब्जा कर लिया था और तीखी बहस में लग गया था। उसने उन पर अनुचित शारीरिक संपर्क सहित दुर्व्यवहार करने का भी आरोप लगाया। महिला ने कहा, मैंने तुरंत फ्लाइट में एयर होस्टेस को मामले की सूचना दी। हालांकि, एकमात्र कार्रवाई यह की गई कि मुझे तीन, चार पंक्ति आगे वाली बीच की सीट पर स्थानांतरित कर दिया गया। दुर्भाग्य से, उत्पीड़न करने वाले के खिलाफ कोई अन्य उपाय नहीं किया गया। इस बीच, नेदुम्बस्सेरी पुलिस ने बुधवार को कहा कि उन्हें उसकी ओर से एक ईमेल मिला है जिसमें इसे उसकी औपचारिक शिकायत मानने का अनुरोध किया गया है। एक अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया, हम मामले की जांच कर रहे हैं। हम घटना के संबंध में अधिक जानकारी जुटाने के लिए उनसे संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, हमारी अभी तक उनसे फोन पर बात नहीं हो सकी है।

कांग्रेस ने उठाई वन मंत्री शाह के इस्तीफे की मांग, कहा- 146 का छाता 200 में खरीदा

भोपाल, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश कांग्रेस ने वन मंत्री विजय शाह के इस्तीफे की मांग उठाई है। कांग्रेस की ओर से भोपाल में राष्ट्रीय प्रवक्ता आलोक शर्मा ने एक प्रेस आयोजित कर मंत्री शाह और लघु वनोपज संघ के एमडी पर कई गंभीर आरोप लगाए। शर्मा ने कहा कि इन दोनों की मिली भगत से वन विभाग में 60 करोड़ का छाता घोटाला किया गया है।

उसके बाप को इज्जत किसने दी

सम्राट चौधरी पर भड़के नीतीश, बोले- हर दिन बदलता है पार्टियां

पटना, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बुधवार को भाजपा अध्यक्ष सम्राट चौधरीपर भड़क गए। सम्राट चौधरी को लेकर पूछे गए सवाल पर नीतीश ने कहा कि आप जिसका नाम ले रहे हैं, उसका कोई मतलब नहीं है। वो कुछ भी अंड-बंड बोलता है, जिसका कोई मतलब ही नहीं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पत्रकारों के सवालों के जवाब दे रहे थे। इसी बीच, सम्राट चौधरी को लेकर पूछे गए सवाल पर सीएम नीतीश कुमार भड़क गए। सीएम ने कहा कि आप लोग जिसका नाम ले रहे हैं, उसका कोई मतलब नहीं है। उसके बाप को इज्जत किसने दी। हमने दी। उसे कम उम्र में विधायक-मंत्री कौन बनाया?

सम्राट चौधरी के लिए सीएम ने क्या कहा?

इसके बाद नीतीश कुमार ने उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव की ओर इशारा करते हुए कहा कि लालू प्रसाद यादव ने उसको विधायक-मंत्री बनाया। सम्राट चौधरी लालू को छोड़कर मेरे पास आया। इसके बाद भाजपा में गया। उसकी खुद की कोई पार्टी नहीं है। कोई मतलब नहीं है फिर आप लोग उसकी बात क्यों करते हैं। वो अंड-बंड बोलता है। जिसका कोई सिर-पैर नहीं है।

सदन में रखेंगे हर जाति और परिवार का विवरण

जातीय गणना पर बोलते हुए सीएम ने कहा, "आप देख रहे हैं कि अन्य राज्यों में इसकी चर्चा हो रही है। हम लोगों ने जो भी किया, वह सभा नौ पार्टियों की बैठक कर सबको बता दिया गया।' उन्होंने कहा कि एक बार विधनसभा सत्र शुरू होने दीजिए, हम जातीय गणना और आर्थिक सर्वेक्षण को लेकर हर जाति व हर परिवार का विवरण सदन में सबके सामने रखेंगे।

नीतीश बोले- मैं उनके किसी बयान को नहीं देखता

बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के क्षेत्रीय पार्टियों को खत्म करने के बयान पर कहा, "क्या वे (भाजपा) लोग सरकार के पैसे का सदुपयोग कर रहे हैं? मीडिया को उन्होंने अपने कब्जे में कर लिया है। वे लोग गलत प्रचार कर रहे हैं। उसका कोई मूल्य नहीं है। मैं उन लोगों के किसी बयान को नहीं देखता हूं।" सीएम ने कहा कि अगले चुनाव में भाजपा से मुक्ति मिलने पर देश बहुत आगे बढ़ेगा। फिलहाल, उन पर कुछ नहीं कहना चाहता।

अनंतनाग में सड़क हादसा, डॉक्टर की मौत, सात अन्य लोग घायल

श्रीनगर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले में सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में एक आयुर्वेदिक डॉक्टर की मौत हो गई, जबकि सात अन्य लोग घायल हो गए है। घायलों को इलाज के नजदीकी अस्पताल ले जाया गया है। इनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। जानकारी के अनुसार, अनंतनाग में दीसू से वेलू क्षेत्र की ओर जा रही टाटा सूमो अनियंत्रित होकर पुल से नीचे जा गिरी। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने मृतक की पहचान कोकेरनाग निवासी मुश्ताक अहमद शापू के रूप में की है, जो एक आयुर्वेदिक डॉक्टर था। वहीं, पुलिस ने मामला दर्ज कर आगामी शुरू कर दी है।

कांग्रेस में अंग्रेजों के जीन, वह फूट डालो और राज करो की नीति अपना रही, मध्य प्रदेश बीजेपी चीफ का बड़ा हमला

भोपाल, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी की मध्य प्रदेश इकाई के प्रमुख वीडी शर्मा ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि पार्टी अब भी अंग्रेजों के वंशाणु (जीन) लेकर चल रही है और "फूट डालो और राज करो" की नीति लागू कर रही है। शर्मा कल शहडोल जिले के ब्यौहारी में दिए गए राहुल गांधी के भाषण पर प्रतिक्रिया दे रहे थे, जिसमें कांग्रेस नेता ने दावा किया था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आदिवासियों को वनवासी कहते थे, लेकिन उन्होंने (गांधी) प्रधानमंत्री को आदिवासी'' शब्द का उपयोग करने के लिए मजबूर किया है। राहुल गांधी ने 'वनवासी' शब्द के इस्तेमाल के पीछे की 'मंशा' पर सवाल उठाया था। इसका जिक्र करते हुए शर्मा ने कहा, राहुल गांधी ने अपने भाषण में कहा कि वनवासी आदिवासियों से अलग हैं। उन्होंने कहा कि वनवासी बाहरी हैं। प्रदेश भाजपा प्रमुख ने कहा, ''कांग्रेस में अंग्रेजों के जीन हैं। वे फूट डालो और शासन करो में विश्वास करते हैं। वह (गांधी) कम से कम आदिवासी प्रतीकों, उन लोगों का नाम ले सकते थे जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन लगा दिया। उन्होंने कहा, आजादी के इतने सालों के बाद आखिरकार तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आदिवासियों के लिए एक अलग मंत्रालय बनाया। प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि भारत के राष्ट्रपति ने मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार के पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम को अधिसूचित किया था, जिसका उद्देश्य आदिवासियों को सशक्त बनाना था। उसी क्षेत्र में आयोजित एक समारोह के दौरान जहां राहुल गांधी ने एक सभा को संबोधित किया है। शर्मा ने कहा कि कांग्रेस केवल लोगों को बांटने का काम कर रही है। उन्होंने कहा, मध्य प्रदेश की जनता कांग्रेस से अंग्रेजों के इस जीन को खत्म कर देगी। वहीं इंदौर में पत्रकारों से बात करते हुए, भाजपा के राज्यसभा सांसद और पार्टी की राज्य इकाई के प्रवक्ता सुमेर सिंह सोलंकी, जो एक आदिवासी भी हैं, ने कहा, राहुल गांधी आदिवासी, जनजाति या वनवासी जैसे शब्दों में अंतर करके लोगों को गुमराह कर रहे हैं। अंग्रेजों की विचारधारा आपकी मानसिकता में है और आप अपनी पार्टी (कांग्रेस) के चरित्र के अनुरूप आदिवासियों को भ्रमित कर उनमें फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं।''

स्वतंत्र वार्ता
गुरुवार, 12 अक्टूबर - 2023

भ्रष्टाचार पर ईमानदार नियंत्रण की आवश्यकता

नरेंद्र तिवारी

भारत की एक बड़ी आबादी कठिन परिश्रम से दो वक्त की रोटी की जुगाड़ करती है। सुबह से शाम तक कड़ा शारारिक परिश्रम कर अपने परिवार को पालने हेतु राशि जुटा पाती है। इसके विपरीत सरकारी और राजनीतिक क्षेत्र में हम देखते है कि जनता की सेवा के नाम पर नेताओं और अफसरों का गठजोड़ अनियमितता और भष्ट्राचार से करोड़ो रु कमाता है। नेता और अफसरों के इस गठजोड़ की काली कमाई महानगरों में बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतों के रूप में नजर आती है। महानगरों की सड़कों पर दौड़ती चमचमाती हुई कारो में सोने के आभूषणों से लदी मैम साहबो का रईसी ठाठबाट सरकारी और राजनतिक गठजोड़ से कमाई ब्लैक मनी का ही प्रदर्शन है। भारत मे आर्थिक असमानता का यह दृश्य देश के मेहनतकश आम नागरिक को खलता है, इस आमनागरिक को काली कमाई से दिखाई जाने वाली शान-औ-शौकत में जनता का शोषण नजर आता है। आम नागरिक के विकास, हक और तरक्की का करोड़ो रु भष्ट्राचार की भेंट चढ़ जाता है। भारत मे आर्थिक असमानता की खाई बहुत गहरी है। विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के आकड़ो के अनुसार भारत मे 1 प्रतिशत सर्वाधिक अमीर लोगो के पास 2021 में कुल राष्ट्रीय आय का 22 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि शीर्ष 10 प्रतिशत लोग राष्ट्रीय आय के 57 प्रतिशत भाग पर काबिज थे। हमारे देश की आधी आबादी सिर्फ 13.1 फीसदी कमाती है। इस असमानता का सबसे बड़ा कारण भष्ट्राचार को ही माना जाता है। भष्ट्राचार देश की तरक्की के लिए नासूर बन गया है। इन हालातों में भष्ट्र आचरण के खिलाफ निष्पक्ष और निर्विवाद कदमों की आवश्यकता है, आजादी के बाद से अब तक देश के हुक्मरानों ने भष्ट्राचार को खत्म करने की सौगन्ध तो खूब खाई, किंतु भष्ट्र आचरण सरकारी और राजनीतिक तंत्र की कार्यप्रणाली का हिस्सा बन चुका है। भष्ट्र आचरण कम होने के बजाय बढ़ता ही जा रहा है। इसी के साथ बढ़ती जा रही है आर्थिक असमानता की खाई जो आमजन के मन मे समानता की कोशिशों के लिए शंका पैदा करती है। संविधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार की पालना तब ही सम्भव है, जब हमारी व्यवस्था की जड़ो में गहरे पैठ बना चुके भष्ट्राचार को सख्ती से समाप्त नहीं किया जाता है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा 2022 में जारी भष्ट्राचार सूचकांक में 180 देशों में भारत 40 अंकों के साथ 85 वे स्थान पर बरकरार है। इंडियन करप्शन सर्वे 2019 की रिपोर्ट में भारत के क्रमशः भष्ट्र राज्य बताए गए है। जिनमे राजस्थान, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, कर्नाटक एव तमिलनाडु शामिल है। भष्ट्राचार के मामले में सर्वे कितने विश्वनीय औऱ सच के करीब है, यह कहा नहीं जा सकता है। किंतु यह भष्ट्राचार भारत के सभी राज्यो में कम-ज्यादा रूप से फैला हुआ है। मध्यप्रदेश में भष्ट्राचार की चर्चा जब आती है तो आईएएस दम्पति अरविंद जोशी और टीनू जोशी का जिक्र जरूर होता है। वर्ष 2011 में जब इस दम्पत्ति के यहां आयकर विभाग की रेड हुई तो भष्ट्राचार का ख़ौफ़नाक सच जाहिर हुआ। इस कपल से जप्त नामी और बेनामी संपत्ति का आकलन 360 करोड़ रु किया था, याने इस आईएएस दम्पत्ति द्वारा अपनी जॉइनिंग वर्ष 1979 से ही 12 करोड़ रु सालाना कमाई की जा रही थी। आईएएस दम्पप्ति का यह उदाहरण अफसरों में व्याप्त लालची प्रवृत्ति का उदाहरण है। इस क्रम में एमपी का व्यापम घोटाला भी सरकारी तंत्र और नेताओं के गठजोड़ की बेशर्म वास्तविकता है। हमारे सिस्टम में रच-बस गया भष्ट्राचार रूपी दानव देश के विकास में बाधक बन रहा है। वहीं नागरिक समाज मे सरकारी तंत्र के प्रति अविश्वास का कारण भी बन चुका है। हमारे तंत्र में ग्राम पंचायत से लगाकर बड़े-बड़े शासकीय कार्यालयों में व्याप्त लालफीताशाही बिना अवैध कमाई किये कोई कार्य नहीं करती। इस भष्ट्राचार की जड़ में हमारा राजनीतिक सिस्टम भी बराबरी का सहभागी है। राजनीति के इस मैदान में बिना धन के नहीं उतरा जा सकता है।

सिद्धांत मूल्य नैतिकता अब पुराने जमाने के शब्द हो गए है। महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, गुलजारीलाल नंदा, अटलबिहारी वाजपेयी, कुशाभाऊ ठाकरे जैसे चरित्र अब राजनीतिक सिस्टम से बनना बन्द हो चुके है। ईमानदार चरित्रों का राजनीति में हस्तक्षेप लगभग खत्म हो चुका है। राजनीतिक मंचो से भष्ट्राचार पर सख्ती बनावटी, दिखावटी अधिक लगती है। पूंजीवादी राजनीति के दौर में मूल्यों की राजनीति का स्थान नगण्य हो गया है। यही कारण है की सीबीआई, ईडी जैसी एजेंसियों की कार्यप्रणाली चर्चा का केंद्र बनी हुई है। इन एजेंसियों पर पूर्व में भी सरकारी कठपुतली के आरोप लग चुके है, किंतु क्या पुरानी गलतियों को दोहराने के बजाय उन्हें सुधारा नहीं जाना चाहिए। इन एजेंसियों का सरकार को ईमानदारी से उपयोग करना चाहिए। सरकार की एजेंसियों पर विपक्षी नेताओं के सवाल बिना कारण नहीं है। इन सवालों के पीछे ऐसे राजनैतिक घटनाक्रम और चेहरे है जो शंका के घेरे में है। जिनपर भष्ट्राचार के आरोप लगे किंतु जब इन चेहरों ने अपनी निष्ठाओं को बदला तो जैसे यह वाशिंग मशीन धूल कर पाक-साफ हो गए। सरकार की निष्पक्षता पर सवाल उठाते चेहरों में महाराष्ट्र राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार शामिल है। वें जब शिवसेना के साथ सरकार में शामिल थे तब उनपर भष्ट्राचार के आरोप केंद्र के सत्ताधारी दल द्वारा लगाए जा रहे थे, वे महाराष्ट्र की भाजपा के सहयोग से चलने वाली सरकार में शामिल हो गए तब उन पर सत्ताधारी दल ने आरोप लगाने बन्द कर दिए। शायद सत्ता में भागीदारी जांच से बचाने का परिणाम मॉनी जा रही है। महाराष्ट्र की राजनीति में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, नारायण राणे जैसे नेताओं ने भाजपा का सहयोग किया तो उनके सब पाप धुल गए। कर्नाटक के पूर्व सीएम बीएस येदीउरप्पा पर रिश्वत के आरोप के लिए न्यायालय ने एफआईआर के निर्देश दिए, किंतु केंद्र सरकार की किसी एजेंसी ने बीएस के खिलाफ कोई कार्यवाहीं नहीं की ऐसे बहुत से उदाहरण है। एमपी में भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जब कांग्रेस में थे तब भाजपा उन पर जमीन घोटाले का आरोप लगाती थी। जब से वह भाजपा में शामिल हुए आरोप तो दूर केंद्र की भाजपा सरकार में मंत्री बनाकर सम्मानित किया जा रहा है। ऐसी ही कुछ कहानी असम के मुख्यमंत्री हिम्मत विश्व शर्मा की है। जब वे कांग्रेस में थे भष्ट्र कहे जाते थे, भाजपा में शामिल होकर गंगा नहा लिए, अब विपक्ष उनपर कोरोना काल मे किट एवं शारदा घोटाले में शामिल होने का आरोप लगा रहा है, वें असम के मुख्यमंत्री के पद को सुशोभित कर रहे है। वैसे राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप लगाए जाते रहे है, राजनीतिक आरोप लगाने मात्र से किसी नेता को भष्ट्र कहना भी गलत है। इस दौर की राजनीति में जब ईमानदार नेताओं की कमी महसूस की जा रही है, बिना अवैध धन के उपयोग के बिना चुनावो में भाग लेना और विजय पाना आसान नजर नहीं आता तब सत्ताधारी दल का इससे बचे रहना सम्भव नहीं है। विपक्षी नेताओं का यह आरोप भी है कि सरकार अपने नेताओं, मंत्रियों के भष्ट्राचार को छुपाती है। इन सबके बीच जिन पर भी आरोप लगे उसकी सच्चाई का पता लगाकर एजेंसियों ने निष्पक्षता से कार्यवाहीं करनी चाहिए। देशप्रेम और राष्ट्रवाद की बात करना आसान है किंतु ईमानदार चरित्रों का निर्माण करना कठिन है। ईमानदार चरित्र ही भारत की इस सबसे बड़ी और गम्भीर समस्या का समाधान ढूढ़ सकते है। सरकारी एजेंसियों को एकसमान रूप से भष्ट्राचार से जुड़े विषयो पर कार्यवाही करना चाहिए। आमजनता में सरकारी तंत्र के प्रति विश्वास पैदा करने के लिए ऊपरी स्तर से ईमानदार कोशिशों का किया जाना बेहद जरूरी है।

मानवता के विरुद्ध

इजराइल पर जिस तरह से शनिवार को तडके हमास ने अचानक हमला किया है उसका खामियाजा अब उसे भुगतना पड रहा है। ऐसे में भारत ने भी इजराइल का समर्थन कर अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। पीएम नरेंद्र मोदी ने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से फोन पर बात कर उन्हें आश्वस्त किया कि भारत उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। भारत का यह रुख सिर्फ इसलिए नहीं है कि इजराइल से उसके रिश्ते काफी मजबूत और गहरे हैं, बल्कि इस समय भारत ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि वह दुनिया में कहीं भी और किसी भी प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ है। बता दें कि जब से दोनों देशों ने हाथ मिलाया है तब से उनके व्यापारिक संबंध लगातार प्रगाढ़ होते गए हैं। सारी दुनिया जानती है कि हमास एक आतंकवादी संगठन है और जिस तरह उसने इजराइल पर हमला किया और कई सौ लोगों को मार डाला, वह मानवता के विरुद्ध उठाया गया कदम है। हालांकि इजराइल ने हमास के इस हमले को युद्ध कहा और उस पर पलटवार करते हुए पूरे गाजा क्षेत्र पर बमबारी कर पूरी तरह से घेराबंदी कर दी है। बुधवार तक हुए इजराइली हमले में हमास के कई ठिकाने ध्वस्त हो गए हैं और 2150 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इसमें हमास के मिलिट्री कमांडर के घर पर हुए हमले में उसके भाई के भी मौत की खबर है। ऊपर से अमेरिका ने भी इजराइल की मदद में गोला बारूद की खेप भेज दी है। इजराइल ने हमास को नेस्तनाबूद करने का संकल्प दोहराया है। इस हमले के बाद दुनिया भर से अलग-अलग प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। इस्लामी देशों के लामबंद होने और इजराइल के खिलाफ बड़े युद्ध की आशंका भी जताई जा रही है। इस युद्ध के बाद दुनिया फिर से दो ध्रुवों में बंटती नजर आ रही है। ताजा हालात में दुनिया के तमाम देशों की प्राथमिकताएं अब बदल रही हैं और वे सुरक्षा से अधिक अपने व्यापारिक रिश्तों को अहमियत दे रहे हैं। इसलिए माना जा रहा है कि फिलिस्तीन के समर्थन और इजराइल के विरोध में कोई बड़ी लामबंदी होने की गुंजाइश नहीं है। फिरभी हमास को ईरान की शह मिली हुई है, इसलिए उसके इजराइल के खिलाफ मैदान में उतरने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। आज वैश्विक मंच पर कोई ऐसा देश नहीं है, जो इस तरह हमास जैसे आतंकी संगठन के पक्ष में उतरना चाहेगा। इजराइल की दुश्मनी फिलिस्तीन से है, क्योंकि फिलिस्तीन मानता है कि उसके हिस्से की जमीन इजराइल ने हथिया रखी है। इसे संयुक्त राष्ट्र के मंच पर भी सुलझाने का प्रयास किया गया, लेकिन इजराइल अपनी जिद पर अडा रहा। कोई भी लोकतांत्रिक देश इस तरह किसी देश के भूभाग पर कब्जा करने के प्रयासों को उचित नहीं ठहरा सकता। इसीलिए भारत भी शुरू से फिलिस्तीन का पक्षधर रहा है। देखा जाए तो वह अब भी इजराइल के साथ जरूर है, लेकिन फिलिस्तीन के हक के खिलाफ नहीं है। हालांकि प्रधानमंत्री के इजराइल के साथ खड़े होने की घोषणा पर विपक्षी दलों की प्रतिक्रिया कुछ इस तरह आ रही है, जैसे भारत फिलिस्तीन के विरोध में खड़ा हो रहा हो। बता दें कि दुनिया के अनेक देश आतंकवाद का निशाना झेल चुके हैं। अमेरिका, फ्रांस और भारत काफी बड़ा नुकसान उठा चुके हैं। भारत की बहुत सारी पूंजी और ऊर्जा इससे निपटने में खर्च होती है। अमेरिका की जुड़वां मीनारों पर हुए आतंकी हमले के बाद जब दुनिया भर के देश आतंकवाद के खिलाफ युद्ध को वचनबद्ध हुए थे, तब भारत भी उनमें अग्रणी था। इसलिए वह कहीं भी हुए आतंकी हमले के विरोध में खड़ा दिखाई देता है। वह इजराइल और फिलिस्तीन के झगड़े को बातचीत के आधार पर निपटाने का पक्षधर है। हमास जैसे आतंकी संगठनों को प्रश्रय देने के पक्ष में वह कदापि नहीं हो सकता। अपने इस कड़े रुख से भारत ने पाकिस्तान और चीन को भी संदेश दिया है कि उन्हें चरमपंथ पर दोहरा रवैया छोड़ कर स्पष्ट रूप से इसके विरोध में खड़ा होना चाहिए।

शामत-ए-इंजीनियर

डॉ. सुरेश मिश्रा

हाल ही में मुझे जयपुर से चेन्नै जाना पड़ा। बगल वाली सीट पर जो युवक बैठा था, वह मूलतः चेन्नै का था। बातें शुरु हुईं। आरंभिक झिझक के बाद दोनों खुल गए। वह मुझसे ज्यादा बतक्कड़ था। वह अपनी बताने लगा और मैं सुनने लगा। उसने अपने बारे में क्या बताया उसी की जुबानी सुनते हैं –

मेरा नाम सेल्वन है। मैं चेन्नै से हूँ। क्षमा करें चेन्नै से नहीं जबरन इंजीनियर बनाने वालों की धरती से हूँ। यहाँ चाहे लड़का पैदा हो या लड़की उनमें गुण बाद में ढूँढ़ते हैं इंजीनियरी पहले। इस शहर के चप्पे-चप्पे में इंजीनियरी दिखाई देती है। यहाँ तक कि पान लगाने वाला पान पर चूना लगाने को भी इंजीनियरी मानता है और दूध वाला उसमें पानी मिलाने को। ऐसा नहीं है कि देश में इंजीनियर नहीं हैं। हैं लेकिन मेरे परिवार को देखने के बाद मुझे सबसे ज्यादा इंजीनियर यहीं दिखाई देते हैं। हमारे पिता की हम तीन संतानें हैं। पिता इंजीनियर हैं और हम तीनों को कैरियर का केवल एक विकल्प मिला 'इंजीनियर'। इस मामले में मेरे पड़ोस में रहने वाला मित्र बड़ा भाग्यशाली निकला। उसे तीन विकल्प मिले – इलेक्ट्रिनक इंजीनियरिंग, मेकानिकल इंजीनियरिंग और कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग। शहर में इतने इंजीनियर हैं कि मक्खियों की संख्या इनके सामने कम पड़ जाती हैं। भिनभिनाते दोनों हैं - एक गुड़ पर तो दूजे प्लेसमेंट पर। बदकिस्मती से यहाँ गुड़ कोई इस्तेमाल करता नहीं और प्लेसमेंट मिलता नहीं। दोनों की किस्मत खराब है।

भीड़ बढ़ जाए तो दही और इंजीनियरिंग में कोई अंतर नहीं रह जाता है। एक छाछ तो दूजा टाइमपास करने का अड्डा बन जाता है। इंजीनियरिंग के इतने सारे कॉलेज खुल गए हैं कि सड़क पर निकम्मा घूम रहे लोगों को भी उसमें दाखिला मिल जाए तब भी सीटें बची की बची रह जाती हैं। ऐरे-गैरे कॉलेजों में इस कोर्स को करने से अच्छा किसी भीड़-भाड़ वाले नुक्कड़ पर पकौड़े तलना है। कम से कम पकौड़े तलने की कला के साथ चार पैसे तो कमा लेंगे। हाँ आईआईटी में इंजीनियरी करने वाले हमसे एक कदम आगे होते हैं। कम से कम उनके पास शनिवार की शाम को क्या करना है, उसका विकल्प तो होता है। आईआईटी में पढ़ने वाला गूगल सीईओ बन जाता है और हम उसी गूगल में प्लेसमेंट की तलाश में सिर खपाते हैं।

ऐसा नहीं है कि मल्टी नेशनल कंपनियाँ हमारे पास नहीं आती। आती हैं। भेड़ों की भीड़ में से कंपनी के सुर में मिमियाने वालों को चुन ले जाती हैं। फिर जावा, सी, सी प्लस प्लस, ओराकल, बटर स्कॉच, वनीला, स्ट्रॉबेरी सब कुछ सिखाती हैं। दुर्भाग्य से वहाँ एक्सेल शीट पर काम करना पड़ता है। पढ़ा कुछ, सीखा कुछ और कर रहे हैं कुछ। शायद इसी को इंजीनियरी कहते हैं। यह सब इसलिए बता पा रहा हूँ क्योंकि मैं सॉफ्टवेयर इंजीनियर हूँ। मैं पहले कॉग्निजेंट अब सीटीएस ऑफिस में काम करता हूँ। मेरी माँ सबको यही बताती है। लेकिन मैं लोगों को कैसे बताऊँ कि मैं सीटीएस में नहीं एमएस ऑफिस में काम करता हूँ। उसमें भी केवल एमएम वर्ड और एमएस एक्सेल। जबकि एचआर एमएस पॉवर पाइंट में काम करते हैं। वे हमेशा चार स्लाइड बनाते हैं जिनमें तीन स्लाइड – वेलकम, एजेंडा, थैक्यू के होते हैं। चौथा रिगार्ड का होता है।

लोहिया को परखने में दिनकर का नजरिया

विनोद कोचर

प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं कि जिस लोहिया से मेरी मुलाकात सन 1934 ई.को, पटना में हुई थी और जो लोहिया 1963में संसद में आये, उन दोनों के बीच भेद था ।सन चौतीस वाला लोहिया,युवक होता हुआ भी विनयी और सुशील था, किन्तु संसद में आनेवाले प्रौढ़ लोहिया के भीतर मुझे क्रांति के स्फुलिंग दिखाई देते थे । राजनैतिक जीवन के अनुभवों ने उन्हें कठोर बना दिया था और बुढ़ापे के समीप पहुंचकर वे उग्रवादी बन गए थे । उनका विचार बन गया था कि जवाहरलाल नेहरू से बढ़कर इस देश का अहित और किसी ने नहीं किया है तथा जबतक देश में कांग्रेस का राज है, तबतक देश की हालत बिगड़ती ही जाएगी । अतएव उन्होंने अपनी राह बड़ी निर्दयता से तैयार कर ली थी और वह सीधी राह यह थी की जवाहरलाल का जितना ही विरोध किया जाये, वह कम है और कांग्रेस को उखाड़ने के लिए जो भी रास्ते दिखाई पड़ें,उन्हें ज़रूर अजमाना चाहिए ।

स्वराज्य होने पर भी लोहिया जी को कई बार जेल जाना पड़ा । एक बार वे उस जेल में कैद किये गए थे, जिसमें कभी जवाहरलाल को काफी दिनों तक कैद रहना पड़ा था । उस जेल में,स्वराज्य के बाद जवाहरलाल की एक मूर्ति स्थापित की गयी थी । जेल से छूटने पर लोहिया जी के मित्रों ने उनसे पूछा,'कहिये इस बार का कारावास कैसा रहा ?' लोहिया जी ने कहा,'कुछ मत पूछो ! मैं जिस कोठरी में कैद था, उसी के सामने जवाहरलाल जी की मूर्ति खड़ी थी और हर वक़्त मेरी नज़र उसी मूर्ति पर पद जाती थी । जल्दी रिहाई हो गयी नहीं तो उस मूर्ति को देखते-देखते मैं पागल हो जाता ।' वाणी,व्यवहार और कार्यक्रमों में इतनी कठोरता बरतने के बावजूद लोहिया साहब मानते थे कि वे गाँधी जी की ही राह पर चल रहे हैं। बल्कि वे मानते थे कि वे गाँधी जी के सबसे बड़े अनुयायी हैं । राजनीति की अन्य बातों में उनका यह विश्वास कहाँ तक सही माना जा सकता था यह विषय चिंत्य है, मगर यह ठीक है कि देश में छाई हुई गरीबी को देखकर उनके हृदय में क्रोध भभकता रहता था और अंग्रेज़ी को वे एक क्षण भी बर्दाश्त करने को तैयार नहीं थे। जब से लोहिया साहब संसद के सदस्य हुए, संसद में हिंदी के सबसे बड़े प्रवक्ता भी वे ही हो गए थे । उन्होंने संसद में अपने सारे भाषण हिंदी में दिए और राजनीति की पेचीदा से पेचीदा बातों का उल्लेख उन्होंने हिंदी में ही किया । उनकी विशेषता यह थी कि भारी से भारी विषयों पर भी वे बहुत सरल हिंदी में बोलते थे । जहां तक मुझे याद है वे सेना और फौज के बदले 'पलटन' कहना ज्यादा पसंद करते थे । दिल्ली में हिंदी के विरोधी तरह-तरह के लोग हैं, मगर लोहिया साहब के भाषणों से उन सभी विरोधियों का यह भ्रम दूर हो गया था कि हिंदी केवल कठिन ही हो सकती है और अंग्रेजी का सहारा लिए बिना हिंदी में पेचीदा बातों का बखान नहीं किया जा सकता ।मेरा ख्याल है, हम सभी हिंदी प्रेमियों ने संसद में हिंदी की जितनी सेवा बारह वर्षों में की थी,उतनी सेवा लोहिया साहब ने कुछ ही बरसों में कर दी ।संसद में आते ही विरोधी नेता के रूप में लोहिया साहब ने जो अप्रतिम निर्भीकता दिखाई थी, उसकी बड़ाई, खानगी तौर पर कोंग्रेसी सदस्य भी करते थे और उस निर्भीकता के कारण लोहिया साहब पर मेरी भी बड़ी गहरी भक्ति थी । सन 1962 के अक्टूबर में चीनी आक्रमण से पूर्व, मैंने 'एनार्की' नामक जो व्यंग्य काव्य लिखा था उसमें ये पंक्तियाँ आती हैं :-

'तब कहो लोहिया महान है, एक ही तो वीर यहाँ सीना रहा तान है ।'

ये दो पंक्तियाँ लोहिया साहब को बहुत पसंद थी, गर्चे कभी कभी वे पूछते थे कि 'ये पंक्तियां क्या व्यंग्य में लिखी हैं?' मैं कहता, 'वैसे तो पूरी कविता ही व्यंग्य की कविता है मगर व्यंग्य होने पर भी आपके सीना तानने की तो बड़ाई होती है ।' एक दिन मज़ाक मज़ाक में उन्होंने यह भी कहा था की 'महाकवि ये छिटपुट पंक्तियाँ काफी नहीं हैं । तुम्हें मुझपर कोई वैसी कविता लिखनी चाहिए जैसी तुमने मेरे दोस्त जयप्रकाश जी पर लिखी थी ।' मैंने भी हंसी हंसी में ही जवाब दिया था, 'जिस दिन आप मुझे उस तरह प्रेरित कर देंगे जिस तरह मैं जयप्रकाश जी से प्रेरित हुआ था, उस दिन कविता आप से आप निकल पड़ेगी ।' लोहिया साहब जितने अच्छे वक्ता थे, उससे अधिक बड़े चिन्तक थे मगर उनकी चिंतन पद्धति का साथ देना अक्सर कठिन होता था क्योंकि उनके तर्क निर्मोही और विकराल होते थे । कभी-कभी ऐसा भी लगता था कि जिस शत्रु पर वे बाण चला रहे हैं वह वास्तविक कम काल्पनिक अधिक है । लोहिया साहब जब आखरी बार अमेरिका गए थे. उन्हें लेखकों ने कुछ किताबें भेंट की थीं । जब वे देश लौटे और मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने उनमें से दो किताबें मुझे उपहार के तौर पर दीं । उनमें से एक किताब कविता की है और उसकी कवियत्री हैं रुथ स्टीफन । रुथ स्टीफन ने यह पुस्तक लोहिया साहब को इस अभिलेख के साथ भेंट की थी- 'फॉर राम,हु रिप्स शेडोस इनटू रैंग्स।' अमरीका में लोहिया साहब ने एक ऐसा भी बयान दिया था जिसका मकसद अमरीकी सभ्यता के खोखलेपन पर प्रहार था । जबसे नवीन जी गुज़र गए,संसद का केन्द्रीय हाल मेरे लिए सूना हो गया । मगर जब लोहिया सदस्य बन संसद में आये मैं सेन्ट्रल हाल की ओर फिर से जाने लगा क्योंकि लोहिया साहब के साथ बातें करने में मुझे ताजगी महसूस होती थी और मज़ा आता था । वे अक्सर मुझसे पूछते थे, ' यह कैसी बात है कि कविता में तो तुम क्रान्तिकारी हो मगर संसद में कोंग्रेस सदस्य ?' इसका जो जवाब मैं दिया करता था उसका निचोड़ मेरी 'दिनचर्या' नामक कविता में इस तरह दर्ज हैः-

तब भी माँ की कृपा, मित्र अब भी अनेक छाये हैं,
बड़ी बात तो यह कि लोहिया संसद में आये हैं ।
मुझे पूछते हैं,'दिनकर ! कविता में जो लिखते हो
वह है सत्य या कि वह जो तुम संसद में दिखते हो ?'
मैं कहता हूँ,'मित्र सत्य का मैं भी अन्वेषी हूँ,
सोशलिस्ट ही हूँ लेकिन कुछ अधिक जरा देशी हूँ ।बिलकुल गलत कम्यून, सही स्वाधीन व्यक्ति का घर है,उपयोगी विज्ञान मगर मालिक सबका ईश्वर है ।'इस कविता में एक जगह गरीबी की थोड़ी प्रशंसा सी हैः-'बेलगाम यदि रहा भोग,निश्चय संहार मचेगा, मात्र गरीबी छाप सभ्यता से संसार बचेगा ।'

यह बात लोहिया जी को बिलकुल पसंद नहीं थी। वे निश्छल आदर्शवादी थे और गरीबी के साथ किसी भी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं थे । ईश्वर का खंडन तो उन्होंने मेरे समक्ष कभी नहीं किया मगर भाग्यवाद या नियतिवाद के वे प्रबल विरोधी थे। बातचीत के प्रसंग में, एक दिन मैंने उनसे कहा था कि 'काम और युवा की जिस समस्या से नयी सभ्यता उलझ रही है उसका ज्ञान प्राचीनों को भी था । जिस मनुष्य के अस्तित्व से समाज का गौरव बढ़ता है, लोगों को ऊँचा उठने की प्रेरणा मिलती है,उसके साधनों के प्रति प्राचीन सभ्यता भी उदार थी । और नहीं तो पञ्च कन्यायें पूजनीया कैसे मान ली गयीं ?' और अगर क्षुधा की बात लीजिये तो गांधारी ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा था-

वासुदेव, जरा कष्टं, कष्टं निर्धन जीवनम
पुत्र शोक महाकष्टं कष्टातिकष्टं क्षुधा ।

लोहिया साहब ने उसी समय इस श्लोक को कंठस्थ कर लिया और कई दिन बाद भेंट होने पर उन्होंने यह श्लोक मुझे सुनाया । पिटे पिटाये रास्ते से अलग, डॉ. लोहिया साहसी लेखक हैं । वे बहुत प्रतिभाशाली हैं । और उनमें कहीं भी अभिमान छू तक नहीं गया । उनमें वह सनकीपन भी नहीं जो प्रायः विद्वानों में देखा जाता है । विद्रोही लोहिया मानवीय मूल्यों के प्रति बहुत आश्वस्त हैं । कांग्रेस के सदस्य के नाते,मैं कह सकता हूं कि अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बहुत तीव्र है । उनकी कार्यशैली प्रतिरोध की शैली है । गांधीजी को राममनोहर लोहिया पर पिता जैसा गर्व था ।

चुनाव में कहां किसका पलड़ा भारी

पांच राज्यों– राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम- में विधानसभा चुनाव की तारीखों का एलान हो चुका है। इन सभी राज्यों में नई सरकार के गठन के लिए तो ये चुनाव महत्वपूर्ण हैं ही, लेकिन बात अगर राष्ट्रीय राजनीति की करें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ पर खास फोकस रहेगा।

इन तीनों राज्यों को ज्यादा अहमियत मिलने के पीछे कई वजहें हैं। यहां मुख्य मुकाबला बीजेपी और कांग्रेस के बीच होने वाला है। अपने-अपने गठबंधनों के साथ ये दोनों ही दल अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में केंद्र में सत्ता के दावेदार भी हैं। 2018 विधानसभा चुनावों में इन तीनों राज्यों में कांग्रेस ने बीजेपी के हाथ से सत्ता छीनी थी। हालांकि स्पष्ट बहुमत उसे सिर्फ छत्तीसगढ़ में मिला था, जहां 15 साल से सत्तारूढ़ बीजेपी मात्र 15 सीटों पर सिमट गई थी। राजस्थान में सचिन पायलट के बागी तेवर के बावजूद अशोक गहलोत पांच साल सरकार चलाने की जादूगरी दिखा गए, लेकिन मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया की बगावत के चलते कमलनाथ सत्ता गंवा बैठे।

इन तीनों राज्यों में 2018 के आखिर में हुए विधानसभा चुनाव में जनादेश कांग्रेस के पक्ष में गया था, लेकिन इसके कुछ ही महीनों बाद अप्रैल-मई, 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में यहां के वोटरों ने बीजेपी के पक्ष में उससे भी अधिक स्पष्ट जनादेश दिया।

खैर, इन पांच राज्यों में चुनाव नया विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' बनने और बीजेपी द्वारा बीजेपी को सक्रिय करने के बाद होने जा रहे हैं। इनमें से तीन बड़े राज्यों में मुख्य मुकाबला दोनों बड़े राष्ट्रीय दलों के बीच ही होगा। बेशक गुजरात विधानसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद आप को भी राष्ट्रीय दल का दर्जा मिल गया है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में महत्वाकांक्षी आप दांव लगाएगी ही, लेकिन जो सीटें अभी कांग्रेस के पास हैं, उन पर प्रत्याशी उतारने से वह विपक्षी वोटों का ही बंटबारा करेगी। इसका विपक्षी गठबंधन पर नकारात्मक असर पड़ेगा। इन राज्यों में बीएसपी का भी सीमित असर है, जिसका नुकसान कांग्रेस को ही होने की आशंका है। अब राजनीतिक समीकरणों पर नजर डालते हैं।

200 सदस्यीय राजस्थान विधानसभा में कांग्रेस के पास 100 सीटें हैं, जबकि बीजेपी के पास मात्र 73 सीटें। अन्य विधायकों की संख्या 26 है। जाहिर है, कांग्रेस के समक्ष चुनौती अपने दम पर बहुमत का आंकड़ा छूने के लिए अपनी सीटों में कुछ बढ़ोतरी करने की होगी, जबकि बीजेपी को वह आंकड़ा छूने के लिए लंबी छलांग लगानी होगी। कांग्रेस के विरुद्ध सत्ता विरोधी भावना स्वाभाविक है, लेकिन उसे कम करने के लिए गहलोत सरकार ने पिछले कुछ महीनों में जन-कल्याणकारी योजनाओं की झड़ी लगाई है। चुनाव से ऐन पहले लाई गईं ये योजनाएं कितना असर दिखाएंगी यह तो समय ही बताएगा, लेकिन गहलोत-पायलट में सुलह से कांग्रेस नेतृत्व एकजुटता का संदेश देने में सफल दिख रहा है। शर्त यह है कि टिकट वितरण में बवाल न हो। बीजेपी के लिए आंतरिक गुटबाजी बड़ी चुनौती साबित हो सकती है। दो बार की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की नाराजगी किसी से छिपी नहीं है। मान-मनौव्वल की अटकलों पर स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह कह कर पूर्ण विराम लगा दिया है कि बीजेपी किसी चेहरे पर नहीं, कमल के निशान पर चुनाव लड़ेगी। 230 सदस्यीय मध्य प्रदेश विधानसभा में कांग्रेस ने 114 सीटें जीती थीं तो बीजेपी ने 109, अन्य की संख्या सात रहीं। लेकिन सिंधिया के नेतृत्व में 22 विधायकों की बगावत ने सत्ता पलट दी।

अगर संख्या बल की दृष्टि से देखें तो वहां बीजेपी -कांग्रेस में ज्यादा नजदीकी मुकाबले की संभावना है। चुनाव पूर्व नेताओं के दलबदल ने बीजेपी की चिंताएं बढ़ाई हैं तो सत्ता विरोधी भावना कम करने के लिए केंद्रीय मंत्रियों-सांसदों को उम्मीदवार बनाने का दांव चला गया है, लेकिन इससे 18 साल के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह भी लग गया है। सिंधिया के कांग्रेस से जाने के बाद कांग्रेस में अंतर्कलह ना के बराबर है, जबकि बीजेपी में इसके बढ़ने की आशंकाएं हैं। ऐसे में राजस्थान की तरह मध्य प्रदेश में भी बीजेपी की सारी उम्मीदें पीएम मोदी से ही होंगी।

छत्तीसगढ़ में भी तीन बार मुख्यमंत्री रहे रमन सिंह को किनारे करने के बाद बीजेपी के समक्ष मोदी के नाम और चेहरे पर चुनाव लड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। छत्तीसगढ़ में 29 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं तो 20 अन्य सीटों पर भी उनकी संख्या अच्छी-खासी है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की लोकलुभावन योजनाओं और टीएस सिंहदेव से उनकी सुलह के बाद कांग्रेस सबसे ज्यादा आश्वस्त छत्तीसगढ़ में ही नजर आ रही है, लेकिन अरविंद नेताम की हमार राज पार्टी, सीपीएम और बीएसपी के साथ मिलकर चुनावी गणित को कितना प्रभावित करेगी, यह भी देखना होगा। 119 सदस्यीय विधानसभा वाले तेलंगाना में मुख्यमंत्री केसीआर तीसरे कार्यकाल के लिए जनादेश मांग रहे हैं। पिछले चुनाव में 19 सीटें जीतने वाली कांग्रेस ही उन्हें कुछ चुनौती देती नजर आई थी। बाद में बीजेपी भी सक्रिय और आक्रामक रही, लेकिन राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत टीआरएस को पीआरएस बना चुके केसीआर की सत्ता से बेदखली आसान नहीं लगती। मिजोरम की राजनीति लंबे समय तक कांग्रेस और वर्तमान सत्तारूढ़ दल मिजो नैशनल फ्रंट के बीच बंटी रही।

ये कैसा मजहब है भाई

मित्रों, पिछले दिनों दुनिया में दो तरह की प्रगति देखने को मिली है। एक तरफ हिंदुत्व ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरी दुनिया को तू वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दिया। पूरी दुनिया ने विश्व शांति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को न सिर्फ महसूस किया बल्कि हिंदुत्व द्वारा किए गये अतिथि सत्कार से अभिभूत भी दिखी।

हिंदुत्व सदियों से सह अस्तित्व की भावना का पालन करता आ रहा है और आगे भी करता रहेगा इस बात से पूरी दुनिया जी 20 की बैठक के दौरान आश्वस्त दिखी। मित्रों, दूसरी तरफ मुसलमानों ने अभी- अभी इस्राएल पर जिस तरह हमला किया है उसे देखकर पूरी मानवता का सिर शर्म से झुक गया है। अल्ला हू अकबर के नारों के साथ महिलाओं के नग्न शवों की परेड निकाली गई, 5 साल के बच्चे का सिर काट कर उसे हाथ में लेकर नृत्य किया गया, सैंकड़ों यहूदियों का अपहरण कर लिया गया, महिलाओं के साथ बर्बरता पूर्वक सामूहिक बलात्कार किए गये और वो भी सिर्फ इसलिए क्योंकि वे काफिर थे, गैर-मुसलमान थे।

मित्रों, हिंदुत्व तो सैंकड़ों सालों से इस्लाम का यह रूप देखता आ रहा है।

सिंध पर अरबों के 710 ई के आक्रमण के समय से ही भारत में करोड़ों निर्दोष हिंदुओं को मुसलमानों ने मारा, लाखों हिंदू महिलाओं को बंदी बनाया और 1-2 दीनार में मध्य पूर्व में ले जाकर बेच दिया। दुनिया को यह समझना होगा कि इस्लाम धर्म नहीं अधर्म है, मानवता के नाम पर एक कलंक है, मानवता का दुश्मन है। दुनिया को यह समझना होगा कि सारे फ़साद और सारी जिहादी क्रूरता की जड़ कुरान की उन २६ आयतो.में है जिनको पुस्तक से हटाने के लिए रिजवी साहब ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

मित्रों, अब जबकि यहूदियों ने बदले की कार्रवाई शुरू की है पूरी दुनिया के मुसलमान खुद को पीड़ित बताकर शांतिपाठ शुरू करनेवाले हैं। वो चाहते हैं कि सिर्फ गोधरा ट्रेन कांड हो उसकी प्रतिक्रिया नहीं हो, वो चाहते हैं सिर्फ हमास हिंसा करे यहूदी प्रतिहिंसा न करें। इसलिए सावधान रहें, सचेत रहें, सतर्क रहें। मुसलमानों से सावधान क्योंकि उनके पास है कुरान और वे कभी भी भारत को भी बना सकते हैं श्मशान।

सती के बलिदान की क्या है पौराणिक मान्यताएं

भारत के उत्तराखंड के मध्य में बसा एक शांत शहर कनखल, देश के आध्यात्मिक परिदृश्य में एक अद्वितीय स्थान रखता है। अपने समृद्ध इतिहास और गहरी परंपराओं के साथ, यह एक ऐसा गंतव्य है जो दुनिया के सभी कोनों से तीर्थयात्रियों और साधकों को आकर्षित करता है।

दक्ष का यज्ञ स्थल: एक प्रतिष्ठित स्थल कनखल के सबसे महत्वपूर्ण आकर्षणों में से एक पवित्र स्थल है जिसे दक्ष के यज्ञ स्थल के नाम से जाना जाता है। इस पवित्र भूमि का गहरा ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व है, जो धार्मिक भक्तों और जिज्ञासु यात्रियों दोनों को आकर्षित करता है।

पौराणिक टेपेस्ट्री का खुलासा दक्ष की कहानी हिंदू पौराणिक कथाओं में, दक्ष प्रजापति एक श्रद्धेय ऋषि और सती के पिता थे, जो बाद में भगवान शिव की पत्नी बनीं। दक्ष ने एक भव्य यज्ञ (यज्ञ अनुष्ठान) का आयोजन किया लेकिन जानबूझकर भगवान शिव को उत्सव से बाहर रखा। सती अपने पति का अपमान सहन नहीं कर सकीं और उन्होंने यज्ञ स्थल पर ही आत्मदाह कर लिया।

भगवान शिव का क्रोध सती के दुखद अंत के बारे में जानने पर, भगवान शिव दुःख और क्रोध से भस्म हो गए। उन्होंने तांडव, विनाश का दिव्य नृत्य किया और उनके क्रोध से पूरे ब्रह्मांड को नष्ट करने की धमकी दी गई। तबाही को रोकने के लिए, भगवान विष्णु ने हस्तक्षेप किया और सती के जले हुए शरीर को अपने कंधों पर लेकर भगवान शिव को शांत किया।

एक प्रतीक के रूप में यज्ञ स्थल दक्ष का यज्ञ स्थल इस प्राचीन कथा के प्रतीक के रूप में खड़ा है, एक ऐसा स्थान जहां घमंड और अहंकार को दैवीय शक्तियों द्वारा शांत किया गया था। तीर्थयात्री सती को श्रद्धांजलि देने और वैवाहिक सद्भाव और पारिवारिक कल्याण के लिए आशीर्वाद मांगने के लिए इस स्थल पर आते हैं।

एक पवित्र निवास: क्या उम्मीद करें जब आप कनखल में दक्ष के यज्ञ स्थल पर जाएंगे, तो आपका स्वागत पवित्रता और इतिहास की आभा से होगा। यहां वह है जिसे आप एक्सप्लोर कर सकते हैं:

1. यज्ञ कुण्ड

परिसर के मध्य में यज्ञ कुंड है, वही स्थान जहां दक्ष का भव्य अनुष्ठान हुआ था। ऐसा माना जाता है कि इस पवित्र अग्निकुंड की ऊर्जा आसपास के वातावरण को शुद्ध और आशीर्वाद देती रहती है।

2. दिव्य मूर्तियां

मंदिर परिसर को विभिन्न देवताओं और पौराणिक घटनाओं को दर्शाती जटिल मूर्तियों से सजाया गया है, जो कला प्रेमियों और भक्तों के लिए एक दृश्य दावत की पेशकश करता है।

3. सती का तीर्थ

सती को समर्पित मंदिर पर अपनी श्रद्धा अर्पित करें। यह श्रद्धा का स्थान है जहां तीर्थयात्री वैवाहिक आनंद और रिश्तों में चुनौतियों से उबरने की शक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

4. शांत उद्यान

दक्ष के यज्ञ स्थल के आसपास के हरे-भरे बगीचे ध्यान और आत्मनिरीक्षण के लिए एक शांतिपूर्ण माहौल प्रदान करते हैं। कई आगंतुकों को इन हरियाली के बीच सांत्वना और आध्यात्मिक कायाकल्प मिलता है।

5. त्यौहार और अनुष्ठान

दक्ष के यज्ञ स्थल पर आयोजित जीवंत त्योहारों और अनुष्ठानों को देखना एक आत्मा-विभोर करने वाला अनुभव हो सकता है। नवरात्रि और महा शिवरात्रि बहुत उत्साह और भक्ति के साथ मनाई जाती है।

6. आध्यात्मिक प्रवचन

यहां अक्सर आयोजित होने वाले आध्यात्मिक प्रवचनों और सत्संगों में शामिल हों। यह प्राचीन ज्ञान के बारे में आपकी समझ को गहरा करने का एक अवसर है।

7. निकटवर्ती आकर्षण

कनखल में आनंदमयी मां आश्रम और पतंजलि योगपीठ सहित अन्य आकर्षणों का पता लगाएं, जो शहर के आध्यात्मिक माहौल में योगदान करते हैं।

अपनी यात्रा की योजना बनाएं

दक्ष का यज्ञ स्थल पूरे वर्ष आगंतुकों के लिए खुला रहता है।

यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक ठंडे महीनों के दौरान है।

इस पवित्र स्थल की यात्रा के दौरान स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं का सम्मान करें।

निष्कर्षतः कनखल का दक्ष यज्ञ स्थल मात्र एक स्थल नहीं है; यह आध्यात्मिकता और पौराणिक कथाओं के केंद्र में एक यात्रा है। यह प्राचीन किंवदंतियों से जुड़ने और उन गहन ऊर्जाओं का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है जो यहां गूंजती रहती हैं। चाहे आप आध्यात्मिक सांत्वना, सांस्कृतिक संवर्धन, या बस एक शांतिपूर्ण विश्राम चाहते हों, हरिद्वार, उत्तराखंड में इस पवित्र स्थल की यात्रा अवश्य करें।

पितृपक्ष की अमावस्या 14 अक्टूबर को

जिनकी मृत्यु तिथि मालूम न हो, जिनका श्राद्ध करना भूल गए हैं उनके लिए अमावस्या पर करें धूप-ध्यान

शनिवार, 14 अक्टूबर को पितृपक्ष का अंतिम दिन है। इसे सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या है। पितृपक्ष की अमावस्या का महत्व काफी अधिक है, क्योंकि इस दिन जाने-अनजाने सभी पितरों के लिए श्राद्ध और धूप-ध्यान किया जाता है। जिन लोगों की मृत्यु मालूम नहीं है और इस पितृपक्ष में जिनका श्राद्ध कर्म करना भूल गए हैं, उन सभी पितरों के लिए अमावस्या पर श्राद्ध कर्म जरूर करना चाहिए।

पितृपक्ष में किए गए धूप-ध्यान से पितर देवता प्रसन्न होते हैं। माना जाता है कि जिन लोगों के पितर देवता तृप्त नहीं होते हैं, उन्हें दैनिक जीवन में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। किसी भी काम में आसानी से सफलता नहीं मिलती है। पितरों को प्रसन्न करने के लिए पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म जरूर करना चाहिए।

अमावस्या पर ऐसे कर सकते हैं धूप-ध्यान

अमावस्या की सुबह जल्दी उठें और स्नान के पूजा-पाठ करें। इसके बाद पितरों के लिए शुद्ध सात्विक खाना बनाएं। खीर-पुड़ी बना सकते हैं। जिस जगह पर धूप-ध्यान करना है, उस जगह को गोबर से लिपें।

गंगाजल का छिड़काव करें। गाय के गोबर से बने कंडे जलाएं और जब कंडे के अंगारों से धुआं निकलना बंद हो जाए, तब अंगारों पर गुड़, घी, खीर-पुड़ी अर्पित करें। पितरों का ध्यान करते रहें।

हथेली में जल लेकर अंगूठे की ओर से पितरों को चढ़ाएं।

आप चाहें तो किसी ब्राह्मण की मदद से भी धूप-ध्यान कर सकते हैं। ऐसा करने से विधिवत धूप-ध्यान कर पाएंगे। श्राद्ध कर्म के बाद ब्राह्मण को दान-दक्षिणा जरूर दें। भोजन कराएं।

अमावस्या पर करें ये शुभ काम

अमावस्या पर जरूरतमंद लोगों धन, अनाज, जूते-चप्पल, कपड़े का दान जरूर करें। हो सके तो अपने में भोजन कराएं।

गाय, कुत्ते और कौएं के लिए भी घर के बाहर खाना रखें। किसी गोशाला में गायों की देखभाल के लिए दान करें। गायों को हरी घास खिलाएं। किस नदी या तालाब में मछलियों के लिए आटे की गोलियां बनाकर डालें।

शनिवार को शनिदेव के लिए तेल का दान करें। हनुमान जी के सामने दीपक जलाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

संत तुकाराम की सीख: मृत्यु अटल है, जो लोग ये बात समझते हैं, वे हमेशा प्रसन्न और सकारात्मक रहते हैं

संत तुकाराम के उपदेश सुनने काफी लोग उनके यहां पहुंचते थे। लोग उन्हें अपनी समस्याएं बताते और तुकाराम जी उनके हल बता देते थे। एक प्रवचन के बाद एक व्यक्ति तुकाराम के पास आया और बोला कि आप इतने आनंद में और शांत कैसे रहते हैं? आपके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता रहती है। मैं भी आपकी तरह ही रहना चाहता हूं।

तुकाराम जी ने उस व्यक्ति की बातें ध्यान से सुनीं और अचानक बोले कि भाई सात दिनों के बाद तुम्हारी मृत्यु होने वाली है।

ये बात तुरंत ही उस व्यक्ति की हालत खराब हो गई। उसके में इसके लिए कोई संशय नहीं था, क्योंकि वह मानता था कि तुकाराम जी बहुत सिद्ध संत हैं, इनकी बात गलत नहीं हो सकती है।

तुकाराम जी से विदा लेकर वह व्यक्ति घर लौट आया। उसने तय किया कि जीवन के सात दिन बचे हैं तो अब आनंद के साथ ही जीना चाहिए।

उस व्यक्ति ने अपनी जीवन शैली ही बदल दी। सभी के साथ प्रेम से रहने लगा। उसने जो गलतियां की थीं, उनमें सुधार किया। जिन लोगों को उसकी वजह से नुकसान हुआ था, उनसे क्षमा मांगी। हर पर प्रसन्न रहने लगा। इसी तरह सातवां दिन आ गया। उनसे सोचा कि अंतिम दिन अपने गुरु से भी मिल लेना चाहिए। वह तुरंत ही तुकाराम जी के पास पहुंच गया। उसने कहा कि जैसा आपने कहा था कि मेरी सात दिन बात मृत्यु होगी। आज सातवां दिन है। अंतिम दिन मैं आपसे मिलने आया हूं।

तुकाराम जी ने उसकी बात सुनी और कहा कि जुग-जुग जियो।

ये बात सुनकर उस व्यक्ति ने कहा कि गुरु जी मैं अगले दिन तो मैं मर जाऊंगा तो आप ऐसा आशीर्वाद क्यों दे रहे हैं?

तुकाराम जी ने कहा कि मैंने तो तुम्हें तुम्हारे ही सवाल का जवाब दिया था, तुमने मेरे प्रसन्न रहने का रहस्य पूछा था। मैंने तो तुम्हें सिर्फ ये समझाया है कि जब हमें ये समझते हैं कि मृत्यु अटल है तो हम आनंद में रहने लगते हैं। जब तुम्हें मालूम हुआ कि तुम सात दिन बाद मरने वाले हो तो तुम आनंद से रहने लगे। जो लोग मृत्यु को लेकर सकारात्मक हो जाते हैं, उनका जीवन बदल जाता है, वे आनंद में रहने लगते हैं।

नवरात्रि शुरू होने से पहले मंदिर से जरूर हटा दें ये चीज

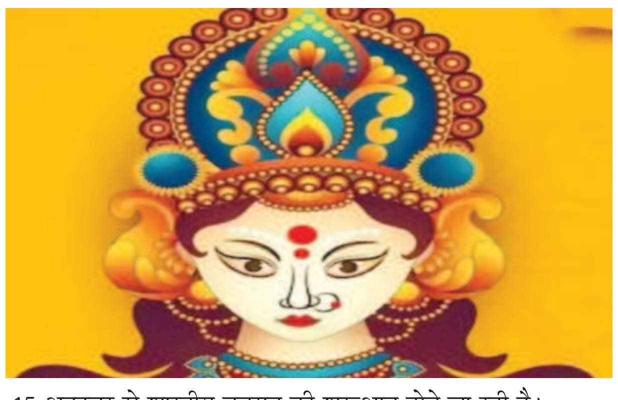

15 अक्टूबर से शारदीय नवरात्र की शुरूआत होने जा रही है। सनातन धर्म में शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्व है। नौ दिनों तक चलने वाले इस नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि की तैयारी पहले से शुरू हो जाती है। घर की साफ-सफाई के साथ माता के आगमन के लिए विभिन्न तरह के उपायों को अपनाते हैं। ऐसे में घर की सफाई करने के साथ मंदिर की भी साफ-सफाई की जाती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में मौजूद मंदिर से सबसे ज्यादा सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। ऐसे में इस जगह को नकारात्मक ऊर्जा से बचाना बेहद जरूरी है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मंदिर में कभी भी कैंची नहीं रखनी चाहिए। माना जाता है कि मंदिर में कैंची रखने से वास्तु दोष बनता है। इसके साथ ही गृह क्लेश का कारण बनता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मंदिर में कैंची सहित अन्य नुकीली चीजें बिल्कुल नहीं रखनी चाहिए। इस पवित्र स्थान में इन चीजों को रखने से नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। ऐसे में घर में क्लेश बनी रहती है। इसके साथ ही आध्यात्मिक वातावरण पर बुरा असर पड़ता है। ऐसे में पूजा में एकाग्र रूप से मन लगाने में परेशानी उत्पन्न होती है। इसके साथ ही असुविधा और असहजता की भावना पैदा हो सकती है। इसके साथ ही मंदिर से कैंची हटा देने से व्यक्ति को पूरी तरह से अपने अध्यात्मिक अभ्यास, ध्यान और भक्ति पर ध्यान केंद्रित करने में आसानी होती है। मंदिर में बिल्कुल भी न रखें ये चीजें

—वास्तु शास्त्र के अनुसार, मंदिर में कैंची के अलावा कुछ और चीजों को भी हटा देना चाहिए।

—मंदिर में कभी भी टूटी-फूटी मूर्ति, तस्वीर आदि हटा देना चाहिए। अगर मूर्ति टूट गई है, तो उसे पूजा स्थान से हटा दें।

—मंदिर में कभी भी सूखे फूल या फिर माला नहीं रखनी चाहिए। इससे अशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

—मंदिर में कभी भी एक से ज्यादा शंख न रखें। इसके अलावा खंडित शंख भी नहीं रखना चाहिए।

—मंदिर में कभी भी कटी-फटी पुस्तकें नहीं रखनी चाहिए। इन्हें जल में प्रवाहित कर दें।

शुकदेव की राजा परीक्षित को सीख

अभी पितृपक्ष चल रहा है, इस पक्ष में भागवत कथा सुनने की परंपरा है। भागवत कथा में जीवन को सुखी और सफल बनाने के कई सूत्र हैं, हमारी सभी समस्याओं के हल हैं। भागवत कथा शुकदेव ने राजा परीक्षित को सुनाई थी।

शुकदेव राजा परीक्षित को कथा सुना रहे थे, उस समय राजा ने पूछा कि आजकल लोग इतने बेचैन क्यों हैं? लोगों का मन अशांत क्यों है?

शुकदेव ने राजा को एक कथा सुनाई कि एक दिन पृथ्वी ने भी भगवान से यही बात पूछी थी।

पृथ्वी ने भगवान से कहा था कि ये लोग जो खुद मौत के खिलौने हैं। ये सभी मुझे यानी धरती, राज्य जीतना चाहते हैं। अभी तक मुझे यानी धरती को कोई भी मृत्यु के बाद अपने साथ ऊपर नहीं ले जा सका है। लोग ये बात क्यों नहीं समझते हैं?

शुकदेव ने राजा से कहा कि पृथ्वी ने ये सभी बातें भगवान से इसलिए कहीं थीं, कि धरती पर जो धन-संपत्ति है, वही सारे झगड़ों की जड़ है। सभी चाहते हैं कि मेरे पास दूसरों से ज्यादा वैभव हो, सभी इसी में लगे हुए हैं। जिस दिन इस दुनिया से जाएंगे, सब कुछ यहीं रह जाएगा।

परीक्षित ने शुकदेव की बातें ध्यान से सुनीं और कहा कि आजकल इतनी अशांति है तो शांति पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

शुकदेव ने कहा कि जब भी हमारा मन अशांत हो, हमें भगवान के नामों का जप करना चाहिए, ध्यान, पूजा-पाठ करना चाहिए। अपने इष्टदेव के नामों का जप करने से नकारात्मकता दूर होती है, मन शांत होता है। मंत्र जप से शरीर में जो परिवर्तन होते हैं, उनसे मन शांत होता है।

शुकदेव की सीख

इस प्रसंग में शुकदेव ने संदेश दिया है कि संसार से जुड़े काम करते समय मन किसी का भी अशांत हो सकता है। जब भी मन अशांत हो तो हमें अपने इष्टदेव के मंत्र का जप और ध्यान करना चाहिए। ऐसा करने से भगवान की कृपा मिलती है, नकारात्मकता दूर होती है, विचारों की पवित्रता बढ़ती है और हमारा मन शांत होता है।

फाइनेन्शियली स्ट्रांग बना सकता है सही सिग्नेचर

फाइनेन्शियली आपकी किस्मत कैसी है और आप कितना ग्रोथ कर रहे हैं ये सब कही न कहीं आपकी चीजों से जुड़ा हुआ हो सकता है। जैसे कि आपका सिग्नेचर बताता है कि आप कितने फाइनेन्शियली स्ट्रांग हैं। आज वास्तुशास्त्र में चर्चा हम इसी पर करेंगे। वास्तु शास्त्र में आज हम बात करेंगे कि कैसे आपका एक सही सिग्नेचर आपको फाइनेन्शियली स्ट्रांग बना सकता है।

फाइनेन्शियली स्ट्रांग बना सकता है सही सिग्नेचर

हस्ताक्षर पर आपके सारे काम टिके होते हैं। आपकी वित्तीय मामलों में आपके हस्ताक्षर की भूमिका बेहद मायने रखती है आपका एक गलत हस्ताक्षर आपका लाखों का नुकसान करा सकता है, जबकि एक सही हस्ताक्षर आपके भाग्य को मजबूत बनाता है। अगर आप भी वित्तीय समस्याओं से परेशान हैं तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, अपने हस्ताक्षर में कुछ बदलाव करके आप अपनी वित्तीय समस्याओं से आसानी से निजात पा सकते हैं।

खूब पैसा कमाने के लिए ऐसे करें सिग्नेचर

वास्तु के अनुसार, अगर आप खूब पैसा कमाते हैं लेकिन बचत एक रूपये की भी नहीं होती तो अपने हस्ताक्षर के नीचे एक सीधी लाइन बनाते हुए उसके नीचे दो बिंदु लगाने शुरू कर दीजिए और जैसे ही आपकी बचत होनी शुरू होने लगे तो अपने हस्ताक्षर के नीचे लगे बिंदुओं की संख्या एक-एक करके बढ़ाते जाएं। परंतु ध्यान रहे, ये बिंदु 6 से ज्यादा नहीं हो सकते।

शुभ माना जाता है घर में हाथी के जोड़े की मूर्ति को रखना, बढ़ता है दाम्पत्य जीवन में प्यार

आजकल घर की आन्तरिक सुन्दरता पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया जाता है। घर के अन्दर पेंटिंग्स, फेनसुई की वस्तुएँ, छोटे-छोटे सुन्दर पौधों को लगाने का बहुत चलन है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में हाथी का जोड़ा रखना बहुत ही शुभ माना जाता है। हाथी के जोड़े के बारे में यह कहा जाता है कि इससे दांपत्य जीवन में खुशी और प्यार बढ़ता है। इससे आपसी रिश्ते और मजबूत होते हैं।

परिवार को साथ लेकर चलता है हाथी जानवरों में हाथी बहुत ही कर्मठ और बुद्धिमान प्राणी है। साथ ही इनके पारिवारिक समूह में हथनियों को हमेशा प्राथमिकता दी जाती है, उनका सम्मान किया जाता है। इनके परिवार का मुखिया सबको साथ लेकर चलता है। समूह में एकता बनाकर रखता है। आपने देखा होगा कि जब भी ये कहीं जाते हैं तो अपने परिवार के साथ ही जाते हैं और

सबका ध्यान रखते हुए समूह में सबसे आगे चलते हैं। इस सबसे पता चलता है कि ये कितने समझदार होते हैं। अपने परिवार के लिए मेहनत करते हैं।

सुख समृद्धि का प्रतीक माना जाता है कई पूर्वी संस्कृतियों में तो हाथी को पूजा भी जाता है। इंद्र देव की सवारी हाथी है। देवी लक्ष्मी के वाहन में से एक सफेद हाथी भी है, यानी कि हाथी की मूर्ति को घर में रखना बहुत अच्छा होता है। यह सुख-समृद्धि का प्रतीक है। साथ ही शक्ति, बुद्धि और ज्ञान का भी प्रतीक है। वास्तु के मुताबिक, घर या ऑफिस के मुख्य द्वार पर सूंड ऊपर उठाए हुए हाथी के जोड़े की प्रतिमा लगानी चाहिए। इससे परिवार में सुख-सौभाग्य बना रहता है और रिश्तों में मजबूती आती है। परिवार के सब सदस्यों के बीच सामंजस्य की स्थिति बनी रहती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

गोल्फ खिलाड़ी से एक्ट्रेस बनने का सफर नहीं था आसान, आज करोड़ों की संपत्ति की मालकिन हैं रकुल प्रीत

एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह साउथ से लेकर बॉलीवुड तक अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा चुकी हैं। 10 अक्टूबर 1990 को नई दिल्ली में जन्मी रकुल ने बहुत कही कम समय में फैंस के दिलों में अपनी खास जगह बना ली है। 33 साल की रकुल बचपन से ही एक्ट्रेस बनने का सपना देखती थीं। वो एक ट्रेंड भरतनाट्यम डांसर हैं। यही नहीं वह अपने कॉलेज के दिनों में नेशनल लेवल की गोल्फ प्लेयर भी रह चुकी हैं। मगर, अपने एक्टिंग के सपने को पूरा करने के लिए वह गोल्फ छोड़कर मुंबई आ गईं। मुंबई आने के बाद रकुल ने कई ऑडिशन दिए। ऑडिशन के लिए उन्हें कई घंटों तक लाइन में खड़ा रहना पड़ा। शुरुआत में उन्हें रिजेक्शन का भी सामना करना पड़ा। काफी संघर्ष के बाद उन्हें साल 2009 में कन्नड़ फिल्म 'गिल्ली' में एक्टिंग करने का मौका मिला।

एक्टिंग के साथ ही रकुल मॉडलिंग भी करती थी। साल 2011 में वह पांचवें नंबर पर मिस इंडिया की रनर-अप भी रही हैं। कन्नड़, तेलुगु और तमिल भाषाओं में कई फिल्में करने के बाद रकुल ने 2014 में फिल्म 'यारियां' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। रकुल प्रीत नेट वर्थ की बात करें तो मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक्ट्रेस 45 करोड़ रुपये की संपत्ति की मालकिन हैं। एक्ट्रेस की कमाई का मुख्य जरिया फिल्में और विज्ञापन हैं। वह कई प्रोडक्ट्स के लिए ब्रांड एंडोर्समेंट भी करती हैं। रकुल के पास हैदराबाद में एक आलीशान घर है जहां वह अपना ज्यादातर समय बिताती हैं। उनकी मुंबई और दिल्ली में भी संपत्ति है। एक्ट्रेस को लग्जरी कारों का भी शौक है। उनके कार कलेक्शन में मर्सिडीज बेंज GLE, रेंज रोवर स्पोर्ट्स और BMW 520D जैसी महंगी कारें मौजूद हैं।

रकुल प्रीत के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह जल्द ही अर्जुन कपूर और भूमि पेडनेकर के साथ फिल्म 'मेरे हस्बैंड की बीवी' में नजर आएंगी। इसके अलावा उनके पास शिवा कार्तिकेयन की तमिल फिल्म 'अयलान' और कमल हासन की फिल्म 'इंडियन 2' भी है।

क्या एक बेटी की मां हैं विद्या बालन? वायरल वीडियो पर एक्ट्रेस ने तोड़ी चुप्पी

विद्या बालन को हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर एक बच्ची के साथ स्पॉट किया गया था। जिसके बाद लोगों ने कयास लगाने शुरू कर दिए कि वह उनकी ही बेटी हैं। अब खुद विद्या बालन ने इन खबरों पर विराम लगाया है।

बॉलीवुड एक्ट्रेस विद्या बालन को हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर एक बच्ची के साथ स्पॉट किया गया था। जिसके बाद सोशल मीडिया पर कयास लगाए जाने लगे थे कि एक्ट्रेस की एक सीक्रेट बेटी है। हालांकि कुछ लोगों ने यह भी कहा कि एक्ट्रेस के कोई बच्चे नहीं है तो अचानक से बेटी कहा से आ गई। वहीं कुछ लोगों का कहना है कि एक्ट्रेस ने हाल ही में बच्ची गोद ली है। अब इन सभी अफवाहों के बीच खुद एक्ट्रेस ने इस पर रिएक्ट किया है और एक्ट्रेस ने एयरपोर्ट पर साथ में नजर आई बच्ची के साथ अपना रिश्ता बताया है।

बता दें कि वीडियो में विद्या एक 10 12 साल की लड़की के साथ दिख रही हैं। वीडियो में एक्ट्रेस बच्ची का हाथ थामे एयरपोर्ट पर नजर आई। इस वीडियो के सामने आने के बाद एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा कि 'ये कब हुई'। एक यूजर ने लिखा कि 'विद्या बालन की इतनी बड़ी बेटी भी थी'।

विद्या ने बताया लड़की संग अपना रिश्ता

विद्या बालन ने एचटी सिटी को हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में बताया कि 'वो मेरी बहन की बेटी इरा है। उसके जुड़वा बच्चे हैं, एक लड़का रूहान और दूसरी बेटी इरा। एक्ट्रेस के इस बयान के बाद से इतना तो कंन्फर्म हो गया है कि विद्या बच्ची की मौसी हैं। विद्या ने यह भी कहा कि भले ही वह उनकी बेटी न हों, लेकिन वह अपनी बहन के बच्चों को अपनी दुनिया मानती हैं। बता दें कि पहले भी कई बार सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस के प्रेग्नेंट होने की अफवाहें उड़ चुकी हैं।

एक्ट्रेस ने सिद्धार्थ रॉय कपूर के साथ 11 साल पहले की थी शादी

बता दें कि विद्या बालन ने साल 2012 में 14 दिसंबर को सिद्धार्थ रॉय कपूर से शादी की थी। एक्ट्रेस के पति यूटीवी मोशन पिक्चर्स के सीईओ हैं। वहीं एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू में कहा था कि वह बच्चा पैदा करने की मशीन नहीं है। दुनिया की इतनी आबादी है, अगर कुछ लोगों के बच्चे नहीं होंगे तो क्या गलत है?

विद्या बालन वर्कफ्रंट

वहीं एक्ट्रेस के वर्कफ्रंट की बात करें तो हाल ही में वह फिल्म 'नीयत' में नजर आई थीं। हालांकि यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई थी। अब विद्या अपनी अपकमिंग फिल्म 'लवर्स'को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में वह इलियाना डिक्रूज और प्रतीक गांधी के साथ नजर आएंगी।

राज कुंद्रा ने की यूटी 69 की घोषणा, धूमिल छवि सुधारने के उद्देश्य से कर रहे हैं फिल्म में डेब्यू

बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा अपनी प्रोफेशनल लाइफ से ज्यादा अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में रहते हैं। पोर्न ऐप घोटाले के बाद राज कुंद्रा अक्सर मीडिया में अपना चेहरा छुपा कर ही रखते हैं। ऐसे में सोशल मीडिया पर लोग 'उन्हें मास्क मैन' के नाम से संबोधित करने लगे हैं। इस बीच राज कुंद्रा ने ने सोमवार को फिल्म निर्माता फराह खान और स्टैंड-अप कॉमेडियन और रैपर मुनव्वर फारुकी के एक मजेदार वीडियो के साथ अपनी आगामी फिल्म 'यूटी69' की रिलीज की तारीख की घोषणा की है।

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी की तरह अब उनके पति बिजनेसमैन राज कुंद्रा भी जल्द ही फिल्म में नजर आने वाले हैं। यह खुद राज और डायरेक्टर फराह खान कह रहे हैं। हाल ही में, राज कुंद्रा ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर फिल्म की अनाउंसमेंट की है और इससे दर्शकों भी काफी ज्यादा शॉक्ड हो गए हैं।

हाल ही में, राज कुंद्रा ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर एक वीडियो जारी किया है।इस वीडियो में राज एक बार फिर अपने चेहरे पर अजीबो-गबीर मास्क लगाए नजर आ रहे हैं। उनके साथ फराह खान और मुनव्वर फारूकी भी नजर आ रहे हैं। ये तीनों किसी प्रेस कॉन्फ्रेंस में बैठे दिखाई दे रहे हैं।

वीडियो में आगे मीडिया के लोग फराह से पूछते हैं कि, 'मैम आपने यह फिल्म क्यों बनाई है?' इस पर मुनव्वर कहते हैं कि 'पैसे के लिए।' इसके बाद फराह बोलती है कि मैंने यह फिल्म नहीं बनाई है। यह फिल्म राज ने बनाई है और फिल्म का हीरो भी यही है। इस वीडियो के वायरल होते ही राज कुंद्रा एक बार फिर लोगों की आलोचना का शिकार हो गए हैं।

आपको बता दें कि इस फिल्म का नाम UT 69 है। फिल्म में राज कुंद्रा 'एडल्ट फिल्म स्कैंडल' पर हुई गिरफ्तारी की कहानी होगी। खबर है कि इस फिल्म के जरिए राज कुंद्रा अपने ऊपर लगे सभी आरोपों का जवाब देते नजर आएंगे और साथ ही अपनी छवि भी साफ करते हुए दिखाई देंगे। यह फिल्म तीन नवंबर को रिलीज होगी।

कश्मीर फाइल्स के प्रोड्यूसर पर आशा पारेख ने साधा निशाना

बोलीं- क्या फिल्म के प्रॉफिट से उन्होंने कश्मीरी लोगों के वेलफेयर के लिए कुछ किया?

वेटरन एक्ट्रेस आशा पारेख ने फिल्म कश्मीर फाइल्स के प्रोड्यूसर पर बात की है। प्रोड्यूसर पर निशाने साधते हुए उन्होंने सवाल किया है कि क्या फिल्म के प्रॉफिट से उन्होंने कश्मीरी लोगों के वेलफेयर के लिए कुछ किया है?

आशा पारेख ने आगे कहा कि उन्होंने फिल्म द कश्मीर फाइल्स और द केरला स्टोरी नहीं देखी है पर अगर लोगों ने देखी है तो भी ठीक है।

प्रोड्यूसर 50 करोड़ रुपए कश्मीर के लोगों की भलाई के लिए दान कर सकते थे

न्यूज 18 को दिए इंटरव्यू में आशा पारेख ने कहा- मैंने इन फिल्मों को देखा नहीं है। इस लिए मैं इससे जुड़ी कॉन्ट्रोवर्सीज पर भी नहीं बोलना चाहूंगी।

फिर आशा पारेख ने कश्मीर फाइल्स के प्रोड्यूसर पर निशाना साधते हुए सवाल किया- फिल्म के प्रॉफिट से उन्होंने जम्मू-कश्मीर में रहने वाले हिंदुओं के वेलफेयर के लिए कितना पैसा दिया है? जिनके पास पानी या बिजली के पैसे नहीं हैं, प्रोड्यूसर ने उन्हें कितने पैसे दिए हैं?

उन्होंने आगे कहा- सबके हिस्से का पैसे देने के बाद प्रोड्यूसर के बाद प्रॉफिट का हिस्सा बचा ही होगा। मान लीजिए कि फिल्म ने 400 करोड़ रुपए की कमाई की। सबको शेयर देने के बाद उनके पास 200 करोड़ रुपए बचे होंगे।

'कोई भी आपको सच नहीं बताता...', रिश्ते को लेकर किसी से सलाह नहीं लेंगी नरगिस

बॉलीवुड अभिनेत्री नरगिस फाखरी ने फिल्म रॉकस्टार से रणबीर कपूर के साथ अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। हाल ही में एक बातचीत के दौरान नरगिस से रिश्ते पर सलाह लिए जाने के लिए किसी भारतीय सेलिब्रिटी का नाम बताने को कहा गया था। अभिनेत्री के पास इसके लिए शब्द नहीं थे। उन्होंने कहा कि वह किसी का नाम नहीं ले सकती हैं, क्योंकि उनके मुताबिक इंडस्ट्री में कोई भी वास्तव में सच नहीं बोलता है।

किसी से सलाह नहीं लेंगी अभिनेत्री

नरगिस फाखरी ने बातचीत के दौरान भारतीय सेलिब्रिटी से रिश्ते की सलाह लेने के बारे में सवाल किया गया था। इसके जवाब में अभिनेत्री ने कहा, मेरा मतलब है, मुझे कोई ऐसा व्यक्ति बताएं, जिसके साथ अच्छे संबंध हों। बताओ सबसे अच्छा प्यार भरा रिश्ता, शादी किसकी है? ईमानदारी से कहूं तो मैं किसी की सलाह नहीं लूंगी। मैं आपको बताऊंगी कि सब कुछ अलग है, और कोई भी आपको तब तक सच नहीं बताता जब तक कि आपके पास कोई ऐसा दोस्त न हो जो वास्तव में आपको सच बताता हो, लेकिन ज्यादातर लोग सच छिपाते ही हैं। वे चाहते हैं कि हर चीज परफेक्ट दिखे। इसलिए मैं अपने दिमाग का उपयोग करूंगी, या शायद एक चिकित्सक से मिलूंगी। मैं किसी से नहीं पूछूंगी।

फ्लर्ट पर क्या बोलीं अभिनेत्री

अभिनेत्री फिल्म सेट पर सह-कलाकारों के एक-दूसरे के साथ फ्लर्ट करने के बारे में भी खुलकर बात की। उन्होंने कहा, 'मेरा मतलब है, हर कोई हर किसी के साथ करता है, क्योंकि मुझे लगता है कि स्वाभाविक रूप से इंसान फ्लर्टी होते हैं। इसलिए हो सकता है वह कर रहे हों, लेकिन क्या इसका कोई मतलब है? या फिर हो सकता है कि वे आपसे फ्लर्ट नहीं कर रहे हों, बस आप सोच रहे हों कि वे आपके साथ फ्लर्ट कर रहे हैं।'

इन फिल्मों में आ चुकी हैं नजर

नरगिस ने आगे कहा, 'कुछ लोग गलत हो जाते हैं। जैसे लोगों ने सोचा है कि मैं उन पर हमला कर रही हूं, लेकिन ऐसी ही हूं भाई, मैं सिर्फ मिलनसार हूं। इसलिए आपको यह भी पता नहीं चलता कि कौन किसके साथ फ्लर्ट कर रहा है।' नरगिस फाखरी ने वर्ष 2011 में रणबीर कपूर की रॉकस्टार से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। इसके अलावा वह 'फटा पोस्टर निकला हीरो', 'हाउसफुल 3', 'मद्रास कैफे', 'मैं तेरा हीरो' और 'कॉकटेल' जैसी फिल्मों में देखा गया है। नरगिस आखिरी बार फिल्म 'शिव शास्त्री बाल्बोआ' में नजर आई थीं।

81 के अमिताभ बच्चन पर 1750 करोड़ का दांव

दिल टूटने पर नौकरी ढूंढने मुंबई पहुंचे

लोग कहते थे- तुम्हारी आवाज सुनकर लोग डर जाएंगे

अमिताभ बच्चन पर 1750 करोड़ का दांव

फिल्म	बजट	रिलीज
गणपत	200 करोड़	2023
द उमेश क्रॉनिकल	-	2023
काल्कि 2898 AD	600 करोड़	2023
थलाइवर 170	500 करोड़	2024
ब्रह्मास्त्रः पार्ट-2 देव	450 करोड़	2026

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन आज 81 साल के हो चुके हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी अमिताभ के पास 5 बड़ी फिल्में हैं, जिनके जरिए उन पर करीब 1750 करोड़ का दांव लगा है। इतना दांव इस समय तक शाहरुख खान, सलमान खान, आमिर खान और रजनीकांत पर भी नहीं लगा है।

81 साल के बिग बी सिर्फ 25% लिवर पर ही जिंदा हैं, उनका 75% लिवर खराब है। कुली के सेट पर हुए हादसे के बाद डॉक्टर्स क्लिनिकली मरा हुआ घोषित कर चुके हैं। अमिताभ की भारत में बीते 50 सालों में इतनी तगड़ी फैन-फॉलोइंग है कि उनके अस्पताल पहुंचते ही मंदिरों में भीड़ बढ़ जाती है और देशभर में हवन होने लगते हैं। हालांकि, ये मुकाम हासिल करना उनके लिए आसान नहीं रहा। पहली अधूरी मोहब्बत से हारकर जब अमिताभ बच्चन ने फिल्मों में आना चाहा तो लोगों ने उनकी सांवली रंगत, भारी आवाज और ऊंचे कद का जमकर मजाक उड़ाया। ये बात भी सच है कि इन्हीं 3 खूबियों के साथ वो महानायक बने।

उम्र के इस पड़ाव में भी सबसे ज्यादा फिल्में देते हैं अमिताभ

80 के दशक के ज्यादातर स्टार्स धर्मेंद्र, जीतेंद्र जैसे सभी सितारों की चमक फीकी पड़ गई, लेकिन अमिताभ की चमक आज भी बरकरार है। अमिताभ बच्चन 2022 में 5 फिल्मों झुंड, रनवे 24, ब्रह्मास्त्र, ऊंचाई, गुड बाय में नजर आए। इसके साथ उन्होंने गुजराती फिल्म 'फकत महिला माटे' में काम किया, आर. बाल्की की फिल्म चुप में कैमियो किया और प्रभास की फिल्म राधे-श्याम के नैरेटर बने। 2010 से अब तक 13 सालों में ही अमिताभ बच्चन ने कैरेक्टर रोल, लीड रोल और कैमियो समेत 52 फिल्मों में काम किया है। इनमें बुड्ढा होगा तेरा बाप, गुलाबो-सिताबो और झुंड जैसी फिल्में शामिल हैं, जिनकी कमान अकेले अमिताभ ने संभाली थी।

राजीव गांधी और संजय गांधी के साथ खेलकर बीता बचपन

दूसरे विश्व युद्ध और आजादी की लड़ाई के दौर में 11 अक्टूबर 1942 को अमिताभ बच्चन का जन्म उस जमाने के मशहूर लेखक हरिवंशराय बच्चन और तेजी बच्चन के घर हुआ। पिता ने उनका नाम इंकलाब रखा, जिसका अर्थ था- क्रांति, बदलाव। लेखकों का हरिवंशराय बच्चन के घर में आना-जाना था। एक दिन मशहूर राइटर सुमित्रानंदन पंत उनके घर नवजात बच्चे को देखने पहुंचे। जब उन्हें पता चला कि हरिवंश राय बच्चन ने बेटे का नाम इंकलाब रखा है तो उन्होंने नाम बदलकर अमिताभ करवा दिया। अमिताभ का अर्थ है- अत्यंत तेजस्वी या गुणवान। अमिताभ का असली सरनेम श्रीवास्तव है।

उनके पिता हरिवंशराय बच्चन ने बतौर राइटर अपना पेन नेम बच्चन रखा था, जो आगे जाकर उनका सरनेम बन गया। इसे उनके बच्चों ने भी फॉलो किया।

बचपन में अमिताभ राजीव गांधी और संजय गांधी के साथ खेला करते थे। इलाहाबाद के बॉयज हाई स्कूल और नैनीताल के शेरवुड कॉलेज से पढ़ाई करने के बाद उन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी के किरोड़ीमल कॉलेज में आर्ट्स की मास्टर डिग्री ली।

21 साल की उम्र में नौकरी करने कोलकाता गए, हो गई मोहब्बत

1963 में 21 साल की उम्र में अमिताभ बच्चन नौकरी की तलाश में इलाहाबाद से कोलकाता आ गए। कोलकाता की बड़ी शॉ वैलेस नाम की शराब कंपनी में उन्हें क्लर्क की नौकरी भी मिल गई। यहां से निकले तो शिपिंग फर्म बर्ड एंड कंपनी में काम मिल गया। कुछ समय के लिए उन्होंने ICI कंपनी में भी काम किया, जहां उनकी चंद्रा नाम की महाराष्ट्रियन लड़की से मुलाकात हुई। अमिताभ उस लड़की के सीनियर थे। उनकी तनख्वाह 1500 रुपए थी और चंद्रा की महज 400। साथ काम करते हुए दोनों को प्यार हो गया। ये उनकी पहली मोहब्बत थी। अमिताभ ने जब उनसे शादी के लिए इजहार किया, तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया। इस बात से वो बुरी तरह टूट गए। दिल टूटने पर उन्होंने तुरंत नौकरी छोड़ दी, जिससे उन्हें 26 दिन की तनख्वाह भी नहीं मिली। नौकरी के बाद शहर भी छोड़ना था, तो वो सीधे कोलकाता से बॉम्बे (अब मुंबई) पहुंच गए।

रेडियो स्टेशन में नौकरी मांगी तो कहा गया- तुम्हारी आवाज सुनकर लोग भाग जाएंगे।

मुंबई पहुंचकर अमिताभ बच्चन नौकरी के लिए एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर चक्कर लगाते रहे। हर जगह से रिजेक्शन ही हाथ आया। एक बार वो एक रेडियो स्टेशन में नौकरी मांगने पहुंच गए। रेडियो में सिर्फ आवाज का ही काम था, तो उस समय मशहूर आवाज रहे अमीन सयानी ने उनका ऑडिशन लिया। आवाज सुनते ही अमीन बोल पड़े- तुम्हारी आवाज बहुत भारी है, लोग इसे सुनकर भाग जाएंगे।

कान के पर्दे खराब करेगा ईयरफोन : दिमाग पर भी असर; कितने घंटे यूज करना है सेफ

ईयर फोन या ईयर बड्स। पिछले कुछ सालों में इसका इस्तेमाल बढ़ा है। छोटे-छोटे बच्चे के लेकर बुजुर्ग सब इसे यूज कर रहे हैं।

किसी को कॉल करनी हो, मीटिंग, ऑनलाइन क्लासेज लेनी हो, म्यूजिक सुनना हो, ओटीटी सीरीज को बिंज वॉच करना हो, तो घंटों तक कान में ईयरफोन लगा रहता है। सड़क पर देखें तो ट्रैफिक रूल को तोड़ते हुए लोग बेखौफ ईयरफोन लगाकर ड्राइव और वॉक कर रहे हैं। प्राइवेसी के लिहाज से जिसे लोग अच्छा मान रहे हैं, उसका जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल सेहत पर बुरा असर डाल रहा है। हेडफोन या ईयरफोन से आने वाली आवाज आपके ईयरड्रम को भारी नुकसान पहुंचा रही है। किस हद तक इससे कानों को नुकसान होगा, हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

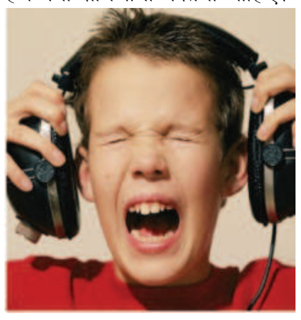

'ईयर फोन और ईयर बड्स के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान पर पिछले कई सालों से रिसर्च हो रही है। हर हफ्ते, हमारे सामने कान के इन्फेक्शन के चार मामले सामने आते हैं, जिसमें ईयरफोन का लंबे समय तक यूज करना आम बात है। वातावरण में नमी के कारण गर्म और उमस भरे मौसम में संक्रमण अधिक बढ़ जाता है।

अब एक डेटा पर नजर डालें, नीचे लगी क्रिएटिव में...

डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी है कि रेगुलर ईयरफोन यूज करने से 2050 तक 70 करोड़ से ज्यादा लोगों के कान खराब हो जाएंगे। वाइब्रेशन ज्यादा होने से सुनने वाले सेल्स अपनी संवेदनशीलता खो देते हैं। जिससे बहरापन हो जाता है। इसके साथ कई दूसरी प्रॉब्लम भी हो सकती हैं। जैसे-

कान में दर्दः देर तक रेगुलर यूज करने से कानों में दर्द शुरु हो सकता है। कई बार ये दर्द तेज भी हो सकता है जिससे कानों में भारीपन होने की संभावना बढ़ जाती है।

बहरापनः ज्यादा देर तक लगाने और वाइब्रेशन से कानों की नसों पर दबाव पड़ता है, जिससे नसों में सूजन आ सकती है। सेंसिटिविटी खोने से बहरापन भी हो सकता है।

सिरदर्दः डेली तेज आवाज में सुनने से कानों को बल्कि दिमाग को भी बहुत ज्यादा नुकसान होता है। तेज वाइब्रेशन से हमें सिरदर्द और नींद न आने की परेशानी होने लगती है।

कान सुन्न होनाः लंबे समय तक सुनने पर कान सुन्न हो सकते हैं। मानसिक समस्याएं जैसे चक्कर आना, नींद न आने की प्रॉब्लम होने लगती है।

सुनने की क्षमता प्रभावितः धीरे-धीरे सुनने की क्षमता कम होने लगती है और इंफेक्शन भी हो सकता है। इससे टिनिटस मतलब कान में गुंजन या अतिरिक्त ध्वनि सुनाई देती है।

नोटः कान में अक्सर सनसनाहट की आवाज सुनाई देती है या लेटने पर चक्कर आते हों तो बिना देर किए ईएनटी स्पेशलिस्ट से सलाह लें।

जो लोग ईयर फोन, ईयरबड्स और हेडफोन का लगातार कई-कई घंटों तक यूज करते हैं, रात में लगाकर सो जाते हैं उन्हें ज्यादा प्रॉब्लम होती है। कान के अंदर एक पर्दा मौजूद होता है जिसे ईयरड्रम कहते हैं। इसमें तमाम नसें और अंग होते हैं, जो दिमाग से कनेक्ट होते हैं। जब ईयरफोन या हेडफोन लगाकर तेज आवाज में सुनते हैं, तो आवाज और उसका वाइब्रेशन दवाब के साथ ईयर ड्रम से टकराता है जिससे समस्याएं पैदा होती हैं। एक बार जब यह समस्या हो जाती है तो परमानेंट बन जाती है। अगर इसका तुरंत इलाज नहीं किया जाए, तो यह डेंजरस भी हो सकती है। ईयरफोन के मुकाबले हेडफोन थोड़ा सुरक्षित है। ईयरफोन कान के अंदर लगता है इसलिए वाईब्रेशन की कान के पर्दे से दूरी कम होती है जबकि हेडफोन कान के बाहर लगता है जिससे पर्दे से दूरी थोड़ी ज्यादा होती है। तो यह कम नुकसान करता है। लेकिन दोनों का यूज ज्यादा किया जाए और तेज आवाज में सुना जाए, तो नुकसान ही पहुंचाएंगे।

डॉक्टर का मानना है कि दिन में सिर्फ 30 मिनट ही ईयरफोन का यूज करना चाहिए। इसके अलावा जब जरूरत हो तब करें। सबसे पहली बात तो ईयरफोन का यूज जरूरत पड़ने पर ही करें। बाकी बातें नीचे लगे क्रिएटिव से समझते हैं।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदते वक्त रखें इन बातों का ध्यान, ऐसे बचा सकते हैं हजारों रुपये

महीने का राशन खरीदने के दौरान, कई बार हम अपने बजट से भी ज्यादा सामान ऑर्डर कर देते हैं। अक्सर ऐसा भी होता है कि हम बिना इस्तेमाल के भी कई सामान ऑर्डर कर देते हैं। ऑनलाइन माध्यम से खरीदारी करते वक्त हम ऑफर की लालच में भी आ कर के शॉपिंग कर लेते हैं। जिसका असर हमारे जेब पर पड़ता है। इसलिए, महीने का राशन खरीदते वक्त इन बातों का ध्यान रखना बेहतर हो सकता है कि आप ऑनलाइन शॉपिंग में ऐसे ही प्रोडक्ट खरीदें, जो इस्तेमाल का भी हो और आपको समय और पैसों की बचत मिल सके।

अगर आप किसी ऑनलाइन राशन की वेबसाइट या ऐप का उपयोग कर रहे हैं, तो जरूर तय करें कि यह आपकी जरूरतों के अनुसार प्राथमिकता देता है और आपके इलाके में इसकी सेवा उपलब्ध है।

जब आप राशन खरीदने के लिए ऑनलाइन भुगतान करते हैं, तो जान लें कि आपका लेनदेन सुरक्षित माध्यम से हो रहा है। आपका डेबिट या क्रेडिट कार्ड की जानकारी किसी भी असुरक्षित स्थान पर दर्ज न करें।

राशन उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान दें। ऑनलाइन खरीदी गई चीजों का लेबल और गुणवत्ता सत्यापन करें और अगर आपको कोई असुविधा मिलती है, तो कस्टमर केयर को उसकी कंप्लेंट करें।

राशन की डिलीवरी की विशेषता को ध्यान में रखें। डिलीवरी समय

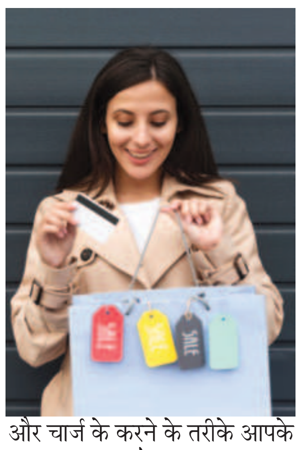

और चार्ज के करने के तरीके आपके अनुसार उचित है।

अगर कोई समस्या या शिकायत होती है, तो आपको खरीदारी करने वाली वेबसाइट या ऐप के सहायता केंद्र से संपर्क करने के लिए उनकी संपर्क जानकारी होनी चाहिए।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदते समय इन बातों का पालन करें

जरूरी सामान का लिस्ट बना लें

सबसे पहले, अपनी जरूरतों का आकलन करें और यह तय करें कि आपको कितना राशन चाहिए। अपने परिवार के आकार, आहार की आदतों और रसोई की आदतों पर विचार कर के आप लिस्ट बना सकते हैं। यह अच्छा तरीका हो सकता है कि आप पहले से ही अपना बजट बना लें, ताकि जरूरी सामान लिया जा सके।

वेबसाइटों की तुलना करें

एक बार जब आप अपनी जरूरतों को समझ लें, तो कई अलग-अलग वेबसाइटों की तुलना करें। विभिन्न वेबसाइटों पर कीमतें और उत्पादों की उपलब्धता में काफी अंतर हो सकता है। वही सामान कार्ट में डालें जिसका दाम आपके अनुसार हो। इससे आप फिजूल खर्च से बच सकते हैं।

अधिक ऑफर के लालच से बचें

कई वेबसाइटें छूट और ऑफर प्रदान करती हैं। इन ऑफर का सही लाभ उठाकर आप पैसे बचा सकते हैं। लेकिन जरूरत से ज्यादा सामान इसलिए न खरीद लें क्योंकि आपको यह उत्पाद अधिक ऑफर में मिल रहा है। अधिक ऑफर वाले सामान

जिनकी जरूरत नहीं है, इसे खरीदने पर आपके अधिक पैसे खर्च हो सकते हैं।

फैंसी आइटम के बजाए किफायती सामान खरीदने की कोशिश करें

अगर आप एक बड़ी मात्रा में राशन खरीद रहे हैं, तो मुफ्त डिलीवरी के लिए योग्य बनने की कोशिश करें। यह आपको पैसे बचाने में मदद करेगा। साथ ही कोशिश करें अपने राशन में वही समान लें जो किफायती और पूरक है। फैंसी समान आपके बजट लेवल को बढ़ा सकती है। ऑनलाइन खरीदारी करते वक्त इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

रिटर्न पॉलिसी के बारे में जरूर चेक कर लें

अगर आप किसी उत्पाद से संतुष्ट नहीं हैं, तो आपके लिए यह महत्वपूर्ण है कि कंपनी एक अच्छी रिटर्न पॉलिसी प्रदान करती है। इस प्रक्रिया में आपको अधिक समय न लगे। निर्धारित समय सीमा के अंदर ही आपका सामान रिटर्न हो सके।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदना एक आसान और सुविधाजनक तरीका है। इन तरीकों का पालन करके, आप पैसे बचा सकते हैं और अपने परिवार के लिए स्वस्थ और पौष्टिक राशन खरीद सकते हैं। इससे आपको पैसे बचाने के साथ साथ अच्छी क्वालिटी का सामान मिल सकता है।

बढिया हनीमून के लिए लक्षद्वीप का ये आईलैंड मालदीव से कम नहीं

हनीमून मनाने के विदेश में नहीं, बल्कि भारत के लक्षद्वीप में मौजूद इन हसीन आइलैंड के किनारे पहुंच सकते हैं। इन द्वीपों की खूबसूरती दुनिया भर में फेमस हैं। लक्षद्वीप भारत का एक बेहद ही खूबसूरत और मनमोहक केंद्र शासित प्रदेश है। लक्षद्वीप की खूबसूरती इस कदर प्रचलित है कि यहां सिर्फ देशी ही नहीं, बल्कि विदेशी सैलानी भी घूमने के लिए पहुंचते हैं।

लक्षद्वीप की खूबसूरती में चार चांद लगाने काम करते हैं यहां मौजूद आइलैंड यानी द्वीप। अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप एक नहीं बल्कि, दर्जन से भी अधिक हसीन द्वीपों के लिए जाना जाता है। लक्षद्वीप में स्थित कुछ आइलैंड की खूबसूरती और मेहमान नवाजी इस कदर प्रचलित है कि यहां हर रोज दर्जन से भी अधिक कपल्स हनीमून मनाने के लिए पहुंचते हैं। इस आर्टिकल में हम आपको कुछ ऐसे हसीन आइलैंड के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां आप भी हसीन हनीमून मनाने के लिए पहुंच सकते हैं।

मिनिकॉय द्वीप

लक्षद्वीप में स्थित सबसे खूबसूरत आइलैंड की बात होती है, तो सबसे पहले मिनिकॉय द्वीप का जिक्र जरूर होता है। यह आइलैंड जिस तरह अपनी खूबसूरती के लिए फेमस है, ठीक उसी तरह कपल्स के बीच भी फेमस है।

बेहतरीन नजारे और हसीन मेहमान नवाजी के लिए चलते हर दिन दर्जन से अधिक कपल्स यहां हनीमून मनाने के लिए पहुंचते हैं। मिनिकॉय द्वीप में मौजूद आलीशान और हसीन रिसॉर्ट भी कपल्स की स्वागत में खड़े रहते हैं। यहां स्थित रिसॉर्ट द्वारा कपल्स को एक से एक बेहतरीन चीजों की सुविधा दी जाती है।

अगत्ती द्वीप

लक्षद्वीप में मौजूद किसी हसीन और मनमोहक द्वीपों पर घूमने और हनीमून मनाने की बात होती है, तो अगत्ती द्वीप का नाम जरूर लिया जाता है। इसलिए अगत्ती द्वीप को हनीमून का स्वर्ग भी माना जाता है।

अरब सागर के नीले पानी, सफेद रेत और बड़े-बड़े पेड़ अगत्ती द्वीप की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। समुद्र किनारे मौजूद टेंट और टेंट के पास जलती रंगीन लाइट्स और साथ में हमसफर के साथ हनीमून मानना किसी हसीन जन्नत से कम नहीं। अगत्ती द्वीप में हनीमून मनाने के अलावा यहां आप वाटर स्पोर्ट्स का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

बांगरम द्वीप

हिंद महासागर के साफ और नीले पानी में स्थित बांगरम द्वीप देशी और विदेशी सैलानियों के बीच काफी फेमस आइलैंड माना जाता है। मूंगा चट्टान और लुभावने दृश्यों के लिए फेमस बांगरम द्वीप कपल्स के बीच भी काफी लोकप्रिय है।

बांगरम द्वीप के आसपास मौजूद रिसॉर्ट कपल्स के लिए एक से एक बेहतरीन सुविधाएं प्रदान करती है। कई रिसॉर्ट रात के समय कपल्स के लिए हसीन लाइट्स और डिनर की भी सुविधा प्रदान करते हैं। आपको बता दें कि बांगरम द्वीप का सूर्योदय और सूर्यास्त अन्य आइलैंड से काफी फेमस माना जाता है। (मालदीव की तरह खूबसूरत है भारत का यह आइलैंड)

कावारत्ती द्वीप

लक्षद्वीप की राजधानी होने के लिए कावारत्ती द्वीप अन्य पर्यटकों के साथ-साथ कपल्स के बीच भी काफी फेमस माना जाता है। कावारत्ती द्वीप सबसे सुंदर रत्नों में से एक माना जाता है। कावारत्ती द्वीप नीले पानी, सफेद रेत और हसीन नजारों के लिए बहुत फेमस है। समुद्र के बीच में मौजूद यहां के रिसॉर्ट कपल्स को एक से एक हसीन चीजों की सुविधा देते हैं। कई रिसॉर्ट और होटल कपल्स के लिए दुल्हन की तरह सजा देते हैं। यहां पार्टनर के साथ वाटर स्पोर्ट्स का लुत्फ उठाते हुए यादगार हनीमून मना सकते हैं। यहां स्कूबा डाइविंग करना न भूलें।

कम समय में ऐसे करें पूरे घर की सफाई

घर में मेहमान आने वाले हैं और आपके पास काफ़ी कम समय रह गया है तो ऐसे करे अपने घर की सफ़ाई मिनटों में। आज हम आपको कुछ आसान हैक्स बताने वाले हैं।

कई बार घर में मेहमान अचानक आने वाले होते हैं और हमें कुछ समय पहले ही पता चलता है। इस समय समझ नहीं आता कि घर की सफ़ाई किस कोने से करना शुरू करें। अगर आप भी अपने घर को मिनटों में चमकाना चाहती है तो आज हम आपको कुछ आसान हैक्स के बारे में बताने वाले हैं। जिनकी मदद से आप अपने घर को मिनटों में चमका सकते हैं।

लिविंग रूम की करें सफ़ाई

ऐसे समय में आपको सबसे पहले अपनी लिविंग रूम की सफ़ाई करनी चाहिए जहाँ आपके मेहमान आ के बैठने वाले हैं।

सबसे पहले आपको बिखरे हुए सामानों को एक जगह इकट्ठा करना है और उन्हें सही स्थान पर रख देना है। इसके बाद आपको अपने घर में तुरंत झाड़ू पोंछा लगाना हैं।

सोफ़ा रखे साफ

अगर आपका सोफ़ा गंदा है तो आपको तुरंत इसकी डस्टिन शुरू कर देनी चाहिए। इसमें आपको क़रीबन पाँच मिनट का समय लगेगा। सोफ़ा साफ़ करना काफ़ी आसान है हालाँकि अगर आपके पास समय नहीं है तो आप इसके ऊपर कवर भी लगा सकते हैं। तो आप अपना काफ़ी समय बचा सकती है।

आपस में मिलकर करे काम

घर की सफ़ाई तुरंत करने के लिए आपको किसी और की सहायता लेनी होगी ऐसे में कोशिश करें कि सभी लोग मिल के सफ़ाई करें। मिनटों में सफ़ाई करने के लिए आपको अपने घर के सभी बेडशीट को चेंज कर देना चाहिए। बेडशीट सईद से लगाते और किचन का बिखरा हुआ सारा सामान एक जगह समेटकर रखते दें।

घर के पूजा रूम का ऐसे करें मेकओवर, दिखेगा बहुत सुंदर

कुछ ही दिनों में फेस्टिवल सीजन आने वाला है और ऐसे में आप अलग-अलग तरह से पूजा घर का मेकओवर कर सकती हैं। हम आपको कुछ ऐसे तरीके बताएंगे जिससे आपको अधिक खर्च भी नहीं करना पड़ेगा और मंदिर बहुत अधिक सुंदर भी लगेगा। आप चाहें तो मंदिर को अलग तरह से पेंट कर सकती हैं या फिर पूजा रूम के कलर को चेंज कर सकती हैं।

पूजा घर में लगाएं लाइट्स

अलग-अलग डिजाइन के दीए और लाइट्स से भी पूजा घर को शानादर तरह से न्यू लुक दे सकती हैं। ध्यान रखें कि दब भी मंदिर में बड़े दीए रखें तो उन्हें पर्दो के आसपास न रखें। इसके अलावा आपको पूजा घर में फेयरी लाइट्स भी लगानी चाहिए। इन लाइट्स से मंदिर बहुत सुंदर लगता है। इसके अलावा आप छोटी-छोटी वॉटर कैंडल्स भी रख सकती हैं।

पूजा घर में लगाएं वॉलपेपर्स

आप पूजा घर में मंदिर के साइड में खाली स्पेस पर वॉलपेपर्स भी लगा सकती हैं। इसके अलावा आप मार्केट से जाली पैनल खरीदकर मंदिर के आगे वाले भाग को कवर करने के लिए लगा सकती हैं। इससे मंदिर कवर भी हो जाएगा और यह दिखने में भी बहुत सुंदर लगेगा। आप मंदिरों के लिए लकड़ी के पैनलिंग का उपयोग कर सकती हैं। पैनल के लिए लकड़ी का उपयोग करने से आपके पैसे भी बचेंगे और मंदिर की सुंदरता भी बढ़ेगी।

रंगीन लकड़ियों से सजाएं मंदिर का बैकग्राउंड

आप कलरफुल लकड़कियों की मदद से भी पूजा घर को न्यू लुक दे सकती हैं। इसके लिए आपको कुछ लकड़ियां लेनी होंगी जो सेम साइज में हो और फिर उन्हें कलर करना होगा जो मंदिर से मैच करें। इसके बाद रंगीन लकड़ियों से आप मंदिर के बैकग्राउंड को खास डिजाइन में सजा सकती हैं।

सोना 250 रुपये उछला, चांदी में 100 रुपये की मजबूती

नई दिल्ली ,11 अक्टूबर (एजेसिंया)। मजबूत वैश्विक संकेतों के बीच दिल्ली सर्राफा बाजार में मंगलवार को सोना 250 रुपये की तेजी के साथ 58,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंच गया। इससे पिछले कारोबारी सत्र में सोना 58,350 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ था। इस दौरान चांदी भी 100 रुपये की बढ़त के साथ 72,600 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

वैश्विक बाजार में सोना और चांदी में तेजी के साथ क्रमशः 1,858 डॉलर प्रति औंस और 21.75 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार होता दिखा। फेडरल रिजर्व के अधिकारियों की टिप्पणी के बाद मध्य पूर्व में संघर्ष जारी रहने से सोने में तेजी रही, जबकि निवेशकों इस बात पर विचार कर रहे हैं कि क्या हालिया सख्त वित्तीय स्थिति चरम पर पहुंच सकती है।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में जिंसों के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा, ''फेडरल रिजर्व के अधिकारियों की नरम टिप्पणियों और पश्चिम एशिया में तनाव के कारण निवेशकों के सुरक्षित परिसंपत्तियों (सोना-चांदी) की ओर बढ़ने से अमेरिका के 10 वर्षीय ट्रेजरी प्रतिफल में गिरावट आई है।

इजराइल-हमास जंग से दुखी गूगल सीईओ सुंदर पिचाई

बोले- एम्प्लॉइज की सेफ्टी हमारी प्रायोरिटी, ग्राउंड लेवल पर करेंगे सपोर्ट

न्यूयार्क, 11 अक्टूबर (एजेसिंया)। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई इजराइल पर हुए आतंकी हमले और हमास से बढ़ते संघर्ष को लेकर दुखी हैं। उन्होंने कहा, 'इजराइल में हमने अपने सभी एम्प्लॉइज से संपर्क किया है और उनका सपोर्ट करते रहेंगे।' सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पिचाई ने इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने लिखा, 'इजराइल में गूगल के 2 ऑफिस और 2 हजार से ज्यादा कर्मचारी हैं। यह अनइमेजिनेबल है कि वह इस समय क्या एक्सपीरियंस कर रहे हैं। शनिवार से हमारी प्रायोरिटी एम्प्लॉइज की सेफ्टी है।' मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पिचाई ने इसको लेकर इजराइल के सभी एम्प्लॉइज को इसके बारे में मेल भी किया है।

ग्राउंड लेवल पर करेंगे सपोर्ट

पिचाई ने लिखा,'हम अपने प्रोडक्ट के माध्यम से लोगों को रिलायबल, एक्यूरेट इंफॉर्मेशन देने के लिए एक्सपर्ट टीम के साथ काम कर रहे हैं। हम ह्युम्यानिटेरियन (मानवीय) और रिलीफ ऑर्गेनाइजेशन का ग्राउंड लेवल पर सपोर्ट करते रहेंगे। हमारी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं।'

हाइफा और तेल अवीव में गूगल के ऑफिस

इजराइल में गूगल के दो ऑफिस हाइफा और तेल अवीव में है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, यहां कंपनी चिप डिजाइनिंग के साथ मशीन लर्निंग और लैंग्वेज अंडरस्टैंडिंग सहित अन्य कई के रिसर्च करती है।

शनिवार को शुरू हुई फिलिस्तीन और इजराइल की जंग

फिलिस्तीन और इजराइल के बीच जंग शनिवार को शुरू हुई है। जंग के पांचवे दिन तक 1,200 इजराइलियों की मौत हुई है। वहीं इजराइल की जवाबी कार्रवाई में 900 फिलिस्तीनी मारे गए हैं।

इजराइल और फिलिस्तीन के बीच क्यों है विवाद

मिडिल ईस्ट के इस इलाके में यह संघर्ष कम से कम 100 साल से चला आ रहा है। यहां वेस्ट बैंक, गाजा पट्टी और गोलन हाइट्स जैसे इलाकों पर विवाद है। फिलिस्तीन इन इलाकों समेत पूर्वी यरुशलम पर दावा जताता है। वहीं, इजराइल यरुशलम से अपना दावा छोड़ने को राजी नहीं है। गाजा पट्टी इजराइल और मिस्र के बीच में है। यहां फिलहाल हमास का कब्जा है। ये इजराइल विरोधी समूह है। सितंबर 2005 में इजराइल ने गाजा पट्टी से अपनी सेना वापस बुला ली थी। 2007 में इजराइल ने इस इलाके पर कई प्रतिबंध लगा दिए। फिलिस्तीन का कहना है कि वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में स्वतंत्र फिलिस्तीन राष्ट्र की स्थापना हो।

बाइडेन ने इजराइल के लिए मदद दोगुना करने की घोषणा की

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और उप राष्ट्रपति कमला हैरिस ने इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से युद्ध के हालात की जानकारी ली है। बाइडेन ने मंगलवार देर रात व्हाइट हाउस से अपने संबोधन में कहा कि अमेरिका इजराइल के साथ है। इजराइल में एक हजार लोगों की अमानवीय तरह से हत्याएं की गई हैं। इनमें 14 अमेरिकी नागरिक मारे गए। इजराइल में नरसंहार हुआ है। इजराइल को इस हमले का जवाब देने का अधिकार है। इसके साथ ही उन्होंने इजराइल के लिए मदद को दोगुना करने की घोषणा की। बाइडेन ने कहा- यह आतंकवाद है, लेकिन दुख की बात है कि यहूदी लोगों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। वहीं अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने बताया कि इजराइल के साथ एकजुटता दिखाने के लिए विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन आज को इजराइल रवाना होंगे। उनके गुरुवार को इजराइल पहुंचने की उम्मीद है।

नौकरी घोटाले की जांच के सिलसिले में चावल मिलों पर छापे

कोलकाता,11 अक्टूबर (एजेसिंया)। प्रवर्तन निदेशालय ने आज पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में चावल मिलों पर छापे मारे। बबला कांडा खोला से सटे शांतिपुर बाईपास रोड पर स्थित राइस मिल और आटा मिल ईएसएसएसजीई राइस मिल और जीके एग्रो फूड प्रोडक्शन में छापेमारी चल रही है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुसार एजेंसी के अधिकारियों ने नौकरी घोटाले की जांच के सिलसिले में बुधवार को पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में कम से कम चार स्थानों पर स्थित कई चावल मिलों में तलाशी अभियान चलाया। केंद्रीय बलों के जवान शांतिपुर, धुबुलिया, रानाघाट और कृष्णानगर में मिलों की सुरक्षा कर रहे हैं, जहां तलाशी अभियान चल रहा है।

ईडी ऑफिसर ने कहा, नौकरियों के घोटाले से जुटाई गई अच्छी खासी रकम चावल मिलों में निवेश की गई है। हमारे पास इसे साबित करने के लिए दस्तावेज हैं। आज की छापेमारी इसी सिलसिले में की गई है। इस बीच, एक अधिकारी ने बताया कि तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा बनर्जी इसी घोटाले के सिलसिले में पूछताछ के लिए कोलकाता कार्यालय में ईडी अधिकारियों के समक्ष पेश हुईं।

शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 22% से बढ़ा

साढ़े नौ लाख करोड़ हुआ टैक्स, व्यक्तिगत आयकर में भी उछाल

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेसिंया)। शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह चालू वित्त वर्ष में नौ अक्तूबर तक 21.82 फीसदी बढ़कर 9.57 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। कंपनियों व व्यक्तिगत करदाताओं के बेहतर योगदान से शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह बढ़ा है। इस साल अप्रैल से 9 अक्तूबर तक 1.50 लाख करोड़ का रिफंड जारी किया गया है। वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को कहा, 9 अक्तूबर तक शुद्ध कर संग्रह पूरे साल के 18.23 लाख करोड़ रुपये के बजट अनुमान का 52.5 फीसदी है। सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह 11.07 लाख करोड़ रुपये रहा। यह पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 17.95 फीसदी अधिक है। सरकार ने 2023-24 के बजट में प्रत्यक्ष कर संग्रह 18.23 लाख करोड़ रुपये से थोड़ा अधिक रहने का अनुमान लगाया है। यह पिछले वित्त वर्ष यानी 2022-23 के दौरान जुटाए गए 16.61 लाख करोड़ रुपये से 9.75 फीसदी अधिक है। सकल कर संग्रह में कॉरपोरेट आयकर (सीआईटी) और व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) की वृद्धि दर क्रमशः 7.30 फीसदी और 29.53 फीसदी रही।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2080
शक संवत् -1945, सूर्य- दक्षिणायने ,ऋतु- शरद
महावीर निर्वाण संवत् -2549,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 | सूर्योदय- 06-11, सूर्य अस्त- 17-54
भोग्य कलि वर्ष-426876
कलियुग संवत् -5124 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949124
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885124
दिशाशूल -- दक्षिण - जीरा खाकर घर से निकले
तिथि- त्रयोदशी - 19 -53- तक उपरान्त चतुर्दशी
मास - आश्विन कृष्ण पक्ष , गुरूवार 12 October
नक्षत्र - पूर्वाफाल्गुनी - 11- 35 - तक उ.फाल्गुनी
योग - शुक्ल - 09 - 29 - तक उपरान्त ब्रह्म
करण- गर - 06 -47 - तक उप- वणिज
विशेष:- तेरस का श्राद्ध,कल चौदस का श्राद्ध
व्रत -त्योहार - प्रदोष व्रत,मास शिवरात्रि

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	कन्या में	सिंह...	04-30 बजे
चंद्र-	सिंह में	कन्या..	06-35 बजे
मंगल	तुला में	तुला...	08-46 बजे
बुध-	कन्या में	वृश्चिक.	10-59 बजे
गुरु-	मेष में	धनु.....	13-06 बजे
शुक्र-	सिंह में	मकर..	14-56 बजे
शनि-	कुंभ में	कुंभ...	16-34 बजे
राहु-	मेष में	मीन...	18-10 बजे
केतु-	तुला में	मेष--	19-55 बजे
		वृष--	21-55 बजे
		मिथुन..	00-08 बजे
		कर्क...	02-19 बजे

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए ।

राहुकाल 13:31 से 14:59 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
शुभ.	06:11 - 07:38	शुभ	अमृत	17:54 - 19:27	शुभ
रोग	07:38 - 09:06	अशुभ	चंचल	19:27 - 20:59	शुभ
उत्पात	09:06 - 10:34	अशुभ	रोग	20:59 - 22:31	अशुभ
चंचल	10:34 - 12:03	शुभ	काल.	22:31 - 00:03	अशुभ
लाभ	12:03 - 13:31	शुभ	लाभ	00:03 - 01:34	शुभ
अमृत	13:31 - 14:59	शुभ	उत्पात	01:34 - 03:06	अशुभ
काल	14:59 - 16:27	अशुभ	शुभ	03:06 - 04:38	शुभ
शुभ.	16:27 - 17:54	शुभ	अमृत	04:38 - 06:11	शुभ

अजब देश की गजब कहानी, दुनिया का सबसे सस्ता तेल और सबसे महंगी रोटी

वेनेजुएलाः11 अक्टूबर (एजेसिंया)। क्या आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे ज्यादा महंगाई किस देश में है? इसका जवाब है वेनेजुएला। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि इस दक्षिण अमेरिकी देश के पास दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार है लेकिन यहां के लोगों को दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं हो रहा है। दुनिया के कुल क्रूड रिजर्व का 18.2% इसी देश की कोख में दबा पड़ा है। यहां एक लीटर पेट्रोल के लिए आपको केवल 0.02 डॉलर यानी 1.66 रुपये खर्च करने होंगे। इस देश में पेट्रोल पानी से भी सस्ता है। अगर आप वेनेजुएला में हैं तो 60 रुपये से भी कम में आपकी कार की टंकी फुल हो जाएगी। यह तो सिक्के का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि इस देश में खाद्य पदार्थों की कीमत दुनिया में सबसे ज्यादा है। हालत यह है कि देश के लाखों लोगों को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं है। बेहतर जिंदगी की तलाश में वेनेजुएला से लाखों लोग पलायन कर गए हैं। 2.82 करोड़ की आबादी वाले इस देश में खाने-पीने की चीजें इतनी महंगी हैं कि अमीर लोगों के लिए भी दो जून की रोटी जुटाना भारी पड़ रहा है। हालत यह है कि कई गरीब लोग तो पेट भरने के लिए कचरे में पड़ी जूठन को खाने के लिए मजबूर हैं। वेनेजुएला में फूड इनफ्लेशन यानी खाने पीने की चीजों की महंगाई 403 फीसदी है। यह दुनिया में सबसे अधिक है।

वेनेजुएला में महंगाई का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत में यह 9.94% फीसदी है। यानी भारत की तुलना में वेनेजुएला में खाने पीने की चीजों की कीमत करीब 40 गुना ज्यादा है। अब सवाल यह उठता है कि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर वेनेजुएला की यह हालत कैसे हुई। एक जमाने में वेनेजुएला की गणना दुनिया के अमीर देशों में होती थी। लेकिन पिछले कुछ साल से देश में खाने-पीने की चीजों की महंगाई बहुत ज्यादा बनी हुई है। राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने कर्ज के भुगतान के लिए बेतहाशा पैसे छापे।

ग्लोबल एनर्जी मॉनिटर का दावा, वैश्विक कोयला उद्योग में 2035 तक 10 लाख छंटनी की आशंका

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेसिंया)। दुनियाभर के उद्योग में 2050 तक करीब 10 लाख और 2035 तक चार लाख से अधिक खनन से जुड़ी नौकरियां खत्म होने की आशंका है। इसका मतलब है कि हर दिन करीब 100 श्रमिकों की नौकरी जा सकती है। चीन व भारत के इससे सबसे अधिक प्रभावित होने की आशंका है।

ग्लोबल एनर्जी मॉनिटर की रिपोर्ट के मुताबिक, नौकरियां जाने की प्रमुख वजह सस्ती पवन व ऊर्जा उत्पादन की ओर बाजार का बदलाव और कोयले के बाद अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के प्रबंधन के लिए योजना की कमी होगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन के शांक्सी प्रांत में 2050 तक वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक 2,41,900 नौकरियां जा सकती हैं। वहीं, कोल इंडिया में सदी के मध्य तक 73,800 नौकरियां खत्म हो सकती हैं। दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को कहा, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तहत दूरसंचार कंपनियों ने कुल 4,115 करोड़ में से 2,419 करोड़ का निवेश कर लिया है। वैष्णव ने कहा, पीएलआई योजना के तहत अब तक इन कंपनियों ने 34,516 करोड़ रुपये की बिक्री है। 7,600 करोड़ रुपये का निर्यात किया है और 17,753 लोगों को रोजगार दिया है। सरकार ने पिछले साल अक्तूबर में 42 कंपनियों को पीएलआई योजना के तहत चुना था। इन कंपनियों ने 2025-26 तक छह साल की योजना अवधि के दौरान कुल 4,115 करोड़ रुपये का निवेश करने, 2.45 लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त बिक्री पैदा करने और 44,000 से अधिक लोगों को रोजगार देने की प्रतिबद्धता जताई है।मेक इन इंडिया व पीएम के दृष्टिकोण का नतीजा 4जी व 5जी कनेक्टिविटी मॉड्यूल और डाटा कार्ड बनाने के लिए वीवीडीएन के उत्पादन लाइन के ऑनलाइन उद्घाटन के दौरान वैष्णव ने कहा, निर्माण प्रक्रिया जटिल है। युवा लड़कियों को जटिल मशीनों को चलाने का प्रशिक्षण मिल रहा है। यह मेक इन इंडिया और पीएम मोदी के दृष्टिकोण की सफलता है।

केंद्रीय बिजली मंत्री आरके सिंह ने सऊदी अरब के निवेशकों को भारत के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। मंत्री ने सऊदी अरब में वहां के कारोबारी जगत के लोगों की सभा में यह बात कही।

शेयर बाजार में लगातार दूसरे दिन तेजी

सेंसेक्स 393 अंक की तेजी के साथ 66,473 पर बंद निफ्टी में भी 121 अंक की बढ़त रही

मुंबई, 11 अक्टूबर (एजेसिंया)। शेयर बाजार में आज यानी, बुधवार (11 अक्टूबर) को लगातार दूसरे दिन तेजी देखने को मिली है। सेंसेक्स 393 अंक की तेजी के साथ 66,473 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 121 अंक की तेजी रही, यह 19,811 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 24 में तेजी और सिर्फ 6 में गिरावट देखने को मिली।

रियल्टी, ऑटो, इंफ्रा शेयरों में खरीदारी रही] जबकि एनर्जी, एफएमसीजी, फार्मा इंडेक्स बढ़त के साथ बंद हुए। आईटी और पीएसयू बैंकिंग शेयरों पर दबाव रहा। बुधवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 7 पैसे चढ़कर 83.18 रुपए पर बंद हुआ।

कच्चा तेल और सोना-चांदी के दामों में कमजोरी

कच्चे तेल की कीमतों पर दबाव देखने को मिल रहा है, बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 88 डॉलर प्रति बैरल के नीचे आ गया है, डब्ल्यूटीआई क्रूड भी 86.20 डॉलर प्रति बैरल के पास कारोबार कर रहा है।

सोने की कीमतों में हल्की सी नरमी है, लेकिन ये 1875 डॉलर प्रति आउंस के इर्द-गिर्द ही ट्रेड करता हुआ दिख रहा है, चांदी के भाव भी 22 डॉलर प्रति आउंस के ऊपर बने हुए हैं।

एशियाई बाजारों में दिख रही मजबूती

गीफ्ट निफ्टी 40 अंकों की मजबूती के साथ 19780 के ऊपर टिका हुआ है, बाकी एशियाई बाजारों में जापान का बाजार निक्केई बढ़त के साथ खुला है, फिलहाल ये 170 अंकों की तेजी के साथ ट्रेड कर रहा है, चीन का बाजार शंघाई कंपोजिट 0.50% मजबूत है। हॉन्ग कॉन्ग का बाजार हैंग सेंग 1.50% की मजबूती के साथ कारोबार कर रहा है। कोरिया का बाजार कोस्पी भी 2.50% ऊपर है। इससे पहले मंगलवार को यूरोप के बाजार करीब 2% की तेजी के साथ बंद हुए हैं।

कल बाजार में रही थी तेजी

इससे पहले कल यानी मंगलवार (10 अक्टूबर) को शेयर बाजार में तेजी देखने को मिली थी। सेंसेक्स 566 अंक की तेजी के साथ 66,079 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं, निफ्टी में भी 177 अंक की तेजी रही, यह 19,689 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 27 में तेजी और सिर्फ 3 में गिरावट देखने को मिली थी।

कमजोर मानसून के कारण चीनी निर्यात पर रोक लगा सकती है सरकार

नई दिल्लीः11 अक्टूबर (एजेसिंया)। दुनिया के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक देश भारत में मानसून के दौरान पर्याप्त बारिश नहीं होने और गन्ने की फसल प्रभावित से चीनी निर्यात पर प्रतिबंध लगाने की आशंका बढ़ गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार भारत अपने चीनी निर्यात पर प्रतिबंध लगा सकता है। अगर ऐसा होता है तो वैश्विक स्तर पर चीनी की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बताया कि भारत एक अक्टूबर से शुरू हुए नए सीजन के दौरान अपने चीनी निर्यात के शिपमेंट पर अंकुश लगा सकता है। जल्द ही इस संबंध में निर्णय लिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि घरेलू आपूर्ति में सुधार होने पर चीनी के निर्यात के लिए कोटा तय किया जा सकता है।भारत में पिछले पांच वर्षों में इस बार सबसे कमजोर मानसून रहा है। कृषि उत्पादन में किसी भी गिरावट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार पर अगले महीने और 2024 में चुनाव से पहले खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने का दबाव बढ़ेगा।

निर्यात प्रतिबंधों से बाजार में गिरावट आएगी और न्यूयॉर्क और लंदन में वायदा को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

पिछले महीने 14 विश्लेषकों, व्यापारियों और मिलमालिकों पर ब्लूमबर्ग की ओर से किए गए सर्वेक्षण में अधिकांश ने कहा कि भारत कम उत्पादन के कारण इस सीजन में चीनी के निर्यात पर रोक लगा सकता है।

मुकेश और नीता अंबानी ने की आईओसी अध्यक्ष की मेजबानी

मुंबई, 11 अक्टूबर (एजेसिंया)। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी और रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक एवं अध्यक्ष नीता अंबानी ने इंटरनेशनल ओलंपिक कमिटी के अध्यक्ष थॉमस बाच की अपने आवास पर मेजबानी की। बाच मुंबई में 15 से 17 अक्टूबर के बीच होने वाले आईओसी के 141वें सत्र में शामिल होने के लिए भारत में हैं।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के 141वें सत्र से पहले आईओसी अध्यक्ष

थामस बाच ने कहा कि भारत ने ओलंपिक खेलों की मेजबानी में 'बड़ी दिलचस्पी' दिखाई है और कहा कि खेलों के महाकुंभ में टी20 क्रिकेट को फिर से शामिल करने का यह सबसे सही माध्यम होगा। बाच ने कहा कि भारत के संभवतः 2036 में ओलंपिक की मेजबानी के लिए दावेदारी पेश करने की चर्चा है हालांकि आधिकारिक बोली प्रक्रिया अभी शुरू नहीं हुई है लेकिन इस संभावना पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,
आप अपने निराशावादी रवैये के कारण कोई प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। आपके लिए यह समझने का समय आ गया है कि चिंता ने आपकी सोचने की शक्ति को धीमा कर दिया है। उज्जवल पक्ष को देखें और आप अपने विवेक में एक निश्चित बदलाव देखेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होने से आपके लिए ज़रूरी चीज़ें ख़रीदना सुविधाजनक हो जाएगा।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,
उन पुरुषों की तरह व्यवहार न करें जो अपने सपनों को साकार करने और अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए अपना घर और स्वास्थ्य त्याग देते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार निश्चित है। अपने परिवार के सदस्यों के प्रति आपका प्रभुत्वपूर्ण रवैया केवल बेकार बहस को जन्म देगा और आलोचना ला सकता है।

मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,
कुछ आघातों का सामना करते समय आपको अत्यधिक साहस और शक्ति प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। आप अपने आशावादी रवैये से इन पर आसानी से काबू पा सकते हैं। मनोरंजन और विलासिता पर ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च न करें। एक सुखद और अद्भुत शाम के लिए आपके घर पर मेहमानों की भीड़ उमड़ेगी।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,
मेलजोल का डर आपको परेशान कर सकता है। इसे दूर करने के लिए अपने आत्मसम्मान को प्रोत्साहित करें। आर्थिक स्थिति ख़राब होने के कारण कुछ महत्वपूर्ण कार्य रुक जायेंगे। नया रिश्ता लंबे समय तक चलने वाला और बेहद फायदेमंद रहेगा।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,
गर्दन/पीठ में लगातार दर्द से पीड़ित होने की संभावना। खासकर जब इसके साथ सामान्य कमजोरी भी हो तो इसे नजरअंदाज न करें। आज आराम बहुत महत्वपूर्ण रहेगा. वित्तीय समस्याएँ आपकी रचनात्मक सोचने की क्षमता को नष्ट कर देती हैं। उचित संवाद और सहयोग से जीवनसाथी के साथ रिश्ते बेहतर होंगे।

कन्या टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,
आज एक विशेष दिन है क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य आपको कुछ असाधारण करने में सक्षम बनाएगा। आज किया गया निवेश आपकी समृद्धि और वित्तीय सुरक्षा में वृद्धि करेगा। आज आपको निराशा महसूस होगी जब आपको पता चलेगा कि जिस पर आपने हमेशा भरोसा किया है।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,
हवाई महल बनाने में अपना समय बर्बाद न करें। बल्कि कुछ सार्थक करने के लिए अपनी ऊर्जा बचाकर रखें। अगर आप अपने पत्ते अच्छे से खेलते हैं तो आज आप कुछ अतिरिक्त नकदी कमाएंगे। रिश्तेदारों और दोस्तों से अप्रत्याशित उपहार और उपहार। पिछली ख़ुशनुमा यादें आपको व्यस्त रखेंगी।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,
यदि आपका बच्चा परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है तो उसे डांटें नहीं। आपको उसे अगली बार अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आपको याद रखना चाहिए कि सभी एक जैसे नहीं होते। कुछ अतिरिक्त पैसे कमाने के लिए अपने नवोन्मेषी विचार का उपयोग करें।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे
आपका सबसे प्यारा सपना साकार होगा. लेकिन अपने उत्साह को क़ाबू में रखें, क्योंकि बहुत ज़्यादा ख़ुशी कुछ परेशानियाँ खड़ी कर सकती है। वित्तीय कठिनाइयाँ आलोचना और वाद-विवाद का कारण बन सकती हैं - उन लोगों को 'न' कहने के लिए तैयार रहें जो आपसे बहुत ज़्यादा उम्मीदें रखते हैं।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी
अपने वज़न पर नज़र रखें और ज़्यादा खाने से बचें। आपके परिवार में किसी सदस्य के बीमार पड़ने से आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि इस समय आपको पैसों से ज्यादा उनके स्वास्थ्य की चिंता करनी चाहिए। दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मौज-मस्ती करें।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,
परिवार के कुछ सदस्य अपने ईर्ष्यालु व्यवहार से आपको परेशान कर सकते हैं। लेकिन अपना आपा खोने की ज़रूरत नहीं है अन्यथा स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती है। याद रखें जिसे ठीक नहीं किया जा सकता उसे सहना होगा। आज किसी करीबी रिश्तेदार की मदद से आप अपना कारोबार अच्छा कर सकते हैं।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची
गैस की समस्या वाले मरीजों को तैलीय और वसायुक्त आहार से बचना चाहिए क्योंकि इससे उनकी बीमारी बढ़ सकती है। जो लोग लंबे समय से आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे उन्हें आज कहीं से धन की प्राप्ति हो सकती है, जिससे जीवन की कई परेशानियां पल भर में खत्म हो जाएंगी।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

पटवारी का 15 लाख, कॉन्स्टेबल का 8 लाख

एमपी में कम्प्यूटर हैक कर पेपर सॉल्व, पहले एग्जाम में 32 फिर 92 नंबर

भोपाल, 11 अक्टूबर (एक्सक्लूसिव डेस्क)। सवाल था, मध्य प्रदेश में जिले कितने हैं? पटवारी परीक्षा के रिजल्ट में थर्ड टॉपर पूनम राजावत इसका जवाब नहीं दे पातीं। हांफने सी लगती हैं, उनकी आवाज बार-बार गले में फंसती है, लेकिन जवाब बाहर नहीं आ पाता। ये वीडियो वायरल हुआ और भर्ती रुक गई। एक ही कॉलेज से 7 टॉपर थे, बवाल हुआ, और जांच शुरू हो गई।

एक कहानी अभिषेक यादव की भी है। सीएम शिवराज सिंह की बुधनी विधानसभा के सतराना गांव के रहने वाले हैं। भोपाल के जनता क्वार्टर के 10 बाई 10 के कमरे में 5 लोगों के साथ रहते हैं, 3000 रुपए रेंट है। शायद सालों पहले इस कमरे में पीले रंग की पुताई हुई होगी, अब दीवारों पर सिर्फ सीलन है।

अभिषेक 5 साल से सरकारी नौकरी के लिए होने वाले एग्जाम दे रहे हैं। पटवारी में सिलेक्शन हो गया, लेकिन टॉपर कांड की वजह से भर्ती नहीं मिली। पिता किसान हैं, घर में 1 एकड़ जमीन है, कुछ जमीन हर साल खोट (किराए) पर लेते हैं। किसानी से जो मिलता है, उससे घर चलता है। पिता, अभिषेक को हर महीने 500-1000 रुपए ही भेज पाते हैं। अभिषेक मॉल-शोरूम में काम करके खर्चा निकालते हैं।

फर्जी टॉपर्स हों या अभिषेक, दोनों सिस्टम के शिकार

एमपी में एक तरफ फर्जी टॉपर्स हैं, जो सवालों के घेरे में हैं। दूसरी तरफ अभिषेक यादव जैसे हजारों-लाखों स्टूडेंट हैं, जो जीतोड़ मेहनत और सिलेक्शन के बावजूद सीलन भरे कमरों में जिंदगी बिता रहे हैं। इस पूरी बहस में जो सवाल गायब है, वो ये कि आखिर ये फर्जी टॉपर्स, सॉल्वर, एजेंट आते कहां से हैं, ये किस सिस्टम की देन हैं।

क्या एमपी में भर्ती परीक्षाएं कराने वाली संस्था व्यापमं का नाम बदलकर मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल (एमपी-ईएसबी) कर देने से सब ठीक हो गया है?

मध्य प्रदेश में हर साल औसत 6.5 लाख स्टूडेंट 12वीं पास करते हैं, 4 लाख स्टूडेंट्स ग्रेजुएट होते हैं। एमपी के रजिस्टर्ड 39 लाख बेरोजगार सरकारी नौकरी के लिए ईएसबी से आस लगाते हैं। पहले वैकेंसी का इंतजार, वैकेंसी आई भी, तो सीट कम होने से जी-तोड़ कॉम्पिटिशन, परीक्षा हुई तो कभी पेपर लीक, सॉल्वर कांड या फिर व्यापमं जैसे घोटाले। सिलेक्शन के बाद भी सालों का इंतजार।

90% नंबर का वादा, आ गए तो एग्जाम सेंटर के बाहर कैश पेमेंट

पटवारी बनना है, 15 से 20 लाख रुपए लगेंगे। कॉन्स्टेबल के लिए 8 से 12 लाख रुपए और 6 से 10 लाख रुपए में फॉरेस्ट गार्ड की नौकरी पक्की हो जाएगी। एमपी में सरकारी नौकरियों के रेट फिक्स हैं।

पहले एजेंट से डील होगी, ओरिजिनल कैंडिडेट ही पेपर देने एग्जाम हॉल जाएगा। ऑनलाइन एग्जाम के वक्त उसे सिर्फ बैठना है और ड्रामा करना है, ऑन्सर खुद-ब-खुद सही टिक हो जाएंगे। कंप्यूटर पहले से हैक होगा, यानी रिमोट से कोई और चला रहा होगा। 90% नंबर आने का वादा होगा, आए तो एग्जाम सेंटर के बाहर खड़े एजेंट को पैसा देना होगा। वो भी कैश।

कहने को एमपी में सरकारी भर्ती की परीक्षाएं ईएसबी करवाता है, लेकिन छानबीन में पता चला कि एग्जाम कराने का ये पूरा सिस्टम प्राइवेट एजेंसियां चला रही हैं। 2021 से लेकर 2023 तक जितने भी एग्जाम कर्मचारी चयन मंडल ने करवाए, सभी में कुछ न कुछ गड़बड़ियां सामने आईं।

एजेंट ने रिपोर्टर से डील की, 15 लाख में टीचर बनवाने का वादा

इस सिस्टम की छानबीन की तो गड़बड़ियों में ज्यादातर के तार ग्वालियर-चंबल से जुड़ने लगे। एनएचएम में पेपर ग्वालियर से लीक हुआ। पटवारी में 10 में से 7 टॉपर ग्वालियर के कॉलेज के थे। कृषि विस्तार अधिकारी के 10 टॉपर एक ही कॉलेज से थे, वो भी ग्वालियर का ही था। ग्वालियर के पास सबलगढ़ में रहने वाले शिवम और हरिओम शर्मा फर्जीवाड़े से जुड़े हुए हैं।

इनवेस्टिगेशन के लिए टीम सबसे पहले ग्वालियर पहुंची। कोचिंग इंस्टीट्यूट मालिकों और स्टूडेंट्स से बात की तो बड़ी आसानी से एक एजेंट का नंबर मिल गया। एजेंट ने फोन पर बताया कि वो कई सालों से पटवारी, कॉन्स्टेबल समेत कई एग्जाम्स में कैंडिडेट्स की डील करवा चुका है। पहले वो मिलने के लिए तैयार हो गया, लेकिन कुछ देर बाद फोन करके बोला मिलूंगा नहीं जो बात करनी है फोन पर करो। बाकी का काम एग्जाम का फॉर्म भरने के बाद देखेंगे। एजेंट से बातचीत के बाद हम एक ऐसे स्टूडेंट की तलाश में निकले, जिसने कभी भी किसी एजेंट से डील की हो। सोर्स के जरिए कमीशन देने वाले एक स्टूडेंट से बात हुई। हमारा सोर्स डील करने वाले स्टूडेंट का दोस्त था। उसी ने कॉल किया। दोनों ग्वालियर या चंबल एरिया के रहने वाले हैं। भर्ती के फर्जीवाड़े में गांव-कस्बे के लड़के ज्यादा इन्वॉल्व हैं। ज्यादातर डील किसी रिश्तेदार के जरिए होती हैं। कोई जान-पहचान वाला मां-बाप को बच्चे के सिलेक्शन का ऑफर देता है। छानबीन में सामने आया कि ग्वालियर से करीब 100 किमी दूर सबलगढ़ गांव से कई कैंडिडेट्स का पैसे देकर सिलेक्शन हुआ है।

इंदौर, 13 जुलाई 2023

15 मार्च से 26 अप्रैल, 2023 तक हुई पटवारी भर्ती परीक्षा की टॉपर पूजा शर्मा इसी गांव की हैं। सबलगढ़ के एक स्टूडेंट ने हमें पूरी कहानी बताई। उसने ये भी दावा किया कि एग्जाम फ्रॉड का ये पूरा सिस्टम पूजा शर्मा के दो भाई चला रहे हैं, इसलिए उसे तो टॉप करना ही था। 'मैं सबलगढ़ गांव में रहता हूं। 2023 पटवारी एग्जाम में टॉप करने वाली पूजा शर्मा मेरे ही गांव से है। उसने पहली बार एग्जाम दिया और टॉप कर लिया। पूजा के दो भाई हैं शिवम और हरिओम शर्मा। यही दोनों एग्जाम में सिलेक्ट करवा रहे हैं। मुझे भी ऑफर दिया था।'

'मुझे बताया था कि दो तरह से सिलेक्शन होता है। पहला क्लोन के जरिए, इसमें बायोमेट्रिक्स बदल देते हैं और असली कैंडिडेट की जगह कोई दूसरा आदमी एग्जाम देता है। उसे सॉल्वर कहते हैं। इसमें पकड़े जाने का रिस्क बहुत है, इसलिए ये तरीका अब कम इस्तेमाल होता है।'

'दूसरा तरीका है कम्प्यूटर के जरिए। इसमें सिस्टम को रियल टाइम में रिमोट एक्सेस पर लिया जाता है और ऑन्सर की से पूरा पेपर सॉल्व हो जाता है। इसमें कोई रिस्क नहीं है। पटवारी एग्जाम में भी इसी तरह फर्जीवाड़ा हुआ है।' 'मैंने रिमोट एक्सेस से सिलेक्शन करवाने की बात कही थी। पैसे की बात आई, तो उन्होंने कहा कि तुम पहचान के हो, इसलिए 4-5 लाख रुपए कम लेंगे। अगर तुम दूसरे लोगों को लाते हो, तो तुम्हें 4 से 5 लाख रुपए कमीशन मिलेगा।'

'मैं इन लोगों से इसलिए बात कर रहा था कि इनका सच सामने आ जाए। बाद में उन्हें मेरे ऊपर शक हो गया। इसलिए कहने लगे कि जो कॉलेज तुम्हें मिला है, वहां हमारी सेटिंग नहीं है, तुम्हारा काम नहीं हो पाएगा।' इस स्टूडेंट से हमारी मुलाकात ग्वालियर में हुई। हमने बातचीत रिकॉर्ड भी की, लेकिन इस शर्त पर कि उसका नाम नहीं लिखा जाएगा और रिकॉर्डिंग में आवाज बदली जाएगी। स्टूडेंट ने आगे बताया कि 2016 के पहले हमारे एरिया में राजेंद्र रावत और मुनीस रावत नाम के लोग ये काम करते थे। राजेंद्र चनौटा गांव का रहने वाला है और मुनीस बैरई में रहता है। इन्हीं दोनों ने ये सब शुरू किया था। ऑनलाइन सिस्टम होने के बाद ये लोग आगरा के एक गैंग की मदद से सिस्टम हैक करने लगे। ये सेटिंग वाले सेंटर में ही हो पाता है। इसलिए कॉलेज ठेके पर लिए जाते हैं और वहां एग्जाम सेंटर बनाया जाता है। एग्जाम वाले दिन कॉलेज ठेके पर लेने वाला आदमी ही बॉस होता है। उसी के जरिए पूरा नेक्सस काम करता है। शिवम और हरिओम से कई बार बात करने की कोशिश की, लेकिन उनके सभी नंबर पटवारी टॉपर घोटाले के बाद से ही बंद हैं। एक एग्जाम में 30 से 50 नंबर, अगले में 90+, रिजल्ट ही सिस्टम पर सवाल खड़े कर रहा। 2017 में जेल डिपार्टमेंट, फॉरेस्ट गार्ड, स्टेनोग्राफर, स्टेनोटाइपिस्ट, डेटा एंट्री ऑपरेटर, पटवारी के एग्जाम्स हुए थे। इनमें 30 से 50 नंबर लाने वाले कैंडिडेट कुछ महीने बाद इन्हीं एग्जाम्स में टॉप कर गए। एकदम से इतने नंबर बढ़ना भी सवाल खड़े कर रहा है। एक और तथ्य ये है कि, कर्मचारी चयन मंडल की वेबसाइट पर पहले कैंडिडेट्स का 5 साल तक का रिजल्ट रहता था। कैंडिडेट का नाम, पिता का नाम और जन्मतिथि से ये रिजल्ट पता किया जा सकता था। पटवारी भर्ती परीक्षा का रिजल्ट आने से पहले मई, 2023 में पुराना डेटा वेबसाइट से हटा दिया गया।

2018 में ग्रुप 4 भर्ती में कैंडिडेट्स का पुराना रिजल्ट निकाल लिया गया था। 2021 में भी पुराना रिजल्ट मिला था। इसके बाद इतनी कॉन्ट्रोवर्सी हुई कि एग्जाम कराने वाली एजेंसी एनएसईआईटी को टर्मिनेट कर दिया गया। सिर्फ पटवारी घोटाले की भी बात करें तो जांच रिपोर्ट अभी तक नहीं आ पाई है। जांच हाईकोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस राजेंद्र कुमार वर्मा कर रहे हैं। रिपोर्ट 31 अगस्त को आनी थी। इस साल मार्च में हुई पटवारी परीक्षा में करीब 10 लाख कैंडिडेट शामिल हुए थे, 8,600 चुने गए, लेकिन अब फिर अभिषेक यादव की तरह सबका भविष्य अधर में है। बीते दिनों ये स्टूडेंट भर्ती की मांग लेकर प्रदर्शन करने भोपाल आए तो पहले पुलिस ने इन्हें पीटा, फिर 50-60 के ऊपर केस भी दर्ज कर लिया गया। फिलहाल जॉइनिंग का इंतजार जारी है।

बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की बस पर भीड़ ने किया था पथराव

अब तीन हुए गिरफ्तार

रांची, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। रांची में आयोजित शौर्य जागरण यात्रा से हजारीबाद लौट रहे बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के बस पर रविवार को भीड़ ने पथराव कर दिया था। इस हादसे में 10 लोग घायल हो गए थे। अब पुलिस ने इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। हजारीबाग के ग्रामीण डीएसपी राजीव कुमार ने बताया कि पेलावल और कटकमसांडी पुलिस द्वारा की गई छापेमारी के दौरान गिरफ्तारियां की गईं। हजारीबाग नगर निगम के वार्ड आयुक्त सहित तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

बता दें, यह घटना हजारीबाग के पास पेलावल इलाके में एक मस्जिद के पास रात के 8:45 मिनट में हुई थी। हिंसा को लेकर 271 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था।

इससे पहले, पथराव करने वाले एक समुदाय के सदस्यों ने बताया था कि बस मस्जिद के सामने रुकी और इस दौरान यात्रियों ने धार्मिक नारे भी लगाए थे। एसपी ने दावा किया कि समय से पुलिसबलों के पहुंचने के कारण बड़ा विवाद होने से टल गया। कानून को अपने हाथों में लेने वाले लोगों को पुलिस ने खदेड़ दिया और बस को अपने गणतव्य तक जाने के लिए आगे बढ़ाया।

विश्व हिंदू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल ने अगले साल जनवरी में आयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन से पहले लोगों को समारोह के लिए आमंत्रित करने के लिए रविवार को रांची में चार शौर्य जागरण यात्राएं निकाली थीं। विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के हजारों कार्यकर्ताओं ने इस यात्रा में हिस्सा लिया था। इस पथराव के बाद झारखंड जनाधिकार महासभा ने झारखंड मुख्य सचिव, डीजीपी और रांची के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को रैलियों पर कड़ी नजर रखने का अनुरोध किया था।

बीजेपी की वॉल पेंटिंग मिटा रहे निगम कर्मियों की पिटाई

भिलाई, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दुर्ग जिले में आचार संहिता लागू होने के बाद निगम अमला चुनावी बैनर-पोस्टर और स्लोगन हटाने का काम कर रहा है। दीवारों से जब कर्मचारियों की टीम बीजेपी की वॉल पेंटिंग हटा रही थी, तो भाजपा समर्थकों ने उनकी पिटाई कर दी। घटना से नाराज निगम कर्मियों ने भिलाई नगर थाने में केस दर्ज कराया है। मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। भिलाई नगर निगम के जोन-5 में प्रभारी स्वच्छता निरीक्षक सागर दुबे ने बताया कि जोन कमिश्नर के आदेश पर मंगलवार शाम को सेक्टर 7 ओवर ब्रिज के नीचे चुनाव प्रचार की वॉल पेंटिंग को मिटाया जा रहा था। तभी दो लोग नशे में आए और उनसे बहस करने लगे। इनका आरोप है कि कर्मचारी सिर्फ बीजेपी की वॉल पेंटिंग हटा रहे हैं। जबकि कांग्रेस के बैनर-पोस्टर को नहीं हटाया जा रहा। सागर दुबे ने कहा कि आरोपी शंकर और उसके साथी ने कर्मचारियों के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। जिसका विरोध करने पर उन्होंने लड़कों को बुला लिया। लड़के बेस बल्ला, हॉकी स्टिक, लाठी और चाकू लेकर पहुंच गए। निगम कर्मचारियों के साथ धक्का-मुक्की करते हुए मारपीट की। इतना ही नहीं उन्होंने धमकी दी कि अगर वो लोग दोबारा सेक्टर-7 में दिखे तो उन्हें और मारेंगे।

जोन-5 के सहायक राजस्व निरीक्षक शशांक शेखर सिंह ने सुरक्षा की गुहार लगाई है। उनका कहना है कि वो लोग निष्पक्ष रूप से सभी पार्टी का पोस्टर बैनर और वॉल पेंटिंग को उतार रहे हैं।

भाजपा के ट्वीट पर सीएम भूपेश का पलटवार

कहा- कैंडी क्रश मेरा फेवरेट है, मैं गेड़ी भी चढ़ूंगा, गिल्ली-डंडा भी खेलूंगा

रायपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है। अब कुछ ही दिन शेष बचे हैं। ऐसे में प्रदेश की सियासत में एक दूसरे को घेरने और निशाना साधने का काम जोरों पर है। मंगलवार की देर रात तक कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक चली है। इस बीच सीएम भूपेश बघेल की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही है। इसमें वो कैंडी क्रश गेम खेलते हुए दिख रहे हैं। इसके बाद बीजेपी ने उन पर निशाना साधा। मामले में सीएम भूपेश बघेल ने खुद ही ट्वीट कर पलटवार किया है।

सीएम ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि 'पहले भाजपा को ऐतराज था कि मैं गेड़ी क्यों चढ़ता हूं, भौंरा क्यों चलाता हूं, गिल्ली डंडा क्यों खेलता हूं, प्रदेश में छत्तीसगढ़िया ओलंपिक क्यों हो रहे हैं?

कल एक बैठक से पहले फ़ोटो मिल गई जिसमें मैं कैंडी क्रश खेल रहा हूं। अब भाजपा को उस पर ऐतराज है। दरअसल, उनको मेरे होने पर ही ऐतराज है। पर यह तो छत्तीसगढ़ के लोग हैं जो तय करते हैं कि कौन रहेगा कौन नहीं रहेगा। मैं गेड़ी भी चढ़ूंगा, गिल्ली डंडा भी खेलूंगा। कैंडी क्रश भी मेरा फेवरेट है। ठीक ठाक लेवल पार कर लिया हूं। वो भी जारी रहेगा। बाकि छत्तीसगढ़ को पता है कि किसे आशीर्वाद देना है।

सीएम भूपेश बघेल का पलटवार

कांग्रेस मीडिया संचार विभाग के चेयरमैन सुशील आनंद शुक्ला ने बीजेपी के ट्वीट पर पलटवार करते हुए लिखा कि 'आप गेम खेलते-खेलते भाजपा का गेम बजा देंगे।'

लेडियानी बेदी में दफन हुए चौथे आर्चबिशप

रांची, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। संत मरिया महागिरजाघर में आर्चबिशप कार्डिनल तेलेस्फोर चौथे आर्चबिशप हैं, जिन्हें लेडियानी बेदी में दफनाया जा रहा है। बिशप को अंतिम विदाई देने कई लोग शामिल हुए हैं। माननीय राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन ने आज डॉ. कामिल बुल्के पथ, राँची स्थित संत मारिया गिरिजाघर जाकर कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी कार्डिनल तेलेस्फोर को अंतिम विदाई दी।

आज राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार हो रहा है। कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो की इच्छा थी कि उन्हें टेरेसा की मूर्ति के नीचे यहीं दफनाया जाए। ब संत मरिया गिरजाघर बना तो महिलाओं के लिए अलग से एक और जगह बनायी गयी। ईसाई महिलाएं गिरजाघर के आगे बांयीं ओर बैठतीं थी, इसलिए उस जगह को आज तक लेडियानी बेदी कहा जाता है। इससे पहले 30 अप्रैल 1933 को बिशप वानहूक एसजे, 24 जुलाई 1960 को बिशप निकोलस कुजूर और 21 मई 1993 को आर्चबिशप पीयूष केरकेट्टा को संत मरिया महागिरजाघर में दफनाया गया है। आज र्चबिशप कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो चौथे आर्चबिशप हैं जिन्हें संत मरिया महागिरजाघर में ससम्मान दफनाया जा रहा है। विशेष गिरजाघर की सेवा करते थे, वही दफनाये योग्य माने जाते हैं।

चुनाव प्रशिक्षण में लापरवाही बरतने पर छह अधिकारी-कर्मचारियों को नोटिस

कलेक्टर ने की कार्रवाई

मुंगेली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। मुंगेली जिले में विधानसभा निर्वाचन 2023 के मद्देनजर जिला मुख्यालय स्थित स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल दाउपारा में मतदान दलों को दिए जा रहे प्रशिक्षण का कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी राहुल देव ने आज निरीक्षण किया। उन्होंने वहां प्रशिक्षण के संबंध में जानकारी ली और अधिकारी-कर्मचारियों से निर्वाचन प्रक्रिया संबंधी सवाल पूछे। संतोषजनक जवाब नहीं देने व प्रशिक्षण कार्य को गंभीरता से नहीं लेने पर छह अधिकारी-कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने सभी अधिकारी-कर्मचारियों को प्रशिक्षण को गंभीरतापूर्वक लेने के तथा चुनाव प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया। उप जिला निर्वाचन अधिकारी प्रवीण तिवारी ने बताया कि स्वामी आत्मानंद स्कूल में 16 कक्षों में 560 अधिकारी-कर्मचारी तथा शासकीय हाईस्कूल करही में आठ कक्षों में 280 अधिकारी-कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण 12 अक्टूबर तक चलेगा। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रभाकर पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर मेनका प्रधान और संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

पापा के बलिदान की कीमत नहीं

भीमा मंडावी की बेटी बोली-पार्टी के लिए पिता ने जान दी, अब नेताओं ने मां का टिकट काटा

दंतेवाड़ा, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। मेरे पिता ने पार्टी के लिए अपना बलिदान दे दिया। पापा के जाने के बाद हमें अपने कल का पता नहीं था। मम्मी ने हमें संभाला, पापा के अधूरे सपने को पूरा करने पार्टी में पापा की जगह ली। लेकिन, अब पार्टी ने मम्मी को टिकट न देकर पिता के बलिदान को व्यर्थ कर दिया है। मैं पार्टी के हर नेता से, कार्यकर्ताओं से पूछना चाहती हूं क्या पार्टी में मेरे पापा के बलिदान की कोई कीमत नहीं?'

यह कहना है दंतेवाड़ा के दिवंगत भाजपा नेता भीमा मंडावी की बेटी दीपा मंडावी का। दीपा ने सोशल मीडिया पर एक मार्मिक वीडियो पोस्ट किया है। मां ओजस्वी भीमा मंडावी को टिकट नहीं मिलने की वजह से बेटी ने पार्टी पर नाराजगी जाहिर की है।

पिता का सपना पूरा करने राजनीति में आई मां-दीपा

इस वीडियो के माध्यम से दीपा कह रही हैं कि, मां ओजस्वी भीमा मंडावी को भाजपा ने विधानसभा टिकट न देकर पिता के बलिदान को व्यर्थ किया है। पिता के कई अधूरे सपने थे, जिसे पूरा करने के लिए मां ने राजनीति में कदम रखा, पार्टी ज्वाइन की। दंतेवाड़ा की जनता आज भी मेरे पापा को चाहती है।

बता दें कि भीमा मंडावी के 4 बच्चे हैं। इनमें दीपा मंडावी सबसे बड़ी है जो अभी फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रही है। दीपा से छोटा एक भाई और 2 बहन हैं। अब उसका यह वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। साल 2019 को भीमा मंडावी लोकसभा चुनाव का प्रचार-प्रसार कर बचेली से नकुलनार के रास्ते घर लौट रहे थे। इसी बीच कुआकोंडा थाना क्षेत्र के श्यामगिरी में नक्सलियों ने आईईडी ब्लास्ट कर उनकी कार को उड़ा दिया था। जिसमें विधायक भीमा मंडावी समेत उनकी गाड़ी में सवार 3 जवान और एक वाहन चालक की मौत हुई थी। साल 2008 के चुनाव में भाजपा ने दंतेवाड़ा विधानसभा सीट से कांग्रेस के महेंद्र कर्मा के सामने पंचायत सचिव भीमा मंडावी को उतारा था। भीमा ने यह चुनाव जीत लिया था। फिर साल 2013 में झीरम में नक्सलियों ने महेंद्र कर्मा की हत्या कर दी थी।

फिर विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने महेंद्र कर्मा की पत्नी देवती कर्मा को चुनाव में खड़ा किया। उनके सामने भाजपा से भीमा मंडावी थे। हालांकि, इस चुनाव में भीमा मंडावी को हार का सामना करना पड़ा था।

साल 2018 के विधानसभा चुनाव में देवती कर्मा और भीमा फिर से आमने-सामने थे। इस चुनाव में भीमा मंडावी ने देवती कर्मा को महज 2100 वोटों से परास्त किया था। 2019 में नक्सलियों ने भीमा मंडावी की हत्या की तो उपचुनाव हुआ।

उपचुनाव में भाजपा ने भीमा की पत्नी ओजस्वी को चुनावी मैदान में उतारा था। उनके सामने कांग्रेस की देवती कर्मा थीं। इस उपचुनाव में देवती कर्मा 11 हजार 331 से अधिक मतों से जीत गई और दंतेवाड़ा सीट पर कब्जा किया।

अब 2023 के चुनाव में भाजपा ने इस सीट से चेहरा बदला और चैतराम अटामी को अपना प्रत्याशी बनाया है। दो दिन पहले पार्टी ने चैतराम अटामी के नाम की घोषणा की है। इधर, अब ओजस्वी के समर्थकों में नाराजगी भी है।

हेमंत सोरेन की याचिका पर अगली सुनवाई 13 अक्टूबर को

हाईकोर्ट में वकील ने पूछा ईडी साफ करे समन सीएम को या आरोपी को, अब ईडी रखेगी अपना पक्ष

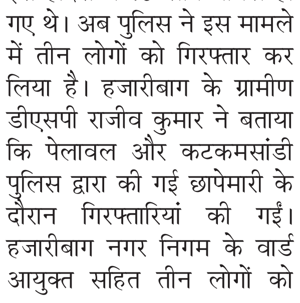

रांची, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के समन के खिलाफ दायर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की याचिका पर आज हाईकोर्ट में सुनवाई है। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र और जस्टिस आनंद सेन की बेंच में वरीय वकील पी चिदंबरम और वकील पीयूष चित्रेश ने अपना पक्ष रखा है। बहस के दौरान सीएम की ओर से कहा गया कि मेरे खिलाफ कोई आपराधिक मामला नहीं बनता है। ना ही ईडी ने कोई प्राथमिक इस मामले में दर्ज की है। ऐसे में एजेंसी के समन से यह साफ नहीं हो पा रहा है कि यह समन एक मुख्यंमत्री के तौर पर किया जा रहा है या फिर एक आरोपी के तौर पर। ईडी का यह समन इस आधार पर ही सही नहीं है। इस मामले में ईडी तरफ से असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया (एएसजी) एसवी राजू पक्ष ने पक्ष रखते हुए कहा, प्रिडिकेट ओफेंस का मामला है। ईडी की धारा 50 और 63 को चुनौती दी गई, जिसे विजय मदनलाल चौधरी के केस में सुप्रीम कोर्ट तय कर चुका है। अब इस मामले में कोर्ट ने अगली सुनवाई की तारीख 13 अक्टूबर को दी है। ईडी की ओर 13 अक्टूबर को बहस की जाएगी।

इस सुनवाई के बाद हाईकोर्ट तय करेगा कि हेमंत सोरेन को भेजा गया समन सही और नियम संगत है या नहीं। इस मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने यह यह भी अपील की है कि ईडी की कार्रवाई पर रोक लगाई जाए। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उस कानून के आधार को भी चुनौती दी है जिसके तहत हेमंत सोरेन से पूछताछ होनी है। ध्यान रहे कि ईडी ने जमीन घोटाला मामले में ईडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को अबतक पांच बार समन जारी कर दिया है। मुख्यमंत्री ने इस मामले में ईडी को पत्र भेजकर कहा है कि मामला कोर्ट में है।

संघर्ष के अंत तक नहीं बचेगी हमास की ताकत

इस्राइली सेना ने दी चेतावनी

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। आतंकी संगठन हमास की ओर से इस्राइल पर किए गए हमले के बाद तनाव बढ़ता जा रहा है। दोनों तरफ से संघर्ष अब तक 2100 से ज्यादा जानें जा चुकी हैं। इस्राइल के रक्षा बल (आईडीएफ) के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल जोनाथन कॉनरिकस का कहना है कि इस्राइल में हमास के हमलों से 1200 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। वहीं 27 सौ से अधिक लोग घायल हुए हैं।

घायलों की संख्या बढ़ती जा रही

जोनाथन ने बताया कि हमास द्वारा इस्राइल पर किए हमले चार दिन से जारी हैं। संघर्ष में मरने वालों की संख्या 12 सौ से अधिक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि घायलों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आईडीएफ के प्रवक्ता ने कहा कि गाजा बॉर्डर पर तीन लाख से अधिक सैनिकों को तैनात किया गया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि संघर्ष खत्म होने तक हमास के पास कोई ताकत नहीं बचेगी।

तीन लाख जवानों को देश की रक्षा का जिम्मा

सोशल मीडिया एक्स पर प्रवक्ता ने लाइव आकर कहा कि हमने हथियारों से लैस जवानों को सीमा की सुरक्षा में लगा दिया है। अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े तीन लाख जवानों को देश की रक्षा का जिम्मा सौंपा है। वे लोग गाजा पट्टी के पास पहुंच गए हैं और आतंकियों के हमलों को असफल करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए इस्राइल सरकार तैयार है कि संघर्ष के अंत में हमास के पास कोई सैन्य क्षमता नहीं बचेगी, जिससे वह इस्राइली नागरिकों को धमकी दे सकें।

आवासीय इमारत नहीं, हमास का ठिकाना था

उन्होंने इस्राइल में मौतों की बढ़ती संख्या के पीछे का कारण भी बताया और दावा किया कि उन्हें हमास के हमले में मारे गए लोगों के शव मिल रहे हैं। आईडीएफ ने गाजा में एक इमारत पर बम से किए हमले को लेकर भी स्पष्टीकरण दिया। दरअसल, इसे आवासीय इमारत बताया जा रहा था। उन्होंने कहा, 'जिस इमारत पर हमला किया गया है उसे रिहायशी इमारत बताया जा रहा है, जबकि वहां हमास के आतंकियों का ठिकाना था। वह नागरिकों के घरों, कार्यालयों और मुख्यालयों का उपयोग हमले की साजिश रचने के लिए कर रहे हैं।

इससे पहले आज हमास पर अपने हवाई हमले को जारी रखने हुए आईडीएफ ने कहा कि उसने गाजा पट्टी के अल फुरकान में आतंकवादी समूह के 200 से अधिक ठिकानों को निशाना बनाया है। वहीं, एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि हमास द्वारा किए गए हमले के पीछे का मास्टमाइंड दइफ है। दइफ के पिता के घर पर भी हमले किए गए हैं। आतंकी संगठन हमास की ओर से इस्राइल पर किए गए हमले का असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। जहां पश्चिमी देशों ने अब इस संघर्ष में इस्राइल का साथ दिया है, तो वहीं पश्चिमी एशिया के कई देशों ने हमास के कदम का समर्थन किया है। इस बीच दोनों तरफ से संघर्ष अब तक 2100 से ज्यादा जानें जा चुकी हैं। जहां इस्राइल में हमास के हमलों से 1200 से ज्यादा की मौत हुई है तो वहीं गाजा पट्टी में इस्राइली वायुसेना के वार से 900 से ज्यादा लोग जान गंवा चुके हैं।

इजराइल की सड़कों पर लाशें

हमास के हमले में नीर ओज में मौजूद लोगों में से 50% खत्म, 4 जगहों पर कत्लेआम की पूरी कहानी

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। 7 अक्टूबर 2023, एक आम दिन की तरह ही जब इजराइल के लोग सुबह सोकर उठते हैं, तो देश का नजारा बदल चुका था। हमास ने सुबह करीब 6 से 6:30 के बीच रॉकेट से इजराइल पर हमले शुरू कर दिए थे। इस बीच इजराइल का बॉर्डर पार करके हमास के लड़ाके लोगों पर गोलियां बरसाने लगे। धीरे-धीरे गाजा बॉर्डर के पास इजराइली शहरों में जगह-जगह लाशें बिछ गईं। अब इजराइल की सेना गाजा स्ट्रिप से लगे इजराइली शहरों और कस्बों को हमास के कब्जे से छुड़ा चुकी है। इजराइली सैनिकों को यहां एक के बाद एक शव बरामद हो रहे हैं। हमास ने इजराइल की 20 लोकेशन को निशाना बनाकर अब तक करीब एक हजार से ज्यादा लोगों की हत्या कर दी है। जिन जगहों पर हमास ने सबसे ज्यादा लोगों को निशाना बनाया, उनमें किबुत्ज बीरी, स्देरोट, कफार अज्जा, नीर ओज और नोवा फेस्टिवल शामिल हैं। हमास के शुरुआती हमलों में ही 600 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत को बताया 'विश्व मित्र'

बोले- हम वैश्विक दक्षिण की आवाज

कोलंबो, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को आईओआरए के मंच पर भारत को विश्व मित्र बताया। इंडियन ओसीन रिम एसोसिएशन (आईओआरए) की 23वीं बैठक को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि भारत, विश्व मित्र और वैश्विक दक्षिण की आवाज है। बता दें कि भारत को साल 2023-25 के लिए आईओआरए का उपाध्यक्ष नामित किया गया है। वहीं 2025 में भारत को आईओआरए का अध्यक्ष बनाया जाएगा।

कार्यक्रम के दौरान बोलते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि भारत, दुनिया के देशों का मित्र है और हम आईओआरए के सदस्य देशों के साथ मिलकर आईओआरए की संस्थागत, आर्थिक और कानूनी रूपरेखा मजबूत करने के लिए काम करेंगे। जयशंकर ने आईओआरए को गतिशील समूह बताया। जयशंकर ने कहा कि भारत का नजरिया है कि हिंद महासागर क्षेत्र में क्षमता निर्माण और सुरक्षा को मजबूत करना जरूरी है। भारत की 'पड़ोसी पहले' की नीति है। इसके तहत भारत पड़ोसी देशों के साथ संबंध मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। जयशंकर के अलावा 16 देशों के मंत्रियों ने भी आईओआरए की बैठक में हिस्सा लिया। इनमें बांग्लादेश, ईरान, मॉरिशस और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री भी शामिल रहे। आईओआरए की बैठक के दौरान व्यापार, निवेश, समुद्री सुरक्षा, ब्लू इकॉनोमी पर सहयोग की चर्चा होगी।

इजराइल का हमास मिलिट्री कमांडर के घर पर अटैक

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इजराइल-हमास जंग का आज पांचवां दिन है। रातभर में इजराइल ने गाजा में हमास के 200 ठिकानों पर हमले किए। इजराइली एयरफोर्स ने बताया है कि उन्होंने हमास कमांडर मोहम्मद देइफ के पिता के घर पर अटैक किया है। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक इस हमले में देइफ के भाई की मौत हुई है। इजराइल और हमास की जंग में अब तक 2,150 लोगों की मौत हुई है। इनमें से करीब 1,200 इजराइली हैं। वहीं अब तक करीब 950 फिलिस्तीनियों ने भी जान गंवाई है। गाजा पर इजराइल के हमले में यूएन के 9 कर्मचारी मारे गए हैं।

हमास की धमकी-हमले बंद करो वरना बंधकों को मारेंगे

अपने 100 लोगों को बचाने दुश्मन देश में घुसे थे इजराइली सैनिक, अब क्या करेंगे नेतन्याहू

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। 7 अक्टूबर की सुबह बॉर्डर पर फेंसिंग को तोड़ हमास के एक हजार से ज्यादा लड़ाके इजराइल में घुस गए। इन्होंने न सिर्फ निहत्थे लोगों की बेरहमी से हत्या की बल्कि 150 लोगों को बंधक बनाकर उन्हें गाजा ले गए।

इनमें बच्चे और महिलाएं भी शामिल हैं। इजराइल ने जवाबी कार्रवाई करते हुए गाजा पर 1700 से ज्यादा एयरस्ट्राइक किए। इसके बाद हमास ने धमकी दी कि अगर इजराइल रुका नहीं तो वो सभी बंधकों को जान से मार देंगे।

ये पहला मौका नहीं जब फिलिस्तीन के नाम पर लड़ने वालों ने इजराइलियों को बंधक बनाया हो। 47 साल पहले 1976 में फिलिस्तीन लिबरेशन के लड़ाकों ने 100 यहूदियों को बंधक बना लिया था। तब इजराइल ने ऑपरेशन थंडरबोल्ट के जरिए इन्हें बचाया था।

1973 की अरब-इजराइल जंग को खत्म हुए 3 ही साल गुजरे थे। तभी जून 1976 में इजराइल के लोगों पर एक और मुसीबत आन पड़ी। 27 जून को इजराइल की राजधानी तेल अवीव से उड़ान भर कर पेरिस जाने वाली फ्लाइट को हाइजैक कर लिया गया। रात करीब 11 बजे एयर फ्रांस की फ्लाइट 139 ने तेल अवीव से उड़ान भरी थी। ये ग्रीस की राजधानी एथेंस होते हुए पेरिस जा रही थी। इस फ्लाइट में 246 यात्रियों के अलावा 12 क्रू मेंबर भी सवार थे।

डेढ़ घंटे के भीतर ये फ्लाइट एथेंस पहुंच गई, जहां से इस प्लेन में 62 और लोग सवार हुए। प्लेन ने एथेंस से पेरिस के लिए जैसे ही उड़ान भरी 4 पैसेंजर अचानक अपनी सीट से खड़े हुए और बंदूकें निकाल लीं।

इन आतंकियों के पास ग्रेनेड और हथगोले भी थे। इनमें से एक ने कॉकपिट में जाकर पायलट और बाकी क्रू मेंबर्स को अपने कब्जे में ले लिया। पैसेंजर्स कुछ समझ पाते इससे पहले प्लेन हाईजैक किया जा चुका था।

प्लेन के पायलट से ये घोषणा करवाई गई कि इस प्लेन को पॉपुलर फ्रंट फॉर लिब्रेशन ऑफ फिलिस्तीन के लड़ाकों ने हाईजैक कर लिया है। इन 4 आतंकियों में से 2, जर्मन जबकि 2 अरबी थे। विमान से संपर्क टूटते ही ये जानकारी इजराइल की इंटेलिजेंस एजेंसी को दी गई। एजेंसी अलर्ट हो गई और ये पता करने की कोशिश करने लगी कि विमान का एक्सीडेंट हुआ है या कुछ और।

वहीं, आतंकी इस प्लेन को पेरिस के बजाय लीबिया के बेनगाजी शहर ले गए। यहां हाईजैकर्स ने प्लेन में तेल भरवाया और 7 घंटे तक बेनगाजी एयरपोर्ट पर ही विमान को रोके रखा। विमान में सवार एक महिला की जब तबीयत खराब हुई तो हाईजैकर्स ने उसे छोड़ दिया।

इसके बाद आतंकियों ने कई अरब देशों से संपर्क कर हाईजैक विमान को लैंड कराने की परमिशन मांगी। हालांकि, इजराइल से दुश्मनी होने के बावजूद इंटरनेशनल लॉ की वजह से किसी देश ने आतंकियों को इसकी इजाजत नहीं दी।

आतंकियों ने किसी पर नहीं किया रहम

किसी ने जान की भीख मांगी तो किसी ने गर्भपात का नाटक कर बचाई जान

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इस्राइल और आतंकी संगठन हमास के बीच पांच दिनों से युद्ध जारी है। सात अक्तूबर को हमास द्वारा किए गए अचानक हमले के बाद इस्राइली सेना पलटवार कर रही है। गाजा में हवाई हमलों में अब तक 900 से अधिक फलस्तीनी नागरिकों की मौत हो चुकी है। वहीं, इस्राइल पर हमास के हमले में 1000 से अधिक लोगों की जानें गईं। साथ ही हमास और दूसरे फलस्तीनी इस्लामी चरमपंथी समूहों ने 150 से अधिक इस्राइली और विदेशी नागरिकों को बंधक बनाने का दावा किया है। इनमें इस्राइली सैनिक भी शामिल हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा है कि 14 अमेरिकी मारे गए हैं और कुछ आतंकियों द्वारा बंधक भी बनाए गए हैं। वहीं अमेरिका ने यह भी कहा है कि वह इस्राइल के साथ मिलकर बंधकों को छुड़ाने पर काम कर रहा है। यह कोई पहली बार नहीं है जब लड़ाई में बंधकों का इस्तेमाल ढाल की तरह किया जा रहा है। इससे पहले इस्राइली कई ऐसे कठिन समय से गुजर चुके हैं और कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। 1972 में जर्मनी के म्यूनिख में हुए ओलंपिक खेलों की सुरक्षा में बड़ी सेंध लगी थी। बात है 1972 की म्यूनिख ओलंपिक की, जब फलस्तीन के आतंकी संगठन ब्लैक सेप्टेंबर के आठ आतंकियों ने हमला किया था। इस हमले में दो इस्राइली खिलाड़ियों की मौत हुई थी और नौ खिलाड़ियों को कैद कर लिया गया था। सभी नौ खिलाड़ियों को बाद में मार दिया गया। म्यूनिख घटना के करीब ढाई साल बाद मई 1974 में इस्राइली मालोत नरसंहार का शिकार बने। तारीख थी 15 मई, जिस दिन इस्राइल अपना स्वतंत्र दिवस मनाता है। प्रवासी ज्यूसों के शहर मालोत में स्कूली छात्र ट्रिप पर आए थे। 14 मई को 11वीं के छात्रों की रात यहीं एक स्कूल में गुजरी। 15 मई को तड़के डेमोक्रेटिक फ्रंट फॉर द लिबरेशन ऑफ पलेस्टाइन (डीएफएलपी) के तीन आतंकी लेबनान सीमा से इस्राइल में घुस आए। ये आतंकी इस्राइली सैनिकों की वेशभूषा में छिपकर आए थे। जैसे ही आतंकी मालोट के पास पहुंचे, उन्हें एक वैन का सामना करना पड़ा, जो फसुता नामक गांव से ईसाई अरब महिलाओं को काम से घर ला रही थी। एक आतंकी ने वाहन पर गोलीबारी की, जिसमें एक महिला की मौत हो गई और चालक और अन्य कर्मचारी घायल हो गए। बाद में एक घायल की मौत हो गई। मालोत पहुंचकर आतंकवादियों ने कई घरों के घुसकर लोगों की हत्या कर दी। आतंकवादियों ने एक दंपती, उनके चार वर्षीय बेटे की गोली मारकर हत्या कर दी और उनकी पांच वर्षीय बेटी मिरियम को घायल कर दिया। मारे गए लोगों में से फोर्टुना नाम की महिला सात महीने की गर्भवती थी, जबकि परिवार में एकमात्र जीवित व्यक्ति उनका 16 महीने का बेटा था। वहां से आतंकवादी नेटिव मीर एलीमेंट्री स्कूल की ओर बढ़े जहां छात्र रात को ठहरे थे। रास्ते में उनकी मुलाकात एक सफाई कर्मचारी याकोव कदोश से हुई और उन्होंने स्कूल के लिए रास्ता पूछा।

इजरायल के खिलाफ हमास आतंकियों को मिले पाकिस्तानी हथियार ?

भारत अलर्ट, क्यों बढ़ा खतरा

तेलअवीव/नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। इजरायल और फलस्तीन के बीच युद्ध में अब पाकिस्तानी हथियारों की एंट्री हो गई है। ऐसी खबरें आ रही हैं कि यूक्रेन पाकिस्तान से मिले हथियारों को काले बाजार में हमास समेत पश्चिम एशिया और यूरेशिया के अन्य आतंकी संगठनों को बेच रहा है। इन खबरों के बाद भारत सरकार भी अलर्ट हो गई है। बताया जा रहा है कि रूस से युद्ध लड़ रहे यूक्रेन को पाकिस्तान ने बड़े पैमाने पर हथियार बेचे थे। यही हथियार अब हमास जैसे आतंकियों तक पहुंच रहे हैं। यूक्रेन का पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका के कई नॉन स्टेट एक्टर्स को हथियार बेचने का पुराना इतिहास रहा है।

ईटी की रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान यूक्रेन को प्रमुखता से हथियार बेचने वाले देशों में शामिल है। पाकिस्तान साल 2022 से ही यूक्रेन को गोला बारूद तीसरे देश के माध्यम से बेच रहा है। पाकिस्तान को ऐसा करने में पश्चिमी देश भी मदद कर रहे हैं। ये हथियार पोलैंड और जर्मनी के जरिए यूक्रेन तक पहुंच रहे हैं। पिछले दिनों यूक्रेन के विदेश मंत्री भी अचानक से इस्लामाबाद पहुंचे थे और हथियारों की सप्लाई को तेज करने के लिए गुहार लगाई थी। ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने तो पाकिस्तान के ऑर्डिनेंस फैक्ट्री बोर्ड से सीधे समझौता किया था।

पाकिस्तान ने यूक्रेन को कौन-कौन से हथियार दिए?

पाकिस्तान के हथियारों का जखीरा अमेरिकी झंडे वाले जहाज की मदद से जून में जार्डन और फिर पोलैंड तक पहुंचा था। यहां से उसे यूक्रेन भेजा गया था। इसमें एयर डिफेंस के वीइकल, रॉकेट लॉन्चर, गोलियां और कजपुर्जे शामिल थे।

यूक्रेन और भारत के दुश्मन पाकिस्तान के बीच रक्षा संबंध पिछले 3 दशक से बहुत मजबूत रहे हैं। पाकिस्तान को यूक्रेन से कई घातक हथियार मिले हैं। बताया जा रहा है कि यूक्रेन ने पाकिस्तान को हथियारों के बदले में एमआई 17 हेलिकॉप्टर के इंजन दिए हैं। हालांकि यूक्रेन पाकिस्तान के हथियारों की क्वालिटी से बहुत परेशान है। पाकिस्तानी तोप के गोले ने अमेरिका की एम 777 तोप को बर्बाद कर दिया। यही नहीं पाकिस्तानी रॉकेट भी फुस्स निकल रहे हैं। ऐसी खबरें आई हैं कि हमास को तालिबान से भी अमेरिकी हथियार मिले हैं जिसे वे छोड़कर चले गए थे।

इसके अलावा हमास को ईरान से ड्रोन और रॉकेट तकनीक मिली है जिसका इस्तेमाल उसने इजरायल के खिलाफ हमले में भी किया है।

हमास जैसे आतंकी संगठनों को इतने घातक हथियार मिलना भारत ही नहीं दुनिया के अन्य देशों के लिए भी बड़ा खतरा है। पाकिस्तानी आतंकी भी इन ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल कर सकते हैं।

25 साल की इनबार लिबरमैन की हिम्मत की मुरीद हुई दुनिया

हमले के दौरान हमास के 24 आतंकियों को किया ढेर

तेल अवीव, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। हमास के आतंकियों ने बीते शनिवार इस्राइल में घुसकर 1000 से ज्यादा लोगों को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन हमास के आतंकियों के पास 25 साल की इनबार लीबरमैन का कोई जवाब नहीं था। बता दें कि इनबार लीबरमैन ने कुछ लोगों के साथ मिलकर ना सिर्फ अपने समुदाय को हमास के हमले से बचाया बल्कि हमास के दो दर्जन से ज्यादा आतंकियों को मौत के घाट भी उतार दिया। इनमें से पांच को अकेले लिबरमैन ने ढेर किया। लिबरमैन की इस बहादुरी के लिए पूरी दुनिया में उनकी चर्चा हो रही है और वह इस्राइल की जनता की नजरों में नायक बनकर उभरी हैं। इनबार लीबरमैन गाजा पट्टी से कुछ ही किलोमीटर दूर स्थित एक किबुत्ज समुदाय नीर एम की सुरक्षा समन्वयक हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, शनिवार को जैसे ही हमास के आतंकियों ने इस्राइल पर हमला किया तो लीबरमैन ने धमाकों की आवाजें सुनी। धमाकों की आवाज सुनते ही लीबरमैन अलर्ट हो गईं और तुरंत उन्होंने अपनी 12 लोगों की सुरक्षा टीम के साथ मोर्चा संभाल लिया। लीबरमैन ने गजब की बहादुरी और सूझबूझ दिखाते हुए रणनीतिक रूप से अहम मोर्चों पर अपने साथियों को तैनात किया और जैसे ही हमास के आतंकियों ने किबुत्ज नीर एम पर हमला किया तो लीबरमैन और उनकी टीम ने चार घंटों तक आतंकियों का डटकर मुकाबला किया और दो दर्जन से ज्यादा आतंकियों को ढेर कर दिया।

जहां आतंकियों ने नीर एम के आसपास के किबुत्ज में नरसंहार किया और सैंकड़ों लोगों को मौत के घाट उतारा, वहीं नीर एम में आतंकी कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके।

इस्राइल के सोशल मीडिया पर भी इनबार लीबरमैन की बहादुरी की चर्चा है और लोग मांग कर रहे हैं कि इस्राइल की सरकार को लीबरमैन को सम्मानित करने की मांग कर रहे हैं।

21 अक्तूबर को 'उम्मीद-ए-पाकिस्तान' से इस्लामाबाद पहुंचेंगे नवाज शरीफ

शाही स्वागत की तैयारी

इस्लामाबाद, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पूर्व पीएम नवाज शरीफ 21 अक्तूबर को चार साल के स्व-निर्वासन के बाद पाकिस्तान पहुंचेंगे। नवाज शरीफ 21 अक्तूबर को दुबई से पाकिस्तान के लिए एक चार्टर्ड प्लेन से उड़ान भरेंगे। नवाज शरीफ जिस हवाई जहाज से पाकिस्तान जाएंगे, उसे उम्मीद ए पाकिस्तान नाम दिया गया है और इसमें 150 यात्री सफर कर सकते हैं। 73 वर्षीय शरीफ जनवरी में होने वाले आगामी आम चुनाव में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज का नेतृत्व कर सकते हैं।

उमराह करने के बाद जाएंगे पाकिस्तान

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, नवाज लंदन से पहले सऊदी अरब जाएंगे। जहां वह उमराह करेंगे। इस दौरान उनके कुछ सहयोगी भी साथ होंगे। इनमें नवाज शरीफ के करीबी सहयोगी मियां नासिर जांजुआ, वकार अहमद, करीम यूसुफ और कई अन्य लोग भी साथ होंगे। सऊदी अरब के बाद नवाज शरीफ दुबई जाएंगे और वहां से 21 अक्तूबर को चार्टर्ड प्लेन के जरिए पाकिस्तान के लिए उड़ान भरेंगे। नवाज शरीफ दुबई से पहले इस्लामाबाद पहुंचेंगे। जहां से वह लाहौर जाएंगे। लाहौर के मीनार ए पाकिस्तान में नवाज शरीफ एक जनसभा को संबोधित करेंगे। पाकिस्तान में नवाज शरीफ के स्वागत के लिए उनकी पार्टी के कार्यकर्ता तैयारियों में जुटे हैं। अंदाजा लगाया जा रहा है कि नवाज शरीफ की पाकिस्तान में शाही अंदाज में स्वागत करने की तैयारी है।

गिरफ्तारी की आशंका नहीं

मंगलवार को पीएमएल-एन के वरिष्ठ नेता इशाक डार और इरफान सिद्दीकी ने बताया कि नवाज शरीफ बुधवार को लंदन से सऊदी अरब के लिए निकल जाएंगे। इशाक डार ने बताया कि पाकिस्तान लौटने पर नवाज शरीफ की गिरफ्तारी नहीं होगी क्योंकि पहले ही कोर्ट से नवाज शरीफ की ट्रांजिट जमानत और सुरक्षात्मक जमानत ले ली जाएगी। डार ने कहा कि नवाज शरीफ सभी कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करेंगे।

बता दें कि नवाज शरीफ साल 2019 से ही स्व-निर्वासन में लंदन में रह रहे हैं। अल-अजीजिया मिल्स केस में नवाज शरीफ को सात साल जेल की सजा सुनाई गई थी। जेल में रहने के दौरान शरीफ की तबीयत बिगड़ गई थी। जिस पर लाहौर हाईकोर्ट ने इलाज के लिए नवाज शरीफ को विदेश जाने के लिए जमानत दे दी थी। उसके बाद से ही नवाज लंदन में हैं।

सदी के अंत तक भारत-पाकिस्तान में बढ़ेगी असहनीय गर्मी

वाशिंगटन, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। दुनिया भर में क्लाइमेट चेंज की वजह से सदी के अंत तक ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ सकता है। इससे भारत-पाकिस्तान समेत ज्यादा आबादी वाले देशों में ज्यादा गर्मी पड़ेगी। इसकी वजह से लोगों को हीट स्ट्रोक और हार्ट अटैक जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यह रिसर्च पेन स्टेट कॉलेज ऑफ हेल्थ एंड ह्यूमन डेवलपमेंट, पर्ड्यू यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंसेज और पर्ड्यू इंस्टीट्यूट फॉर ए सस्टेनेबल फ्यूचर ने मिलकर किया है। इस रिपोर्ट को प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज के रिसर्च पेपर में पब्लिश किया गया है।

अमेरिकी नौसेना का विमानवाहक पोत भूमध्य सागर पहुंचा

इस्राइल को मिला अमेरिका का पूरा समर्थन

जरुसेलम, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। हमास के साथ इस्राइल के संघर्ष के बीच अमेरिकी नौसेना के विमानवाहक पोत यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड कैरियर स्ट्राइक ग्रुप पूर्वी भूमध्य सागर पहुंचा। यूएस सेंट्रल कमांड ने इस बात की जानकारी एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा दी।

इस्राइल को मिल रहा अमेरिका का पूरा समर्थन

विज्ञप्ति में कहा गया कि इस क्षेत्र में अमेरिकी नौसेना के विमानवाहक पोत यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड (सीवीएन 78) के साथ हमले और समर्थन विमानों के 8 स्क्वाड्रन और टिकॉनदेरोगा क्लास गाइडेड मिसाइल क्रूजर यूएसएस नॉर्मंडी (सीजी 60) शामिल हैं। अमेरिकी रक्षा विभाग ने आठ अक्तूबर को एक विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा, 'मैंने पूर्वी भूमध्य सागर में यूएसएस गेराल्ड आर. फोर्ड कैरियर स्ट्राइक ग्रुप की आवाजाही का निर्देश दिया है। इसमें अमेरिकी नौसेना का विमानवाहक पोत यूएसएस गेराल्ड भी शामिल है। हमने क्षेत्र में अमेरिकी वायु सेना एफ-35, एफ-15, एफ-16 और ए-10 लड़ाकू विमान स्क्वाड्रन को बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए हैं।'

अमेरिकी रक्षा सचिव ने भी इस्राइल पर हमास द्वारा किए गए हनले की निंदा करते हुए कहा था कि इस्राइल के साथ लगातार संवाद जारी है। उन्होंने नागरिकों की सुरक्षा के लिए आश्वासन भी दिया। शनिवार को हमास ने इस्राइल पर कई हवाई हमले किए, जिसमें अबतक करीब 1200 इस्रइली नागरिकों की मौत हो गई, तो वहीं 2200 के करीब घायल हो चुके हैं। वहीं जवाबी हमले में 900 फलस्तीन नागरिकों की भी मौत हो चुकी है।

राजस्थान में चुनाव की तारीख बदली अब 23 नवंबर को नहीं होंगे चुनाव

जयपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजस्थान में चुनाव की तारीख बदल दी गई है अब 25 नवंबर को मतदान होगा इससे पहले 23 नवंबर को मतदान होना था राजस्थान में चुनाव की तारीख घोषित करते ही जनता ने चुनाव की तारीख बदलने की मांग की थी यहां पर जनप्रतिनिधियों ने भी पत्थर के माध्यम से चुनाव की तारीख बदलने के लिए अनुरोध किया था पहले 23 नवंबर को मतदान होना था लेकिन देवउठनी एकादशी के कारण यह माना जा रहा है कि इसकी वोटिंग प्रतिशत कर सकती थी जिसके कारण अब 25 नवंबर को मतदान होगा।

भारत निर्वाचन आयोग ने प्रेस नोट संख्या ईसीआई/पीएन/57/2023 दिनांक 9 अक्टूबर, 2023 के माध्यम से अन्य राज्यों के साथ राजस्थान विधानसभा के लिए आम चुनाव के कार्यक्रम की

राजस्थान में चुनाव का नया शेड्यूल

चुनाव से जुड़े इवेंट	तारीख
अधिसूचना और नामांकन की शुरुआत	30 अक्टूबर (सोमवार)
नामांकन की आखिरी तारीख	06 नवंबर (सोमवार)
नामांकन पत्रों की स्क्रूटनी	07 नवंबर (मंगलवार)
नाम वापसी की आखिरी तारीख	09 नवंबर (गुरुवार)
मतदान	25 नवंबर (शनिवार)
मतगणना	03 दिसंबर (रविवार)

घोषणा की थी, जिसमें राजस्थान के लिए मतदान की तारीख 23 नवंबर, 2023 (गुरुवार) तारीख तय की गई थी।

इसके बाद, आयोग को विभिन्न राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों से अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं और उस दिन बड़े पैमाने पर शादी/सामाजिक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए मतदान की तारीख में बदलाव के लिए विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों में भी मुद्दे उठाए गए हैं, जिससे बड़ी संख्या में लोगों को असुविधा हो सकती है। विभिन्न तार्किक मुद्दों के कारण मतदान के दौरान मतदाताओं की भागीदारी कम हो सकती है।

भारत निर्वाचन आयोग ने इन कारकों और अभ्यावेदन पर विचार करते हुए मतदान की तारीख 23 नवंबर, 2023 (गुरुवार) से बदलकर 25 नवंबर, 2023 (शनिवार) करने का निर्णय लिया है।

चुनाव आयोग के नए शेड्यूल के अनुसार अधिसूचना और नामांकन की शुरुआत 30 अक्टूबर सोमवार से शुरू होगी नामांकन की आखिरी तारीख 6 नवंबर सोमवार रखी गई है नामांकन पत्रों की स्कूटनी 7 नवंबर मंगलवार को की जाएगी वही नाम वापसी के आखिरी तारीख 9 नवंबर गुरुवार रखा गया है मतदान के लिए 25 नवंबर शनिवार का समय रखा गया है और प्रदेश में मतगणना 3 दिसंबर रविवार को होगी।

भाजपा प्रत्याशी व एमपी देवजी पटेल को पार्टी कार्यकर्ताओं ने दिखाए काले झंडे; काफिले पर किया हमला

सांचौर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। सांचौर में भाजपा प्रत्याशी व एमपी देवजी पटेल को पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा काले झंडे दिखाए जाने का मामला सामने आया है। कहा जा रहा है कि सांसद के काफिले में शामिल गाड़ियों के तोड़े शीशे तोड़े गए हैं। इसे लेकर देवजी पटेल ने सांचौर थाने में मामला दर्ज करवाया है। ज्यादा जानकारी के लिए पढ़ें पूरी खबर...।

राजस्थान के सांचौर में सांसद देवजी एम पटेल को भाजपा प्रत्याशी बनाए जाने के बाद अब विरोध का दौर चल रहा है। इसको लेकर बुधवार को सांचौर क्षेत्र में सांसद देवजी एम पटेल की गाड़ी पर पथराव करने और हाथापाई करने की खबर सामने आई है। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने सांचौर विधानसभा क्षेत्र से पार्टी के प्रत्याशी देवजी एम पटेल को काले झंडे दिखाए। वहीं, लोगों ने सांसद की गाड़ी पर पथराव कर दिया। इस दौरान सांसद के साथ हाथापाई किए जाने की खबर सामने आई है। जानकारी के मुताबिक, सांचौर में कुछ लोगों द्वारा सांसद देवजी पटेल का विरोध करते हुए गाड़ी पर पत्थर फेंके गए। इसके अलावा काले झंडे दिखाकर नारेबाजी करते हुए काफिले पर हमला किया गया है। इसको लेकर सांचौर देवजी एम पटेल सांचौर थाने पहुंचे हैं और उन्होंने इस मामले को लेकर मामला भी दर्ज करवाया है।

दरअसल, सांसद देवजी एम पटेल को टिकट मिलने के बाद लगातार विरोध चल रहा था। कल भी भाजपा के दावेदार धनाराम के आवास पर भारी संख्या में समर्थकों के साथ देवजी पटेल को टिकट मिलने पर बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने विरोध जताया था। भाषणबाजी की गई थी।

बीजेपी की सूची पर गोविंद सिंह डोटासरा का तंज

बोले- '41 उम्मीदवारों की लिस्ट और 82 विरोध में उतर गए'

जयपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजस्थान में विधानसभा चुनाव की तारीख के एलान के बाद सियासी पार्टियों में हलचल बढ़ गई है. बीजेपी ने सोमवार (9 अक्टूबर) को प्रदेश के 41 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम का एलान किया है. जिसके टिकट के दावेदार बीजेपी नेताओं ने खुलकर विरोध करना शुरू कर दिया है. इसको लेकर राजस्था कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने बीजेपी पर जमकर निशाना साधा. गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा, "उन्होंने 41 उम्मीदवारों को टिकट दिया है और 82 लोग इसके खिलाफ बगावत कर रहे हैं, ये बीजेपी की लिस्ट का हाल है."

विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने प्रत्याशियों के नामों का अभी तक एलान नहीं किया. इसको लेकर तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही है. उम्मीदवारों की सूची को लेकर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा, "हम लोगों ने उम्मीदवारों के चुनाव के लिए स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष और दोनों सदस्यों से चर्चा की है. इस संबंध में जल्द राज्य चुनाव समिति की बैठक आयोजित की जाएगी, चुनाव समित की बैठक के बाद उम्मीदवारों के नामों का एलान किया जाएगा." कांग्रेस उम्मीदवारों के चुनाव पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बयान दिया था. इस दौरान उन्होंने कहा कि इसको लेकर अभी प्रक्रिया शुरू हुई है. 18 अक्टूबर तक जब सीईसी की मीटिंग शुरू होगी तब इस पर अंतिम फैसला लिया जाएगा.

बीजेपी ने इन दिग्गजों के नहीं दिया टिकट

दरअसल, बीजेपी ने राजस्थान विधानसभा चुनाव में दो सौ सीटों में से 41 सीटों पर उम्मीदवारों के नामों का एलान किया है. बीजेपी के पहली लिस्ट में कई प्रमुख दावेदारों को टिकट नहीं मिला है. मीडिया में छपी खबर के मुताबिक, भरतपुर जिले की नगर विधानसभा सीट से दो बार विधायक रहीं अनिता गुर्जर को बीजेपी आलाकमान ने टिकट नहीं दिया है. इसी तरह से विद्याधरनगर से विधायक नरपत सिंह राजवी को भी टिकट नहीं मिला है. नरपत सिंह राजवी पूर्व राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत के दामाद हैं. इसके अलावा झोटवाड़ा सीट से पूर्व मंत्री राजपाल सिंह शेखावत, बानसून विधानसभा सीट से पूर्व मंत्री रोहिताश्व शर्मा का टिकट नहीं दिया है.

केंद्रीय मंत्री शेखावत बोले- परिवर्तन का संकल्प पूरा करने में कसर नहीं छोड़ेंगे कार्यकर्ता

जोधपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और राजस्थान प्रभारी अरुण सिंह ने जोधपुर में चुनाव प्रबंधन कार्यशाला में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया और संगठनात्मक बैठकें भी कीं। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत राजस्थान प्रभारी अरुण सिंह के साथ दिल्ली से जोधपुर पहुंचे। यहां दोनों नेता चुनाव प्रबंधन कार्यशाला और समिति की बैठक में शामिल हुए। लघु उद्योग भारती भवन में आयोजित चुनाव प्रबंधन कार्यशाला में शेखावत, अरुण सिंह और राष्ट्रीय सचिव विजया राहटकर ने संगठनात्मक बैठकों में कार्यकर्ताओं से संवाद किया। साथ ही विधानसभा चुनाव को लेकर फीडबैक भी लिया। इस दौरान सभी ने राजस्थान में कमल खिलाने का संकल्प पूरा करने का भी प्रण लिया। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि अरुण सिंह के साथ भाजपा की मूल शक्ति कार्यकर्ता साथियों से मिलकर उत्साह दोगुना हो गया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में परिवर्तन का संकल्प पूरा करने में भाजपा कार्यकर्ता कसर नहीं छोड़ेंगे।

प्रदेश चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक नारायण पंचारिया ने बैठक की प्रस्तावना रखी। आगामी विधानसभा चुनाव में योजना से काम करने का आह्वान किया। इस दौरान बैठक में जिला अध्यक्ष देवेंद्र सालेचा, महामंत्री जगवीर छाबा, राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत, दिल्ली से सांसद प्रवेश साहिब सिंह, विधायक सूर्यकांता व्यास, देहात उत्तर के अध्यक्ष मनोहर पालीवाल, देहात दक्षिण अध्यक्ष जगराम विश्नोई सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे।

बीएसपी बनेगी किंगमेकर ? मायावती के प्लान से बढ़ी बीजेपी-कांग्रेस की धड़कन

जयपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए सिर्फ भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस ही नहीं बल्कि बहुजन समाज पार्टी भी पूरा जोर लगा रही है. बसपा इस चुनाव में सभी 200 सीटों पर उम्मीदवार उतार रही है. इसमें से पार्टी 60 सीटों पर खास फोकस कर रही है. साल 2018 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने 6 सीटें हासिल की थीं. हालांकि सभी विधायक बाद में कांग्रेस में शामिल हो गए थे. बसपा को उम्मीद है कि अगर चुनाव परिणामों में भारतीय जनता पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, दोनों बहुमत का जादुई आंकड़ा नहीं मिलता तो वह किंगमेकर बन सकती है.

पिछले चुनाव में विधायकों के बागी होने के बाद बसपा ने इस बार उम्मीदवारों का चयन यह ध्यान में रखते हुए किया है कि सभी बसपा चीफ मायावती और पार्टी के प्रति वफादार हों.

अंग्रेजी अखबार इकॉनमिक टाइम्स के अनुसार बीएसपी की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष भगवान सिंह बाबा ने कहा कि हम सभी 200 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेंगे. बीते 5 सालों में हमने 60 सीटों पर अपनी ताकत लगाई है. हमारी कोशिश है कि चुनाव परिणामों के बाद सत्ता का संतुलन बना रहे.

दीगर है कि राजस्थान में बीजेपी और कांग्रेस के बाद, बसपा सबसे बड़ी पार्टी है. साल 1998 के चुनाव में पहली बार 2 सीटें हासिल करने वाली बसपा का प्लान है कि विधायकों के टूटने की गतिविधियों से बचने के लिए पार्टी सरकारों को बाहर से समर्थन नहीं देगी बल्कि सत्ता का साझेदार बनेगी. अखबार के अनुसार बसपा के एक सूत्र ने कह कि अगर इस बार जरूरत पड़ी तो हम अपने विधायकों को मंत्री बनाएंगे.

साल 2018 के विधानसभा चुनाव के आंकड़ों की बात करें तो बसपा ने 190 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 178 पर उसकी जमानत जब्त हुई थी. इसके अलावा उसे 6 सीटों पर जीत मिली थी. साल 2018 के विधानसभा चुनाव में बसपा ने राजस्थान में राष्ट्रीय पार्टी की हैसियत से चुनाव लड़ा था. उसे 4.03 फीसदी वोट मिले थे. बीजेपी और कांग्रेस के बाद सबसे ज्यादा वोट बीएसपी (14 लाख 35 हजार 858) को मिले थे.

बीजेपी उम्मीदवार डूंगरपुर बोले, जीतने के बाद लालसोट में हुए भ्रष्टाचार की जांच करवाऊंगा

दौसा, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजस्थान के दौसा जिले की विधानसभा सीट लालसोट से भारतीय जनता पार्टी ने रामविलास डूंगरपुर को इस बार अपना प्रत्याशी बनाया है। रामविलास डूंगरपुर वर्तमान सरकार की नाकामियों और विकास को वास्तविक रूप से आगे बढ़ाने की बात कहकर अपनी जीत का दावा करते नजर आए। टिकट मिलने के बाद अपने समर्थकों के साथ चुनावी रणनीति की योजना बनाते हुए रामविलास ने मंत्री परसादी लाल को जमकर घेरा। उन्होंने कहा कि वर्तमान विधायक करीब दो वर्ष तक उद्योग मंत्री रहे। लेकिन लालसोट विधानसभा क्षेत्र में उद्योग के नाम पर एक छोटी सी इकाई भी स्थापित नहीं कर पाए। यह उनकी सबसे बड़ी नाकामी है।

रामविलास ने आगे कहा कि परसादी लाल के चिकित्सा मंत्री रहते हुए लालसोट में भ्रष्टाचार का बोलबाला चरम सीमा पर रहा। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल का बड़ा नाम होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि बड़ा नाम होना बड़ी बात नहीं है। उन्होंने परसादी लाल पर भ्रष्टाचार करने और लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने सहित व्हाट इस दिस बोलने का आरोप लगाया। डूंगरपुर ने कहा कि पिछले 35 वर्षों में जनता परसादी से पूरी तरह ऊब चुकी है। अब जनता ने लालसोट से मंत्री को विदा करने का पूरी तरह से मन बना लिया है।

‘भ्रष्टाचार की जांच के बाद बाप-बेटे पर की जाएगी कार्रवाई’

इसके साथ ही रामविलास ने मंत्री पुत्र कमल मीणा को दलाल बता दिया। उन्होंने कहा कि दोनों बाप-बेटे ने मिलकर लालसोट में जमकर भ्रष्टाचार करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। अगर आगामी समय में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आएगी तो निश्चित रूप से उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार की जांच करवाते हुए उन पर कार्रवाई भी की जाएगी।

रामविलास मीणा लालसोट के पास डूंगरपुर गांव के रहने वाले हैं। वह अब से पहले भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर ही चुनाव लड़ चुके हैं जो हार गए थे।

विद्याधर नगर राजस्थान विधानसभा चुनाव 2023: बीजेपी में बगावत-

विधायक ने भाजपा उम्मीदवार दिया कुमारी का जोड़ा मुगलों से कनेक्शन

विद्याधर नगर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजस्थान वधिानसभा चुनाव में जीत के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रही भाजपा को बगावत का सामना करना पड़ रहा है। वद्याधर नगर से टकिट कटने के बाद भाजपा वधायक नरपत सिंह राजवी ने वहां से उम्मीदवार बनाई गईं दयिा कुमारी के खानदान का मुगलों से कनेक्शन बताते हुए उनका वरिोध कयिा है। एक नेता ने तो टकिट खरीद-बक्रिी तक का आरोप लगा दयिा है। वजिय बैंसला और राज्यवर्धन सहिं राठौड़ को टकिट दएि जाने का भी खुल कर वरिोध हुआ है। इनके लिए ‘बाहरी भगाओ’ और ‘वापस जाओ’ जैसे नारे लगे हैं। बता दें क25 नवंबर को होने जा रहे राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने नौ अक्तूबर को 41 विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की थी। इस सूची में सात सांसद भी शामिल हैं। भाजपा नेता वकिास चौधरी ने सांसद (अजमेर) भागीरथ चौधरी पर टकिट खरीदने का आरोप लगाया है।

दिया कुमारी जयपुर (पहले आमेर) राजघराने से हैं। उनके दादा महाराजा मान सिंह द्वितीय ब्रिटिश राज के दौरान जयपुर रियासत के अंतिम शासक थे। मान सिंह प्रथम मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में शामिल थे। कला का महानगरीय संग्रहालय ने मान सिंह प्रथम के परिचय में लिखा है कि उन्हें मिर्जा राजा के नाम से भी जाना जाता था। वह 1562 में अकबर के दरबार में शामिल हुए, जब अकबर ने आमेर के राजा बिहार मल की सबसे बड़ी बेटी से शादी की। राजा बिहार मल की बेटी ने ही मान सिंह को गोद लिया था। बाद में मान सिंह प्रथम अकबर के बहुत खास हो गए। मान सिंह के परिवार का अन्य मुगल शासकों से भी अच्छा संबंध रहा।

राजकुमारी दीया कुमारी फाउंडेशन की वेबसाइट के मुताबिक, राजसमंद सांसद दिया कुमारी, मान सिंह द्वितीय के बेटे सवाई भवानी सिंह और महारानी पद्मिनी देवी की एकमात्र संतान हैं। दिया कुमारी के नाना-नानी सिरमौर (अब हिमाचल प्रदेश का हिस्सा) के महाराजा और महारानी थे। दिया कुमारी के पिता ने पिता ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में 10वीं पैराशूट रेजिमेंट के पैरा कमांडो के लेफ्टिनेंट कर्नल और कमांडिंग ऑफिसर के रूप में योगदान दिया था। उन्हें महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था। भाजपा ने विद्याधर नगर से तीन बार के विधायक नरपत सिंह राजवी की टिकट काट दिया है। पार्टी ने इस सीट से राजसमंद सांसद दयिा कुमारी को उतारा है। भाजपा के इस फैसले से राजवी बहुत नाराज हैं। उन्होंने पार्टी के खिलाफ विद्रोही बयान देना शुरू कर दिया है। राजवी ने दिया कुमारी की उम्मीदवारी पर सवाल उठाते हुए उनके परिवार को मुगलों के सामने घुटने टेकने वाले बताया है।

राजवी ने कहा है, “पता नहीं, मुगलों के आगे घुटने टेकने वाले और महाराणा प्रताप के खिलाफ लड़ने वाले परिवार पर पार्टी मेहरबान क्यों है? कार्यकर्ताओं से न पहचान है, न संवाद, उन्हें उतारकर पार्टी क्या हासिल करना चाहती है?”

जयपुर ग्रामीण से सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़ को भाजपा ने जयपुर के झोटवाड़ा से टिकट दिया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, मंगलवार (10 अक्टूबर) को जयपुर स्थित भाजपा मुख्यालय के भीतर ही राज्यवर्धन गो-बैक (वापस जाओ) के नारे सुनने को मिले। गुर्जर आंदोलन के संयोजक रहे कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैंसला के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने ‘बाहरी भगाओ’ का नारा दिया है। दरअसल, भाजपा ने बैंसला को देवली-उनियारा (टोंक) से मैदान में उतारा है। जबकि उन्होंने लोकसभा का चुनाव सवाई माधोपुर से लड़ा था। कांग्रेस के नमोनारायण मीणा ने बैंसला को हरा दिया था।

भाजपा ने अजमेर के किशनगढ़ से सांसद (अजमेर लोकसभा क्षेत्र) भागीरथ चौधरी को टिकट दिया। पिछले विधानसभा चुनाव में इस सीट से विकास चौधरी भाजपा के प्रत्याशी थे। इस बार विकास चौधरी का टिकट कट गया है। ऐसे में जब उनके कार्यकर्ता उनसे मिलने पहुंचे तो वह अपने आंसू नहीं रोक पाए। उनका आरोप है कि सांसद भागीरथ चौधरी ने विधानसभा का टिकट खरीदा है।

भाजपा ने जिन 41 सीटों पर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा की है, उनमें से 39 ऐसी हैं, जिन पर पार्टी 2018 के विधानसभा चुनाव में हार गई थी। भाजपा ने पहली ही सूची में 29 सीटों पर 2018 के प्रत्याशियों को नहीं उतारा है। ऐसी सीटों में कोटपूतली, देवली-उनियारा, किशनगढ़, नगर, बानसूर, सांचौर का नाम भी शामिल है। इन सीटों पर पिछला चुनाव लड़ने वाले नेता यादराम जांगल, राजेंद्र गुर्जर, विकास चौधरी, अनिता सिंह गुर्जर, रोहिताश्व शर्मा, दानाराम चौधरी, आदि विरोध में उतर आए हैं।

कार ड्राइवर ने दो सगे भाइयों को रौंदा, मौत

कॉम्पिटिशन एग्जाम की कर रहे थे तैयारी, टक्कर के बाद कार पलटी, ड्राइवर की भी मौत

चंद्रमोहन वेद प्रकाश

अलवर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। अलवर में हुए एक सड़क हादसे में दो सगे भाइयों की मौत हो गई। दोनों भाई एक ही बाइक पर थे। जिस कार ने बाइक को टक्कर मारी थी, वह भी स्पीड में पलट गई और इसमें सवार ड्राइवर की भी मौत हो गई। बताया जा रहा है कि दोनों भाई कॉम्पिटिशन एग्जाम की तैयारी कर रहे थे।

मामला जिले के मालाखेड़ा थाना क्षेत्र के कलसाड़ा बाइपास का बताया जा रहा है। दोनों भाई राजगढ़ थाना क्षेत्र के थाना राजाजी गांव के रहने वाले थे। हादसे के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। इधर, बुधवार सुबह पोस्टमार्टम कर दोनों के शवव परिजनों को सौंप दिए।

मालाखेड़ा थानाधिकारी मुकेश मीना ने बताया कि महुआ खुर्द निवासी अजरुद्दीन कार लेकर मालाखेड़ा की ओर जा रहा था। वहीं बाइक सवार राजाजी का बास निवासी वेदप्रकाश (22) और चंद्र मोहन (20) दोपहर को अलवर गए थे। यहां से काम निपटा कर अपने गांव की तरफ जा रहे थे।

तभी कलसाड़ा बाईपास पर स्पीड में कार लेकर आ रहा निवासी महुआ खुर्द मालाखेड़ा निववासी अजरुद्दीन (22) पुत्र तैयब ने दोनों भाइयों को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी बाइक उछल कर बाईपास के एक तरफ गिर गई। इस हादसे में दोनों भाइयों की मौत हो गई।

कोटा, टोंक और गंगापुर में पीएफआई के ठिकानों पर एनआईए की छापेमारी; कई संदिग्ध हिरासत में

कोटा, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। प्रदेश के तीन जिलों कोटा, टोंक, गंगापुर में पीएफआई के कई ठिकानों पर सुबह से एनआईए की छापेमारी चल रही है। इस दौरान कई संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। एनआईए ने बुधवार तड़के राजस्थान में तीन जगहों पर रेड डाली। पीएफआई साजिश मामले में एनआईए ने छापेमारी की है। एनआईए टीमों ने सुरक्षा के लिहाज से स्थानीय पुलिस की भी मदद ली है। टीम ने कुछ संदिग्धों को भी राउंड अप किया है। सूत्रों के मुताबिक, एनआईए एनआईएने बुधवार तड़के राजस्थान के कोटा, टोंक और गंगापुर में कई जगहों पर छापेमारी की कार्रवाई की। एनआईए टीमों ने स्थानीय पुलिस की मदद से पीएफआई के ठिकानों पर रेड डाली। एनआईए टीमों के छापेमारी की सूचना लगते ही लोगों में हड़कंप मच गया।

धौलपुर में डेंगू से दो की मौत, 230 एक्टिव केस

मलेरिया मरीजों की संख्या भी बढ़ रही

धौलपुर, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। धौलपुर में डेंगू और मलेरिया के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। दो लोगों की डेंगू से मौत हो गई, जबकि प्रदेश में 230 एक्टिव मरीज है। इनमें से 30 का जिला अस्पताल के इलाज चल रहा है। राजस्थान के धौलपुर जिले में मौसमी बीमारियों का कहर शुरू हो गया है। नॉर्मल वायरल के साथ डेंगू और मलेरिया के एक्टिव केस लगातार बढ़ने से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की चिंता भी बढ़ गई। मंगलवार को सैंपऊ उपखंड इलाके के शाहपुर गांव में शिवनारायण उर्फ शिब्बो (47) पुत्र पातीराम और गांव नगला हरलाल में लोकेंद्र सिंह (29) पुत्र भीमसेन की डेंगू से मौत हो गई। प्रमुख चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयंतीलाल मीणा ने बताया जगह-जगह जल भराव होने से मौसमी बीमारियों का सीजन शुरू हो गया है। डेंगू, मलेरिया और नॉर्मल वायरल के रोगियों की संख्या में इजाफा देखा जा रहा है। जिले में डेंगू के 230 एक्टिव केस हैं। करीब 30 मरीज का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। चिकित्सा विभाग द्वारा हर गांव में एंटी लार्वा एक्टिविटी कराई जा रही है।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने मनाया हिन्दी पखवाड़ा

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के हैदराबाद अंचल कार्यालय तथा कोटी, पंजागुट्टा, सैफाबाद और सिकंदराबाद क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह और सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन कारे भास्कर राव, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने किया। कार्यक्रम में महाप्रबंधक पी. कृष्णन तथा क्षेत्र प्रमुखगण कल्याण वर्मा, यूवी रजनीकान्त राव, एन. श्रीनिवास राव एवं अरुण कुमार तथा उप महाप्रबंधकगण ए. रवि कुमार एवं श्री एस अरविंद कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कारे भास्कर राव, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हमें सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ कारपोरेट प्रार्थना गीत से हुआ। देवाकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने स्वागत संबोधन किया। उपस्थित बैंक के गण्यमान कार्यपालकों द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके उपरांत हैदराबाद अंचल कार्यालय और कोटी,पंजागुट्टा,सैफाबाद और सिकंदराबाद क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा बैंकिंग विषय पर हिन्दी में तैयार किए संदर्भ साहित्य का विमोचन किया गया। राजभाषा अधिकारी सुश्री श्रुति पांडे ने बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के हिन्दी दिवस संदेश तथा राजभाषा अधिकारी सुश्री स्नेहा सिंह ने केंद्रीय गृह मंत्री के संदेश का वाचन किया।

बैंक के उच्च अधिकारियों को अपना कार्य हिन्दी में करने को प्रोत्साहित करने की योजना कार्यपालकों के लिए टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता के वर्ष 2022-23 के विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तदुपरांत, बैंक की शाखाओं और अन्य कार्यालयों में हिन्दी में काम करने के लिए जारी प्रोत्साहन योजना आंतरिक राजभाषा शील्ड-2022-23 के तहत कोटी, पंजागुट्टा, सैफाबाद और सिकंदराबाद क्षेत्रीय कार्यालयों ने विजेता स्टाफ सदस्यों को व्यक्तिगत पुरस्कार और शाखाओं को शील्ड प्रदान किया।

बैंक के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित राजभाषा ज्ञान, बैंकिंग शब्दावली,चित्र वर्णन और हिन्दी सुलेख प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र और पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बच्चों के लिए आयोजित चित्र लेखन और प्रतिभा अन्वेषण प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी प्रमाण-पत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए। वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री उपासना सिरसैया ने कार्यक्रम का संचालन किया। अंत में बैंक के स्टाफ सदस्यों के बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

भारत ने अफगानिस्तान को 8 विकेट से हराया

इस वर्ल्ड कप में दूसरी जीत; रोहित की सेंचुरी, बुमराह ने झटके 4 विकेट

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारत ने वनडे वर्ल्ड कप-2023 में लगातार दूसरी जीत दर्ज कर ली है। टीम ने बुधवार रात अफगानिस्तान को 8 विकेट से हरा दिया। भारत ने पहला मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 6 विकेट से जीता था। इस जीत के साथ टीम इंडिया के 4 पॉइंट्स हो गए और टीम पॉइंट्स टेबल में दूसरे नंबर पर पहुंच गई। भारत अब 14 अक्टूबर को अहमदाबाद में पाकिस्तान से भिड़ेगा।

अरुण जेटली स्टेडियम में अफगानिस्तान ने पहले बैटिंग करते हुए 8 विकेट पर 273 रन बनाए। जवाब में टीम इंडिया ने 35 ओवर में ही टारगेट हासिल कर लिया। भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने 63 गेंद पर शतक लगाया। उन्होंने 131 रन की पारी खेली। पहली पारी में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने 4 विकेट लिए।

विराट कोहली ने 56 गेंद पर 55 रन की नॉट आउट पारी खेली। उन्होंने 35वें ओवर की आखिरी गेंद पर चौका लगाकर भारत को 8 विकेट से मैच जिताया। विराट ने पारी में 6 चौके लगाए और श्रेयस अय्यर के साथ 68 रन की पार्टनरशिप भी की। श्रेयस 25 रन बनाकर नॉट आउट रहे।

भारत से ओपनिंग करने आए कप्तान रोहित शर्मा ने शुरुआती ओवरों में ही अटैक करना शुरू कर दिया। उन्होंने 30 गेंद पर फिफ्टी और 63 गेंद पर सेंचुरी लगाई। वह 84 गेंद पर 131 रन बनाकर आउट हुए। इस पारी में उन्होंने 16 चौके और 5 छक्के लगाए।

7 वर्ल्ड कप शतक लगाने वाले पहले खिलाड़ी बने रोहित

रोहित ने अफगानिस्तान के खिलाफ 63 बॉल पर शतक लगाया। वह वनडे वर्ल्ड कप में 7 सेंचुरी बनाने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बने। उन्होंने सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ा, जिनके नाम 44 पारियों में 6 शतक हैं। रोहित ने 2015 में एक और 2019 में 5 शतक लगाए थे। ये रोहित के वनडे करियर का 31वां शतक है। वनडे में सबसे ज्यादा शतक के मामले में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के रिकी पॉन्टिंग को पीछे छोड़ा, जिनके नाम 30 शतक हैं। सबसे ज्यादा शतक के मामले में रोहित तीसरे नंबर पर पहुंचे। सचिन तेंदुलकर पहले (49 शतक) और विराट कोहली दूसरे (47 शतक) नंबर पर हैं। रोहित ने फिफ्टी भी 30 गेंद पर ही पूरी कर ली थी। उन्होंने 63 गेंद पर शतक लगाया। वह भारत के लिए सबसे कम गेंदों पर वर्ल्ड कप शतक लगाने वाले खिलाड़ी बने। उन्होंने कपिल देव का 40 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा, जिन्होंने 1983 में जिम्बाब्वे के खिलाफ 72 गेंद पर शतक लगाया था।

तप साधिका श्राविका श्रीमती मुक्ता चिंडालिया का 101 दिनों का मौन तप एकान्तर तप के साथ संपन्न

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। श्रीमती मुक्ता चिंडालिया धर्मपत्नी श्री मिलाप चिंडालिया हैदराबाद निवासी का आज 101 दिन का मौन व्रत व एकान्तर उपवास की सम्पन्नता आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनिश्री जिनेश कुमार जी के पावन सान्निध्य में भव्यतम पारणे के कार्यक्रम के साथ हुई। श्रीमती मुक्ता चिंडालिया में गुरुदेव के सानिध्य में इस तप का मुम्बई में संकल्प लिया था। मुनिश्री ने तप की महत्ता पर प्रकाश डाला, एवं इस तपकी अनुमोदना करते हुए तपस्वी श्रीमती मुक्ता को साधुवाद दिया। मुनिश्री ने ससुराल सरदारशहर का चिंडालिया परिवार व पीहर बच्छावत परिवार को अच्छे संस्कार हेतु अभिवादन किया। श्रीमती मुक्ता इससे पहले भी पिछले कई सालों से मौनव्रत की तपस्या कर रही है। पिछले 26 वर्षों से आप सावन व भद्राव के एकान्तर तप कर रही है व पीछे आपने 51 दिनों की मौन तपस्या भी सानन्द सम्पन्न की थी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकन्दराबाद आपके आध्यात्मिक उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती है।

सीरवी समाज का नवरात्रि महोत्सव 15 से

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। पारसीगुट्टा स्थित सीरवी समाज की आस्था का केन्द्र श्री आईमाता मंदिर में नवरात्रि महोत्सव रविवार 15 अक्टूबर से सोमवार 23 अक्टूबर तक समाज बन्धुओं के सानिन्ध्य में पूजा-अर्चना, हवन-यज्ञ कार्यक्रम के साथ आयोजित किया जाएगा। सचिव किशनसिंह राठौड़ ने बताया कि हर वर्ष की भांति नवरात्रि महोत्सव श्री आईमाता मंदिर मे आयोजित किया जाएगा। पंडितजी के मंत्रोच्चारण से रविवार 15 अक्टूबर से सोमवार 23 अक्टूबर तक प्रतिदिन पुजा-अर्चना व हवन-यज्ञ कार्यक्रम प्रात: 7.31 बजे से 10.31 बजे तक आयोजित किया जाएगा। हवन में बैठने के लिए समाज बन्धु अपना नाम सचिव किशनसिंह राठौड़ के पास सम्पर्ककर दे सकते है। पूर्णाहुति रविवार 22 अक्टुबर प्रात: 7.15 बजे से 11 बजे तक किया जाएगा। तत्पश्चात् समाज बन्धुओं के लिए भोजन-प्रसादी की व्यवस्था मंदिर प्रांगण मे रहेगी। अध्यक्ष चोलाराम हाम्बड़, परसराम बर्फा, सीतादेवी सोलंकी ने समाज बन्धुओं से निवेदन किया है कि नवरात्रि महोत्सव में पूजा-अर्चना, हवन-यज्ञ में सपरिवार भाग लेकर कार्यक्रम का लाभ लेवे।

51वें रामायण मेले में बतौर मुख्य अतिथि भाग लेने के लिए हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय को आमंत्रित करते हुए रामायण मेले के प्रधान संयोजक गोविंद राठी। साथ में हैं गिरीधारीलाल घागा, मनोज जायसवाल, बाबूगुरु व अन्य।

भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान में हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाकृअनुप भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में डॉ. महेन्द्र कुमार, प्रभारी निदेशक, भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान के द्वारा हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह का शुभारंभ किया गया तथा मंच पर समारोह के मुख्य अतिथि जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहा. निदेशक (राजभाषा) (सेवानिवृत्त), शीतांशु कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी टी.डी.एस.प्रकाश, व वित्त एवं लेखा अधिकारी तथा डॉ. महेश कुमार, मुख्य सहा तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) कोसमारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गीत एवं गणेश वन्दना से हुआ। इस अवसर पर श्रीमती वनिता ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। डॉ. महेश कुमार, हिन्दी अधिकारी प्रभारी ने संस्थान में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति से अवगत कराया तत्पश्चात शीतांशु कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी द्वारा हिंदी पखवाडे के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हिंदी पखवाडे के दौरान आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों पर पपीटी प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बताया कि इस समारोह के दौरान संस्थान में आयोजित 11 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं जैसे सामूहिक गीत गायन, एकल गीत गायन, वाद-विवाद, स्मरण शक्ति परीक्षण, टिप्पण एवं आलेखन, निबंध लेखन, हिंदी में अनुवाद, अंत्याक्षरी, प्रश्न-मंच एवं हिंदी पोस्टर प्रस्तुतिकरण आदि पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायक गण तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों को स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया।

डॉ. आर. महेन्दर कुमार, अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दी के प्रति प्रत्येक नागरिक अपने-अपने दायित्व से यदि अवगत हो तो हिन्दी के साथ देश का विकास होगा तथा सभी विजेताओं को बधाई दी। मुख्य अतिथि जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहा. निदेशक (राजभाषा) ने अपने बोधन बताया कि कंप्यूटर के माध्यम से हम कैसे वाईस गूगल एवं अनुवाद आसानी से डॉक में कर सकते हैं तथा साथ ही उन्होंने सभी कार्मिकों को निदेश दिए कि सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लें। श्रीमती वनिता के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का समन्वय तथा संचालन डॉ. आर. महेन्दर कुमार के दिशा-निर्देश में शीतांशु कुमार तथा श्रीमती वनिता के द्वारा किया गया।

मुंबई में केंद्रीय मंत्री डॉ. भगवंत कराड़ से भेंट करते हुए टीटीडी हिंदू धर्म प्रचार समिति के सदस्य स्वामी कमलेश महाराज व अन्य।

हिन्दू संरक्षण समिति का विजयदशमी महोत्सव व 46वाँ रावन दहन कार्यक्रम 24 को, हुई बैठक

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दू संरक्षण समिति भाग्यनगर के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी बड़े धूम धाम से विजयदशमी महोत्सव के अवसर पर रावन दहन कार्यक्रम का विशाल आयोजन भाग्यनगर के पुराने शहर में स्थित कुली कुतुब शाह स्टेडियम, सिटी कालेज के पास आयोजित करने का निर्णय आज संस्था अध्यक्ष पंकज कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में लिया गया। विजयदशमी महोत्सव समिति द्वारा गत 46 वर्षो से लगातार भाग्यनगर वासियों में धर्मजागरण व मनोरंजन के उद्देश से रंगारग आतिश बाजी के बिज कार्यक्रम साधु संत महात्माओं के मार्गदर्शन में आयोजित किया जाएगा। बैठक में उपस्थित पंकज कुमार अग्रवाल, सुरेंद्र नारनौली, राजकमल भट्टड़, तरुण अग्रवाल, अनूप अग्रवाल, महेश अग्रवाल, हरिभाई, आलोक अग्रवाल, पवन व अन्य कार्यकर्ताओं ने सभी नगरवासियों को अधिकाधिक संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित होकर सहयोग प्रदान करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने का आग्रह किया। विजयदशमी महोत्सव रावण दहन कार्यक्रम के अंतर्गत संस्था के अगली सभा आगामी रविवार 15 तारीख को रखी गई है तथा सभी कार्यकर्ताओं से निवेदन है समय पर उपस्थित रहे।

हिन्दी महाविद्यालय एनएसएस यूनिट का सम्मान

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय में 11 अक्तूबर को कैंप से आए सभी स्वयंसेवक (एनएसएस) को हिन्दी महाविद्यालय के समिति अध्यक्ष लक्ष्मीनिवास शर्मा, उपाध्यक्ष श्यामसुंदर मूंदड़ा, प्राचार्या डॉ. बी. श्रीदेवी, उप-प्राचार्या श्रीमती अश्विनी सनपूरकर तथा एनएसएस अधिकारी कन्हैया कुमार का सम्मान किया गया।

हिन्दी महाविद्यालय की एनएसएस यूनिट द्वारा 23 सितंबर को एनएसएस अधिकारी श्री कन्हैया कुमार द्वारा जीआरएफ की ओर से नेशनल गांधीयन लिडरशीप कैम्प में सहभागीता की गई। कैंप में एनएसएस अधिकारी समेत हिन्दी महाविद्यालय के तीन स्वयंसेवक भी सम्मित थे, जिसमें एम. गोपी कृष्णा, के. वंशी गौड़ और केबीवीपी कार्तिक शामिल रहे। कैंप में व्यक्तित्व विकास संबंधी गांधी दर्शन, कृषि संबंधी जानकारी, जैन इरिगेशन सिस्टम कंपनी विजीट तथा विभिन्न प्रदेशों से आए अधिकारियों द्वारा शिविरार्थियों के मनोबल को बढ़ाने हेतु वक्तव्य प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का समापन 4 अक्तूबर को शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र विवरित करते हुए किया गया।

इफ्को एवं एनसीयूआई के अध्यक्ष दीपक संघानी के इंटरनेशनल रफ्फेशन यूनियनल के दिनेशक पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने पर नगरागमन पर स्वागत करते हुए महेश बैंक चेयरमैन रमेश कुमार बंग व अन्य।

आईटीआईसी-आईआईटीएच-ग्रीनको बिल्ड कार्यक्रम के तहत 75 इनोवेटर्स का चयन किया

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। आईआईटी हैदराबाद (आईआईटीएच) में आईटीआईसी इनक्यूबेटर और ग्रीनको ग्रुप ने विश्व पर्यावरण दिवस पर जून 2023 में बोल्ड एंड यूनिक आइडियाज लीड डेवलपमेंट (बिल्ड) प्रोग्राम का सहयोग और शुभारंभ किया है। बिल्ड एक विशिष्ट पहल है जिसका उद्देश्य 75 छात्र नवप्रवर्तनकों की खोज और समर्थन करना है और उनके रचनात्मक और अभिनव विचारों के लिए वित्तीय सहायता के साथ-साथ अन्य आवश्यक सहायता प्रदान करना है।

कार्यक्रम के निष्पादन के लिए, आईटीआईसी ने देश भर में फैले 13 इनक्यूबेटरों और संस्थानों के साथ भागीदारी की। आवेदन के लिए कॉल जून 2023 में छात्रों के लिए आवेदन करने के लिए खुली थी। एक राष्ट्रव्यापी आउटरीच किया गया था, जिसमें 1,000 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों तक पहुंचना शामिल था। कार्यक्रम को देश भर के 120+ संस्थानों से 600+ आवेदन प्राप्त हुए। 600+ आवेदनों की भारी प्रतिक्रिया के साथ, टीम ने 75 इनोवेटर्स को शॉर्टलिस्ट करने के लिए व्यापक मूल्यांकन और आभासी साक्षात्कार आयोजित किए। चुने गए 75 इनोवेटर्स को प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्ट्स बनाने के लिए 1 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता दी जाएगी। वित्तीय सहायता के अलावा, उन्हें अनुभवी उद्योग विशेषज्ञों और शिक्षाविदों से मेंटरशिप, प्रोटोटाइप संसाधनों तक पहुंच और सह-कार्य स्थान भी मिलेगा।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

जीईएफ इंडिया द्वारा फ्रीडम रिफाइंड सनफ्लावर ऑयल का 10 लीटर मल्टी-यूज जार लॉन्च

हैदराबाद, 11 अक्तूबर (स्वतंत्र वार्ता)। जीईएफ इंडिया व्दारा फ्रीडम रिफाइड सनफ्लावर ऑयल का 10 लीटर मल्टी-यूज जार लॉन्च किया गया। इस संदर्भ में, इस नई एसकेयु को मशहूर एंकर व टॉलीवुड एक्ट्रेस सुश्री सुमा कनकला तथा जीईएफ बिक्री व मार्केटिंग एवं जीईएफ इंडिया का प्रबंधन उपाध्यक्ष पी. चंद्र शेखर रेड्डी द्वारा लॉन्च किया गया। जिसमें जेमिनी एडिबल्स और एम्प; फैट्स इंडिया लिमिटेड (जीईएफ इंडिया) ने फ्रीडम रिफाइड के अपने नए पुन: प्रयोज्य 10 लीटर बहु-उपयोग जार के लॉन्च की घोषणा की। इसमें उन्होंने कहा कि सूरजमुखी का तेल जो नया 10 लीटर एसकेयु फ्रीडम रिफाइंड सनफ्लावर का नवीनतम संयोजन है। साथ ही यह फ्रीडम रिफाइंड सनफ्लावर ऑयल वर्तमान में निम्न विभिन्न पैक साइजों में उपलब्ध है, जिनमें 200 मिली, 500 मिली पाउच, 1-लीटर पाउच, 500 मिली पीईटी बोतल, 1 लीटर पीईटी बोतल, 2 लीटर पीईटी बोतल, 5 लीटर एचडीपीई जार, 10 लीटर मल्टी-यूज जार, 15 किलो टिन, 15 लीटर टिन और 15 लीटर एचडीपीई जार आदि शामिल हैं। इस लान्च के अवसर पर जीईएफ बिक्री व मार्केटिंग एवं जीईएफ इंडिया का प्रबंधन उपाध्यक्ष पी. चंद्र शेखर रेड्डी ने कहा कि, फ्रीडम रिफाइड सनफ्लावर तेल का नया पुन: प्रयोज्य 10-लीटर बहु-उपयोग जार विशेष रूप से तैयार किया गया है तथा इसका लक्ष्य बिल्कुल नए एसकेयु में सूरजमुखी तेल की बेहतरी को बढ़ावा देना है। यही नही इसे आधुनिक उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं और बढ़ती प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए उत्तम ढंग से डिज़ाइन किया गया है तथा यह पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का उपयोग करने से जुडा है, जिसका पुन: उपयोग किया जा सकता है।

इस बारे में संबंधित अधिकारियों ने आगे बताया कि, फ्रीडम रिफाइंड सनफ्लावर ऑयल भारत में सूरजमुखी तेल श्रेणी में नंबर 1 बिक्रीयोग्य ब्रांड है। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में सूरजमुखी तेल से जुडा मार्केट साइज 50,000 टन से अधिक है। इस अवसर पर बोलते हुए जीईएफ इंडिया बिक्री एवं मार्केटिंग, उपाध्यक्ष पी. चंद्र शेखर रेड्डी ने आगे कहा, हम एक उपभोक्ता-केंद्रित संगठन हैं और लगातार इस व्यवसाय से जुडे हैं। जिसमें उपभोक्ता आवश्यकताओं का आकलन करना शामिल है। हमें नया पुन: प्रयोज्य 10 लीटर मल्टी- प्रस्तुत करते हुए बडी खुशी हो रही है।एक सुदर और सुविधाजनक एसकेयु प्रदान करने के लिए, फ्रीडम रिफाइड सूरजमुखी तेल के जार का उपयोग करें। हम आशा करते हैं कि, वर्तमान में हमारे प्रिय ग्राहकों को यह नया सुविधाजनक पुन: प्रयोज्य बहुउपयोगी जार जरूर पसंद आएगा। इसे संरक्षक और तेल की खपत के बाद भंडारण के लिए उपयोग किया जाता है। 'फ्रीडम' मूल्य के लायक मूल्य वाला ब्रांड है तथा हमारे उपभोक्ताओं के लिए नवोन्मेषी पैकिंग डिजाइनों के साथ, सेवन करने की आजादी' प्रदान की जाती है।यही नहीं यह फ्रीडम हेल्दी कुकिंग ऑयल रेंज जो फ्रीडम रिफाइंड सनफ्लावर ऑयल, फ्रीडम के रूप में उपलब्ध है।

नगर पधारे नईदिल्ली के राम मंदिर के महंत श्रीश्री रामकृष्णदासजी महाराज का स्वागत करते हुए ए. गौतम जैन, अजय नाहटा, संपत, श्रीकांत व अन्य।

बालकमपेट येलम्मा मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद उपस्थित बजरंग सेना तेलंगाना टीम के सदस्य एनआर लक्ष्मण राव, रजनी श्रीरामोजू, सूर्य शुक्ला, किरण, विनीत यादव, अजय नायडू व अन्य।

केबीआर पार्क में इच्छापूर्ति गणेशजी की पूजा आरती में भाग लेते हुए वीए प्रसाद, राजेंद्र कुमार अग्रवाल, अशोक नरेडी, मोहन लाल टुंडावले, विजय कुमार, महेंद्र कुमार अग्रवाल, दर्पण अग्रवाल, सुभाष बड़ेगांव, अशोक लाखोटिया, गोपाल बल्देवा, गोपाल इन्नाणी, विट्ठलदास अग्रवाल व अन्य।

विश्व के सर्वप्रथम गोल्ड मेडलिस्ट
अब तक परेशान क्यों ?
कोई भी पंडित, तांत्रिक, बाबा हम से पहले काम करके दिखाये मुँहमांगा ईनाम पाये
हजारो के दुखो को खुशी में बदलने वाले
बाबा साबिर खान बंगाली
जैसे पति-पत्नी मे झगड़ा, सौतन व दुश्मन से छुटकारा, मनचाहा प्यार, गृहक्लेश, विदेश यात्रा, जादू-टोना, AtoZ समस्याओ का तुरंत समाधान पाये।
9810940158
स्पे० वशीकरण व मुठकरनी

एशियाई खेलों में कमाल करने वाले खिलाड़ियों का सम्मान, भारतीय सेना प्रमुख ने जीता दिल

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। एशियाई खेल 2023 में भारत ने शानदार प्रदर्शन किया और कुल 107 पदक अपने नाम किए। पदक जीतने वाले खिलाड़ियों में कई खिलाड़ी सेना के थे। इन सभी खिलाड़ियों का भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने सम्मान किया।

एशियाई खेल 2023 में भारत ने ऐतिहासिक प्रदर्शन किया है। पहली बार भारत की झोली में किसी एशियाई खेल में 100 से ज्यादा पदक आए। भारत ने हांगझोऊ एशियाई खेलों में कुल 107 पदक अपने नाम किए। यह इस प्रतियोगिता में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। इससे पहले भारत ने 2018 एशियाई खेलों में 70 पदक जीते थे। भारत ने इस बार 28 स्वर्ण अपने नाम किए। किसी भी एशियाई खेलों में यह भारत द्वारा जीते गए स्वर्ण पदकों का सर्वाधिक आंकड़ा है।

भारतीय खिलाड़ी इस बार 100 पार के नारे के साथ हांगझोऊ के लिए रवाना हुए थे और इसे हकीकत में बदलकर ही वापस लौटे। भारत के 100 पदक होने के बाद सभी ने खिलाड़ियों की मजकर तारीफ की थी। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सभी खिलाड़ियों का सम्मान किया। अब भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने भी उन खिलाड़ियों का सम्मान किया, जो सेना का हिस्सा हैं और एशियाई खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इन खिलाड़ियों में स्वर्ण पदक जीतने वाले नीरज चोपड़ा और अविनाश साबले भी शामिल थे।सेना प्रमुख ने एशियाई खेलों में भाग लेने वाले सेना के जवानों के साथ बातचीत भी की।

खिलाड़ियों के सम्मान का कार्यक्रम दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में रखा गया था। इस दौरान नीरज चोपड़ा ने कहा ₹हमें बहुत अच्छा महसूस हो रहा है... आज हम सेना प्रमुख से मिलने जा रहे हैं। सेना में शामिल हर खिलाड़ी उनसे मिलने जा रहा है। भारतीय सेना ने हमेशा खिलाड़ियों का समर्थन किया है... हमें हमेशा सेना पर गर्व है, चाहे हम इसका हिस्सा हों या नहीं।₹

इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में एशियाई खेलों में शामिल सभी खिलाड़ियों का सम्मान किया था। उन्होंने पदक जीतने वाले खिलाड़ियों की जमकर तारीफ की थी और उनके लिए कई सुविधाओं का एलान भी किया था। इसके साथ ही उन्होंने खिलाड़ियों से डोपिंग के खिलाफ जागरुकता फैलाने की अपील भी की थी। पीएम ने पदक नहीं जीत पाने वाले खिलाड़ियों की हौसला अफजाई करते हुए कहा था कि आप ओलंपिक के लिए मन लगाकर तैयारी में जुट जाएं।

इंग्लैंड के खिलाफ धीमे ओवर के लिए बांग्लादेश पर जुर्माना

पाकिस्तान टीम ने हैदराबाद ग्राउंड स्टाफ का आभार जताया

हैदराबाद, 1 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। बांग्लादेश पर वर्ल्ड कप के लीग मैच में इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए मुकाबले में धीमी ओवर फेंकने की वजह से मैच फीस का 5 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। आईसीसी एलीट पैनल के मैच रेफरी जवागल श्रीनाथ ने बांग्लादेश को निर्धारित समय में 1 ओवर कम फेंकने का दोषी माना।

फील्ड अंपायर अहसान रजा और पॉल विल्सन, तीसरे अंपायर एड्रियन होल्ड स्टॉक और चौथे अंपायर कुमार धर्मसेना ने बांग्लादेश के कम ओवर फेंकने का दोषी मानते हुए मैच रेफरी से शिकायत की थी। मैच रेफरी जवागल श्री नाथ ने इसे स्वीकार कर लिया। इंग्लैंड और बांग्लादेश के बीच यह मुकाबला धर्मशाला में खेला गया था।

पाकिस्तान की टीम ने हैदराबाद के ग्राउंड स्टाफ का जताया आभार, बाबर आजम ने अपनी जर्सी गिफ्ट की

पाकिस्तान टीम ने हैदराबाद के ग्राउंड स्टाफ का आभार जताया और कप्तान बाबर आजम ने अपनी मैच जर्सी उन्हें भेंट में दी। दरअसल पाकिस्तान ने हैदराबाद में ही अपने वर्ल्ड कप के दोनों मुकाबले खेले। वहीं पाकिस्तान ने अपने शुरुआती दो मैच भी इसी ग्राउंड पर खेले।

6 अक्टूबर को पाकिस्तान ने खेले अपने पहले मुकाबले में नीदरलैंड को हराया। जबकि दूसरे मुकाबले में 10 अक्टूबर को श्रीलंका को 6 विकेट से हराया।

पाकिस्तान ने वर्ल्डकप में सबसे ज्यादा रन चेज करने का रिकॉर्ड भी बनाया। दरअसल श्रीलंका ने पहले खेलते हुए निर्धारित 50 ओवर में 9 विकेट पर 344 रन बनाए। वहीं पाकिस्तान ने 345 रन के टारगेट का पीछा करते हुए हुए 4 विकेट के नुकसान पर 48.4 ओवर में ही लक्ष्य को हासिल कर लिया।

एशियन गेम्स से गोल्ड जीतकर लौटी पानीपत की बहू

कबड्डी टीम की कप्तान है रितु, बोलीं- भावुक था वो पल, जब बजा राष्ट्रीय गान

पानीपत, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। पानीपत की बहू रितु गुलिया की कप्तानी में भारतीय महिला कबड्डी टीम ने चीन में आयोजित एशियन गेम्स में भारत को गोल्ड मेडल दिलाया।

पानीपत (सचिन) : पानीपत की बहू रितु गुलिया की कप्तानी में भारतीय महिला कबड्डी टीम ने चीन में आयोजित एशियन गेम्स में भारत को गोल्ड मेडल दिलाया। जिसके बाद से ही हरियाणा ही नहीं, बल्कि हिमाचल में भी खुशी की लहर है। क्योंकि रितु हिमाचल की बेटी है। जिसकी शादी पानीपत के रहने वाले प्रो कबड्डी प्लेयर रोहित गुलिया के साथ हुई थी। बुधवार को पानीपत लौटने पर रितु का भव्य स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि वो पल बहुत ही भावुक था, जब उनकी कप्तानी में देश को गोल्ड मिला। इससे भी भावुक करने वाला पल वह था, जब वहां राष्ट्रीय गान बजा।

9 साल बाद हासिल किया गोल्ड मेडल

रितु गुलिया ने कहा कि उन्हें इस कामयाबी पर काफी खुशी हो रही है क्योंकि उन्होंने इस मेडल के लिए करीब 9 साल इंतजार किया है। रितु गुलिया ने कहा कि देश का कब्बडी में 2014 में गोल्ड मेडल आया था और फिर 2018 में सिल्वर मेडल आया था जिसके बाद कड़ी मेहनत के चलते अब उन्हें 9 साल बाद गोल्ड मेडल हासिल करने में कामयाबी मिली है। रितु गुलिया ने कहा कि उन्हें अपने आप पर भरोसा था और यह कंफर्म था कि उन्हें मेडल जरूर मिलेगा, लेकिन चीन की टीम भी काफी अच्छी टीम थी जिसके चलते मुकाबला काफी कठिन था। उन्होंने कहा कि एक देश की टीम की कप्तानी करना एक बड़ी जिम्मेदारी होती है, लेकिन हमारे कोच और हमारी टीम की मेहनत व स्पोर्ट से सब आसान लगने लगता है। यही वजह है कि आज हमारी टीम स्वर्ण पदक लेकर भारत लौटी है।

रितु गुलिया ने बताया कि अब उनका अगला लक्ष्य नेशनल और इंटरनेशनल जो भी प्रतियोगिता होगी। उसमें अपना सर्वोच्च प्रदर्शन करना है। रितु गुलिया ने हरियाणा सरकार और उसकी खेल नीतियों की भी खूब सराहना की। उन्होंने कहा कि पूरे देश में हरियाणा सरकार ही खिलाड़ियों को सबसे ज्यादा कैश प्राइज देती है और जिसका परिणाम यही है कि आज देश में हरियाणा के सबसे ज्यादा 37 मेडल है। उन्होंने उन मां-बाप को भी संदेश दिया जो अपनी बेटियों को घर से निकलने के लिए रोकते हैं। उन्होंने कहा कि जिस तरीके से जीवन में पढ़ाई जरूरी है। उसी तरीके से खेलकूद भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि वह हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले की रहने वाली है, जिस तरीके से उन्हें हिमाचल में अपने परिवार का स्पोर्ट मिला। उसी तरीके से उन्हें ससुराल में भी उनके पति सास-ससुर सबका सहयोग मिला। यही वजह है कि आज वह इस प्लेटफार्म पर मौजूद हैं। रितु ने कहा कि वह पिछले 16 सालों से कबड्डी की खिलाड़ी है।

कबड्डी टीम की कप्तान रितु गुलिया अभी भारतीय रेलवे में नौकरी कर रही है। इससे पहले रितु 2011 में जूनियर महिला एशियन गेम्स में बतौर कप्तान भारत को गोल्ड मेडल दिला चुकी हैं। साल 2018 में जकार्ता में खेले गए एशियन गेम्स में बतौर रेडर खेलते हुए रजत पदक दिलाया। नेपाल में 2019 में खेली गई एशियन गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने वाली टीम में प्लेइंग-7 में रही। रितु ने कबड्डी का प्रशिक्षण बिलासपुर स्थित होस्टल से लिया। साल 2014 से वह प्रदेश से बाहर है और रेलवे की ओर से खेलती आ रही है।

शुभमन गिल अहमदाबाद के लिए रवाना

भारत-पाकिस्तान मैच में हो सकती है एंट्री

अहमदाबाद, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 में भारत-पाकिस्तान मैच से पहले टीम इंडिया को एक खुशखबरी मिली है। दरअसल टीम के धाकड़ बल्लेबाज शुभमन गिल की सेहत में काफी सुधार हुआ है। क्रिकनेक्स्ट की रिपोर्ट के मुताबिक वे अब चेन्नई से अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए हैं। ऐसे में अगर वे पूरी तरह फिट रहते हैं तो पाकिस्तान के खिलाफ मैच में टीम के लिए ओपनिंग कर सकते हैं।

चेन्नई के अस्पताल में थे भर्ती

बता दें कि वर्ल्ड कप 2023 की शुरुआत से ठीक पहले भारत के युवा सितारे शुभमन गिल डेंगू पॉजिटिव हो गए थे। इसके चलते वे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में टीम का हिस्सा नहीं बन पाए। गिल अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में भी भाग नहीं लेंगे। रविवार शाम को उनके प्लेटलेट्स अचानक डाउन हो गए थे जिसके चलते स्टार बैटर को अस्पताल में भी भर्ती कराया गया था। हालांकि वे सोमवार शाम को वहां से डिस्चार्ज हो गए थे

फील्डिंग कोच ने जताई जल्द ठीक होने की आशंका

बता दें कि इससे पहले भारतीय क्रिकेट टीम के फील्डिंग कोच विक्रम राठौर ने गिल को लेकर अपडेट दिया था। उन्होंने कहा था कि "वह ठीक हो रहे हैं। हां, उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन वह एहतियात के तौर पर था। वह होटल में वापस आ गया है; वह ठीक हो रहे हैं। इसलिए, मेडिकल टीम द्वारा निगरानी की जा रही है और हमें जो भी अपडेट मिलेगा, हमें उम्मीद है कि वह जल्द ही ठीक हो जाएगा। वह वास्तव में अच्छा दिख रहा है।"

पाकिस्तान और इंग्लैंड की जीत से पाइंट्स टेबल में बदलाव, बिना मैच खेले भारत को फायदा

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 में पाकिस्तान और इंग्लैंड की जीत से पइंट्स टेबल में बदलाव हुआ है।

भारत में खेले जा रहे क्रिकेट वर्ल्ड कप 2023 में इंग्लैंड-बांग्लादेश और पाकिस्तान-श्रीलंका के बीच मैच खेला गया। इन दोनों मैचों के नतीजे से प्वाइंट्स टेबल में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है।

हैदराबाद में श्रीलंका पर ऐतिहासिक जीत के बाद पाकिस्तान 2023 विश्व कप अंक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। मेन इन ग्रीन ने प्रतियोगिता में अपनी दूसरी जीत दर्ज करने के लिए 345 रन के लक्ष्य का पीछा किया। इस जीत से पाकिस्तान को 2023 विश्व कप अंक तालिका में दो और अंक हासिल करने में मदद मिली। मेन इन ग्रीन के दो मैचों में चार अंक हैं। श्रीलंका के खिलाफ हाई स्कोरिंग मुकाबले के बाद उनका नेट रन रेट +1.620 से घटकर +0.927 हो गया है।

आखिरी स्थान पर पहुंची श्रीलंका

2023 विश्व कप अंक तालिका में न्यूजीलैंड शीर्ष टीम बनी हुई है। ब्लैककैप्स का नेट रन रेट पाकिस्तान से थोड़ा बेहतर है। इस बीच, हैदराबाद में हार के बावजूद श्रीलंका 10वें से आठवें स्थान पर पहुंच गया है। उनका नेट रन रेट -2.040 से बढ़कर -1.161 हो गया है।

इंग्लैंड ने लगाई लंबी छलांग

पहले मैच में इंग्लैंड की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बांग्लादेश को 130 रनों के अंतर से मात दे दी। इस जीत की बदौलत टीम ने लंबी छलांग लगाई है। इंग्लैंड 10वें स्थान से सीधे 5वें पर पहुंच गई है। वहीं भारत को बिना मैच खेले ही फायदा हुआ है। टीम इंडिया अब चौथे नंबर पर आ गई है।

पाकिस्तानी दिग्गजों ने निकाल ली कुलदीप यादव की तोड़

14 अक्टूबर को कैसे बचेंगे 'चाइनामैन' स्पिनर?

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। वर्ल्ड कप 2023 का सबसे बहु प्रतीक्षित मुकाबला 14 अक्टूबर को भारत और पाकिस्तान के बीच अहमदाबाद में खेला जाएगा। इस मैच पर सबकी नजर गड़ी हुई है। मैच से पूर्व पाकिस्तानी दिग्गजों ने एक शो में भारतीय स्टार स्पिनर कुलदीप यादव की उम्दा गेंदबाजी की काठ निकाली है। दरअसल, मौजूदा समय में कुलदीप यादव जबर्दस्त फॉर्म में चल रहे हैं। उन्होंने अपने पिछले मुकाबले में भी उम्दा गेंदबाजी करते हुए भारत को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। उनसे पाकिस्तान के खिलाफ भी उम्दा गेंदबाजी की उम्मीद है।

फुलर लेंथ गेंदबाजी से कुलदीप बने खतराः

कुलदीप यादव की फुलर लेंथ गेंदबाजी बल्लेबाजों को लगातार हैरानी में डाले हुए है। जहां भारतीय चाइनामैन' स्पिनर लगातार अपनी इन गेंदों से विपक्षियों को परेशान कर रहा है। वहीं पाकिस्तानी स्पिनर शादाब खान अपनी इन गेंदों से कुछ खास छाप नहीं छोड़ पा रहे हैं। कुलदीप के इसी गेंदबाजी पर स्पोर्ट्स चैनल ए में पाकिस्तान के दिग्गज क्रिकेटरों मिस्बाह उल हक, शोएब मलिक और मोईन खान ने खास बातचीत की। पूर्व कप्तान मिस्बाह ने अपना विचार साझा करते हुए कहा है कि विपक्षी बल्लेबाज कुलदीप यादव को 'पिक' नहीं कर पा रहे हैं।

उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, 'लेग स्पिनर (दाहिने हाथ) का फिर भी समझ आता है। शादाब को करीब सारे बल्लेबाज खेल चुके हैं। बाएं हाथ के रिस्ट लेग स्पिनर को समझना मुश्किल होता है। इनकी गेंदे थोड़ी अलग तरीके से आती हैं। इन एंगल के गेंदबाजों की गुगली समझ से परे होती है। ऐसे गेंदबाज बहुत कम हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाफ आपने देखा वो उनकी आगे की गेंदों को भी पैर बंद करके खेल रहे थे। ये उस वक्त होता है जब आपको समझ नहीं आती है कि गेंद किस तरह घूमने वाली है।

49 वर्षीय पूर्व क्रिकेटर के अनुसार कुलदीप यादव ने खुद में काफी बदलाव किए हैं। वह धीमी गति के बजाय अब तेज गति से गेंदे डाल रहे हैं। धीमी गति की गेंदों पर बल्लेबाजों को थोड़ा आइडिया लग जाता था, लेकिन तेज गति की गेंदों पर वह समझ नहीं पा रहे हैं। नए वेरिएशन की वजह से वह काफी सफल हो रहे हैं।

मिस्बाह के अलावा शोएब मलिक का मानना है कि उनके तरकश में स्लाइडर गेंदे भी आ गई हैं। पहले उनकी गेंदबाजी मे यह नहीं देखी जाती थी। इन सब के अलावा लेग स्पिनर और लेफ्ट ऑर्म लेग स्पिनर का एंगल अलग होता है। लेग ऑर्म लेग स्पिनर कम होते हैं। जिसकी वजह से बल्लेबाजों को ऐसे स्पिनरों को खेलने का अनुभव कम होता है।

इन दोनों खियालड़ियों से इतर पूर्व विकेटकीपर मोईन अली का मानना है कि एंगल-वेरिएशन तो है, लेकिन उससे बड़ी बात यह है कि वह गेंद को टर्न कराने की कोशिश करता है। मैदान मे जब गेंद घूमती है तो अच्छे से अच्छे बल्लेबाजों की हवा टाइट हो जाती है। उसका मेन हथियार उसका टर्न कराना है।

लीग मैचों में पाकिस्तानी कप्तान बाबर के बल्ले पर लग गया ब्रेक

भारत के खिलाफ प्रदर्शन पर अब रहेगी निगाहें

खेल डेस्क, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। प्रैक्टिस मैच में अच्छा प्रदर्शन करने वाले पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम का बल्ला लीग मैचों में खामोश है। पाकिस्तान का अगला मैच अब भारत के साथ है।

वर्ल्ड कप 2023 में पाकिस्तान की टीम ने अपना दूसरा लीग मैच श्रीलंका के खिलाफ 6 विकेट से जीत लिया और इससे पहले इस टीम ने नीदरलैंड्स को 81 रन से हराया था। पाकिस्तान के लिहाज से यह काफी अच्छी शुरुआत है और कप्तान बाबर आजम इससे खुश भी होंगे क्योंकि अगर वह नहीं चल पा रहे हैं तो टीम के अन्य खिलाड़ी प्रदर्शन कर रहे हैं और मैच जीत रहे हैं। श्रीलंका के खिलाफ हुए मैच में पाकिस्तान को जीत के लिए 345 रन का बड़ा लक्ष्य मिला था, लेकिन अबदुल्लाह शफीक के 113 रन और मो. रिजवान के नाबाद 131 रन की पारी के दम पर पाकिस्तान ने यह मैच जीत लिया।

लीग मैचों में खामोश हो गया बाबर आजम का बल्ला

पाकिस्तान की लगातार दो जीत के बाद इस टीम के लिए जो सबसे बड़ी समस्या है वह यह कि टीम के कप्तान बाबर आजम जो पहले लय में दिख रहे थे लीग मैचों में वह बल्ले से

कमजोर दिख रहे हैं। लीग मैच शुरू होने से पहले बाबर आजम ने दो प्रैक्टिस मैचों में 80 और 90 रन की पारी खेली थी, लेकिन उसके बाद लीग मैचों में उनका बल्ला खामोश हो गया। पहले लीग मैच में नीदरलैंड्स के खिलाफ उन्होंने 18 गेंदों पर 5 रन जबकि दूसरे लीग मैच में श्रीलंका के खिलाफ 15 गेंदों पर 10 रन की पारी खेली। बाबर इन दोनों मैचों के दौरान बेहद दबाव में नजर आ रहे थे और इसका असर उनकी बल्लेबाजी पर साफ तौर से दिख रहा था।

भारत के खिलाफ बाबर के प्रदर्शन पर रहेगी नजर

पाकिस्तान की टीम को अपना तीसरा लीग मैच में भारत के खिलाफ 14 अक्टूबर को अहमदाबाद में खेलना है। अब बाबर आजम इस मैच में रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम इंडिया के खिलाफ कैसा प्रदर्शन करते हैं इस पर सबकी नजर रहने वाली है। वैसे भारत के खिलाफ वनडे में बाबर आजम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है और उन्होंने 7 मैचों की 6 पारियों में 28 की औसत से 168 रन बनाए हैं और उनका बेस्ट स्कोर 68 रन रहा है। बाबर आजम भारत के खिलाफ वनडे मैचों में अब तक एक अर्धशतक तक नहीं लगा पाए हैं।

'मैं तो टूरिस्ट गाइड हूं, हॉलीडे मना रहा हूं...'

अफगानिस्तान के मेंटर बने अजय जडेजा ने ली चुटकी

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (एजेंसियां)। भारत बनाम अफगानिस्तान के बीच 11 अक्टूबर को विश्व कप का मैच खेला जाएगा। भारत के लिए इस मैच को जीतने में ज्यादा मुश्किल नहीं आने की संभावना है। अफगानिस्तान के मुकाबले भारतीय टीम काफी अधिक मजबूत है, ऐसे में माना जा रहा है कि भारत को दो अंक फ्री में मिलने वाला है। इस मैच से पहले भारत के पूर्व क्रिकेटर और अफगानिस्तान के कोच बने अजय जडेजा ने अफगानिस्तान की चुटकी ली है। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि मैं तो ऐसे ही एक टूरिस्ट गाइड हूं।

अजय जडेजा से जब विश्व कप में अफगानिस्तान टीम की प्रदर्शन को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने कहा कि हम बेहतर कर रहे हैं। बड़ी टीम-छोटी टीम कुछ नहीं होता है, अगर अफगानिस्तान किसी बड़ी टीम को हरा देता है, तो अफगानिस्तान भी बड़ी टीम बन जाएगी। इसके अलावा उन्होंने राशिद खान की तारीफ करते हुए कहा कि वह जहां भी जाते हैं, कमाल का प्रदर्शन कर दिखाते हैं। वह टीम के सबसे अहम सदस्य में से एक हैं। इसके अलावा जब जडेजा से पूछा गया कि आपको अफगानिस्तान के साथ जुड़कर कैसा लग रहा है। इस पर जडेजा ने कहा कि मैं तो इंजॉय कर रहा हूं, ये मेरे लिए तो त्योहार है। मैं तो सिर्फ एक टूरिस्ट गाइड हूं।

अफगानिस्तान के पास पहले से ही कई कोच हैं, जो एक-डेढ़ साल से लगे हुए हैं। टीम के पास गेंदबाजी कोच है, बल्लेबाजी का कोच है। मैं तो ऐसे ही हूं। अजय जडेजा के इस बयान पर जडेजा खुद और सभी रिपोर्टर भी ठहाके लगाकर हंसने लगे। उन्होंने कहा कि मैं तो हॉलीडे मनाने आपके साथ आ गया हूं।

सीपी ने चुनाव के मद्देनजर अधिकारियों के साथ बैठक की

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। 30 नवंबर को होने वाले टीएसएलए चुनावों के लिए आदर्श आचार संहिता लागू है, शहर के पुलिस आयुक्त सीवी आनंद ने तैयारियों की स्थिति का बारीकी से आकलन करने और चुनाव ड्यूटी पर कर्मचारियों को निर्देशित करने के लिए एक वीडियो कॉन्फ्रेंस आयोजित की। सीवी आनंद ने अपने भाषण में चार प्रमुख बिंदुओं पर प्रक्रियाएं, रिपोर्ट की समय पर तैयारी, निगरानी और पुलिस बलों का व्यापक प्रशिक्षण और ब्रीफिंग पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ये मुद्दे चुनाव के अंत तक महत्वपूर्ण हैं। साथ ही औचक निरीक्षण तेज करने के भी स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं। डीसीपी, एसीपी और नोडल एसीपी को अपने-अपने स्तर पर राजनीतिक दलों के साथ बैठकें करने का निर्देश दिया गया है। उनका

डीसीपी, एसीपी और नोडल एसीपी को अपने-अपने स्तर पर राजनीतिक दलों के साथ बैठकें करने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने अपने कार्यालयों में चौबीसों घंटे काम करने के लिए विशेष कक्षों को सक्रिय करने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त, सीपी ने कहा कि आंशिक रूप से उनके अधिकार क्षेत्र के तहत मतदान केंद्रों की प्रभावी सुरक्षा

सुनिश्चित करने के लिए पड़ोसी आयुक्तालयों के अधिकारियों के साथ एक समन्वित योजना आवश्यक है। सीपी आनंद ने अधिकारियों से अवैध नकदी, शराब, ड्रग्स या अन्य प्रलोभनों से संबंधित किसी भी घटना के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने को कहा। अभियान के दौरान यह सुनिश्चित करना कि विभिन्न राजनीतिक दल एक ही मार्ग का अनुसरण न करें, तदनुसार मार्ग योजना, समय और अनुमति जारी करना ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई अप्रिय घटना न हो, आदि पर चर्चा की गई। सभी लाइसेंस प्राप्त आग्नेयास्त्रों को सरेंडर किया जाना चाहिए और चुनाव के बाद तक कोई नया लाइसेंस जारी नहीं किया जाना चाहिए। स्थैतिक निगरानी टीमों (एसएसटी) को तैनात करने और फ्लाइंग स्क्वाड टीमों को अपने निरीक्षण तेज करने का आदेश दिया गया। इंटीग्रेटेड इंटर कमिश्नरेट चेकपोस्ट की संख्या 11 से बढ़ाकर 18 की जाएगी।

बैठक में गैर-जमानती वारंट (एनबीडब्ल्यू) के कार्यान्वयन, सोशल मीडिया की निगरानी, हवाला ऑपरेटरों की निगरानी, समस्याग्रस्त व्यक्तियों को बांधने और अन्य परिचालन मामलों पर भी चर्चा की गई। सीपी आनंद ने कहा कि शहर के 100 प्रतिशत पुलिस बल को सुविधा केंद्रों के माध्यम से मतदान करना चाहिए। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) विक्रम सिंह मान ने कहा कि ईसीआई द्वारा निर्धारित समय सीमा के भीतर नियमों का सख्ती से पालन करना चाहिए। नोडल एसीपी के माध्यम से जिम्मेदारियों का विकेंद्रीकरण, दृश्य पुलिसिंग में वृद्धि और विभिन्न कानूनी नियमों और अन्य प्रावधानों पर कर्मचारियों के बीच जागरूकता होनी चाहिए। विश्व प्रसाद, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त-विशेष शाखा ने क्षेत्र स्तर की खुफिया जानकारी प्राप्त करने के महत्व पर जोर दिया। यह सुझाव दिया गया है कि नकदी, कीमती धातुओं और अन्य उपहारों को जब्त करते समय प्रक्रियाओं को समान रूप से लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने फर्जी मतदाता पहचान पत्र निर्माताओं, परिवहन कंपनियों और कूरियर सेवा प्रदाताओं पर निगरानी रखने, चुनावी अपराधों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और पुलिस बल को स्पष्ट निर्देश देने के महत्व पर जोर दिया। यातायात अपर आयुक्त सुधीर बाबू ने चुनाव समाप्ति तक शहर में यातायात विभाग द्वारा किये जाने वाले उपायों के बारे में बताया। सीएआर मुख्यालय के संयुक्त पुलिस आयुक्त श्रीनिवासुलु ने चुनाव संबंधी कर्तव्यों में लगे पुलिस अधिकारियों के लिए एस्कॉर्ट्स, वाहनों, व्यक्तिगत सुरक्षा अधिकारियों (पीएसओ) और ड्राइवरों की तैनाती के लिए की गई साजो-सामान व्यवस्था के बारे में जानकारी दी। सीटीसी में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) कंपनियों की आवास व्यवस्था और अन्य संबंधित मामलों के बारे में बताया गया है।

बालिका दिवस मनाने के लिए 2के दौड़ आयोजित

मंचेरियल, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। मंचेरियल स्थित स्वयंसेवी संगठन वनिता बक्षु ने बुधवार को यहां बालिका आंतरिक दिवस को चिह्नित करने के लिए 2के दौड़ का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि जिला प्रधान न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव उदय कुमार थे। संगठन के संस्थापक अध्यक्ष रंगा वेणु ने कहा कि बालिकाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षा की भावना पैदा करना हर किसी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह दिन 2012 से लैंगिक असमानता को मिटाने, लड़कियों की चुनौतियों का समाधान करने और लड़कियों के सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए मनाया जा रहा है। उन्होंने इस आयोजन की सफलता के लिए अपना सहयोग देने वालों को धन्यवाद दिया। बेल्लमपल्ली राजस्व मंडल अधिकारी के सुरेश, वनिता बक्षु सह-संस्थापक कविता तल्लापल्ली, और कुर्मा सुनीथा और कई अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभिन्न शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

तेलंगाना के विकास के लिए भाजपा ही एक मजबूत विकल्प : चुघ

देश के साथ तेलंगाना में भी भ्रष्टाचार मुक्त भाजपा सरकार बनेगी

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ ने मीडिया में बयान जारी कर केसीआर सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि तेलंगाना की बीआरएस सरकार एक ऐसी गाड़ी की तरह है जिस गाड़ी का स्टियरिंग मजलिस के हाथ में होगी। वो तेलंगाना को सही दिशा में नहीं ले जा सकती, जिस गाड़ी का स्टिरिंग राष्ट्रवादी ताकत के हाथ में है वही तेलंगाना को सही रास्ते पर ले जा सकती है। रोजगार के वादे पर विफल रहे केसीआर को तेलंगाना की जनता से वोट मांगने का कोई अधिकार नहीं है। पिछले 10 साल में बंगारू तेलंगाना बनाने का सपना दिखाकर सत्ता में आये केसीआर केवल और केवल परिवार और स्वयं के अहंकार में डूबे हुए हैं। बीआरएस की सरकार में अहंकार और भ्रष्टाचार, परिवारवाद, कानून व्यवस्था की बदहाली चरम पर है। चुघ ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदीजी ने परिवार की पॉलिटिक्स को समाप्त करके पॉलिटिक्स ऑफ परफॉरमेंस को स्थापित किया है। मोदी जी इतने लोकप्रिय हैं कि दुनिया में चाहे कोई भी आपदा आए, कई देश प्रधानमंत्री मोदी की सलाह मानते हैं। आज प्रधानमंत्री मोदी जी के सशक्त और मजबूत नेतृत्व में भारत पूरी दुनिया का नेतृत्व कर रहा है। चुघ ने कहा कि तेलंगाना में बीजेपी की सरकार बनने के बाद, हर 17 सितंबर को प्रदेश के हर जिले-गांव में हैदराबाद विमोचन दिवस मनाया जाएगा। चुघ ने कहा कि भारत आज सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन तकनीक, हरित हाइड्रोजन का उत्पादन, ड्रोन तकनीक, अंतरिक्ष विज्ञान और अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत आज दुनिया में दूसरे नंबर पर मोबाइल बनाने वाला, तीसरा सबसे ज्यादा स्टार्ट उप रखने वाला और चौथा रिन्यूएबल एनर्जी उत्पादक है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के युवाओं को, दुनिया के युवाओं से मुकाबला करने के लिए एक मजबूत मंच देने का काम किया है। चुघ ने कहा कि मजलिस से निजात पानी है और जनता का कल्याण करने वाली सरकार लानी है तो एक मात्र रास्ता नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कमल फूल की भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनानी है। तेलंगाना की जनता को तय करना है कि अगले पांच वर्षों तक तेलंगाना में देश को मजबूती देने वाली भाजपा शासन करेगी या भ्रष्ट-घोटालेबाज बीआरएस और कांग्रेस। केसीआर की पार्टी का एक ही लक्ष्य है कि कविता को जेल जाने से बचाना और केटीआर को मुख्यमंत्री बनाना है।

विधानसभा चुनाव के लिए पुख्ता सुरक्षा इंतजाम : डीएस चौहान

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए, राचकोंडा सीपी डीएस चौहान ने आज उप्पल ट्रैफिक डीसीपी कार्यालय में आईपीएस पुलिस कर्मियों के साथ एक समीक्षा बैठक की। इसके बाद उन्होंने सीपी अधिकारियों को निर्देश दिया। इस बैठक में बोलते हुए कमिश्नर ने कहा कि राज्य में विधानसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने के मद्देनजर चुनाव आयोग के नियमानुसार अनुशासन में रहकर काम करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि चुनाव में कोई गलती न हो। सुझाव दिया गया है कि अधिकारियों को चुनाव से जुड़े हर पहलू पर पूरी जानकारी होनी चाहिए, चीजों को दो बार जानना चाहिए और उन्हें अच्छी तरीके से लागू करना चाहिए। अधिकारियों को सलाह दी जाती है कि वे संबंधित पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले मतदान केंद्रों की पूरी जानकारी रखें और सशस्त्र कार्रवाई करें। अधिकारियों ने सलाह दी कि कर्मियों को मैदानी स्तर पर स्थिति की जानकारी रखनी चाहिए और

उन लोगों पर निगरानी रखनी चाहिए जो चुनाव ड्यूटी में बाधा डालने का काम करते हैं। इसमें कहा गया है कि चुनाव के संचालन में महत्वपूर्ण मतदान केंद्रों और संवेदनशील मतदान क्षेत्रों की पहचान के संबंध में स्पष्टता होनी चाहिए और चुनाव प्रबंधन उपकरणों द्वारा अपनाए गए मार्ग की जांच की जानी चाहिए। सुझाव दिया गया है कि चेक पोस्टों पर गरिमामय सुरक्षा स्थापित की जाए और अधिकारी कर्मचारियों के साथ समन्वय बनाकर काम करें। अत्यावश्यक मतदान केंद्र क्षेत्रों में सीसी कैमरे लगाना, मतदान केंद्र में बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था पहले से सुनिश्चित कर ली जाए, अन्य सरकारी विभागों से समन्वय बनाकर काम किया जाए, पिछले चुनाव में गड़बड़ी पैदा करने वालों, उपद्रवी तत्वों पर पूरी नजर रखी जाए, सस्पेक्ट शीट वाले और हिस्ट्री शीट वाले को बाउंड ओवर किया जाए। चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था, सोशल मीडिया पर विवाद पैदा करने वाले संदेश व वीडियो, वायरल होने वाली बातें तथा छोटी-छोटी बातों की जानकारी उच्च अधिकारियों को दी जाए, कर्मचारी सदैव सतर्क रहें तथा समस्याग्रस्त गांवों का दौरा किया जाए। ज्वाइंट सीपी अंबर किशोर झा, यदाद्री डीसीपी राजेश चंद्रा, रचाकोंडा ट्रैफिक डीसीपी 1 अभिषेक महंती, मलकाजीगिरी डीसीपी दारावत जानकी, एसओटी डीसीपी 1 गिरिधर, महेश्वरम डीसीपी श्रीनिवासन, एसबी डीसीपी बाला, डीसीपी साइबर क्राइम अनुराधा स्वामी थे। बैठक में आईपीएस, डीसीपी एडमिन इंदिरा, एलबी नगर डीसीपी साईश्री, ट्रैफिक डीसीपी 2 श्रीनिवासुलु, महिला सुरक्षा डीसीपी उषा विश्वनाथ, डीसीपी क्राइम अरविंद, अतिरिक्त डीसीपी शामिल हुए।

नकली 'सोने' की वस्तुओं का उपयोग करके लोगों को ठगने वाले गिरोह का भंडाफोड़

सूर्यापेट, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। सूर्यापेट शहर पुलिस ने बुधवार को नकली सोना बेचने की पेशकश करके लोगों को ठगने वाले अंतरराज्यीय गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया और उनके कब्जे से नकली सोने की चेन जब्त की। गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान महाराष्ट्र के अंबिका नगर के धरमचंद कन्हैया लाल सोलंकी उर्फ धर्मा (45) और गुजरात के अहमदाबाद के नारायण उर्फ नटवर (55) के रूप में हुई।

पुलिस अधीक्षक राजेंद्र प्रसाद ने मीडिया कॉन्फ्रेंस में गिरफ्तार लोगों को पेश करते हुए कहा कि गश्त कर रही पुलिस ने धरमचंद और नटवर को उस समय हिरासत में ले लिया, जब वे शहर के खम्मामक्रॉस रोड पर संदिग्ध रूप से घूम रहे थे। पुलिस की पूछताछ में उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया. वे खम्मम जिले के एडुल्लापुर में रह रहे थे और बीज बेचने के व्यवसाय के नाम पर गांव घूम रहे थे। वे भोले-भाले लोगों को अपने निशाना बनाते थे कि जब वे सड़क के काम के लिए गए थे तो उन्हें दो किलोग्राम सोने के गहने मिले थे और इसे 10 लाख रुपये में बेचने की पेशकश करते थे। उन्होंने कहा, वे लोगों को परीक्षण के लिए सोने के एक छोटे आभूषण देंगे। उन्होंने कहा कि दोनों आरोपियों ने खम्मन से सूर्यापेट की एक महिला को भी सोना इकट्ठा करने का लालच दिया और उसके साथ धोखाधड़ी की। महिला ने 22 अगस्त को सूर्यापेट टाउन पुलिस में मामले की शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद घटना पर मामला दर्ज किया गया। उन्होंने बताया कि गिरोह के दो सदस्यों ने अनंतपुरम और बेंगलुरु में भी इसी तरह के अपराध किए थे।

आंध्र उच्च न्यायालय के लिए चार नए न्यायाधीश नामित

नई दिल्ली, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के लिए चार नए न्यायाधीशों को नामित किया है। इसने अधिवक्ता कोटे में नए न्यायाधीश के रूप में चार वरिष्ठ अधिवक्ताओं हरिनाथ, किरणमयी, सुमित और विजय की सिफारिश की है।

चुनाव आचार संहिता को लेकर अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रशिक्षण सत्र आयोजित

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद सीमा में विधानसभा का स्वतंत्र, निष्पक्ष, सहभागी, सुलभ, समावेशी और सुरक्षित चुनाव कराने के मद्देनजर स्टीफन रवींद्र, पुलिस आयुक्त, साइबराबाद ने सभी के साथ एक बैठक सह प्रशिक्षण सत्र बुलाया। आज साइबराबाद पुलिस आयुक्तालय के मुख्य सम्मेलन कक्ष में डीसीपी, एसीपी, पुलिस निरीक्षक साइबराबाद कमिश्नरेट के सभी पुलिस कर्मी जूम के माध्यम से ऑनलाइन बैठक में शामिल हुए। सीपी, साइबराबाद ने ईसीआई और चुनावी अपराधों द्वारा जारी आदर्श आचार संहिता के दिशानिर्देशों को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता पर जोर दिया। एयुरी रामुलु, कानूनी सलाहकार ने सभा को संबोधित किया और एमसीसी के उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ पालन किए जाने वाले कानूनी प्रावधानों को दोहराया। उन्होंने जन प्रतिनिधि अधिनियम, भारतीय दंड संहिता, हैदराबाद सिटी पुलिस अधिनियम, एमवी अधिनियम और निवारक उपायों की कई धाराओं पर चर्चा की। कलमेश्वर शिंगनेवर डीसीपी क्राइम ने एफएसटी, एसएसटी और आरओ के समन्वय से अपराधियों के खिलाफ मामले दर्ज करते समय पालन की जाने वाली प्रक्रिया को दोहराया था। बैठक में भाग लेने वालों में डीसीपी क्राइम कमेश्वर शिंगनेवर, डीसीपी एडमिन योगेश गौतम, डीसीपी बालानगर श्रीनिवास राव, डीसीपी मेडचल पी. शबरीश, डीसीपी शमशाबाद के. नारायण रेड्डी, डीसीपी राजेंद्रनगर आर. जगदीश्वर रेड्डी, डीसीपी माधापुर गोन संदीप, डीसीपी चुनाव सेल, साइबराबाद अशोक कुमार और अतिरिक्त डीसीएसपी, एसीएसपी और इंस्पेक्टरों ने बैठक में भाग लिया।

आंध्र पुलिस ने शिशु बिक्री घोटाले का खुलासा किया

महिला पर दस दिन के बच्चे को बेचने का दबाव बनाया गया

अमलापुरम, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। इस तटीय शहर में एक व्यक्ति ने दूध पिलाने वाली मां को अपने दस दिन के शिशु को बेचने के लिए धमकाया और प्रेरित किया और इस मामले में शामिल पांच लोग सलाखों के पीछे पहुंच गए हैं। पुलिस के अनुसार, 34 वर्षीय पासुपुलेटी वरलक्ष्मी, अपने पति द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद, गोल्लागुडेम इलाके में अकेली रह रही थी। वह एक निजी बैंक में सफाईकर्मी के रूप में काम कर रही थी और पिछले तीन साल से रसोइया कोंडापल्ली रामू के साथ रह रही थी। 25 सितंबर को वरलक्ष्मी ने एक बेटी को जन्म दिया और रामू को पैसे की पेशकश की गई, वह बच्ची को बेचने के लिए तैयार था। उसने वरलक्ष्मी को धमकाया और लालच दिया और 4 अक्टूबर को शिशु को काकीनाडा ले गया और कुछ लोगों को बेच दिया, जिनसे एक निःसंतान दंपति ने शिशु को 3.2 लाख रुपये में खरीदा। सौदे में वरलक्ष्मी को केवल 1.4 लाख रुपये का भुगतान किया गया था। जब रामू ने अपने 20,000 रुपये खर्च कर दिए, तो वरलक्ष्मी ने शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने छह लोगों की पहचान की और उनमें से रामू समेत पांच को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार लोगों को अदालत में पेश किया गया और राजमहेंद्रवरम केंद्रीय कारागार भेज दिया गया। पुलिस ने बच्चे को मां को सौंप दिया।

आडिगमेट ब्रिज मरम्मत कार्य : हैदराबाद पुलिस ने 11 नवंबर तक यातायात परिवर्तन की घोषणा की

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद ट्रैफिक पुलिस ने गुरुवार से 11 नवंबर तक मरम्मत के लिए एडिकमेट ब्रिज नल्लाकुंटा को बंद करने के मद्देनजर ट्रैफिक डायवर्जन की घोषणा की। यातायात प्रतिबंध इस प्रकार हैं - सुबह 5 बजे से रात 10 बजे के बीच विद्यानगर 'वाई' जंक्शन से आने वाली आरटीसी बसों सहित भारी वाहन, जो तारनाका, हब्सीगुडा, सिकंदराबाद, लालापेट, ईसीआईएल, नाचाराम, मौलाली की ओर जाने का इरादा रखते हैं, उन्हें विद्यानगर में डायवर्ट किया जाएगा। वाई जंक्शन विद्यानगर आरओबी की ओर-एनसीसी गेट-उस्मानिया यूनिवर्सिटी रोड।

विद्यानगर 'वाई' जंक्शन से तारनाका या चिलकलगुडा या सिकंदराबाद की ओर आने वाले सभी हल्के मोटर वाहनों को ओयू में शामिल होने के लिए ललितानगर-बौद्धनगर एक्स रोड-वारासीगुडा-नामलागुंडू-सीताफलमंडी जंक्शन-सीताफलमंडी आरओबी लेने के लिए रामनगर टी जंक्शन पर रामनगर गुंडू की ओर मोड़ दिया जाएगा। तारनाका जंक्शन से आने वाले और विद्यानगर-हिंदी महाविद्यालय-शंकरमठ-फीवर हॉस्पिटल रोड की ओर जाने वाले भारी वाहनों को उस्मानिया यूनिवर्सिटी रोड-एनसीसी गेट-विद्यानगर रोड पर जाने के लिए ओयू 'वाई' जंक्शन पर डायवर्ट किया जाएगा।

तरनाका जंक्शन से आने वाले सभी दो, तीन और चार पहिया वाहन जो विद्यानगर-हिंदी महाविद्यालय-शंकरमठ- फीवर हॉस्पिटल रोड की ओर जाना चाहते हैं, उन्हें प्रोफेसर रामिरेड्डी डिस्टेंस एजुकेशन सेंटर (पीजीआरडीसी) से बौद्धनगर एक्स रोड की ओर मोड़ दिया जाएगा।

रात 10 बजे से सुबह 5 बजे के बीच: विद्यानगर 'वाई' जंक्शन-रामनगर टी जंक्शन से रामनगर गुंडू की ओर आने वाले भारी वाहनों को रामनगर गुंडू से रामनगर एक्स रोड की ओर मोड़ दिया जाएगा। भारी वाहनों को ओयू रोड या ललितानगर रोड पर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

तारनाका जंक्शन से भारी वाहनों को सीताफलमंडी टी जंक्शन पर आरओबी सीताफलमंडी की ओर मोड़ दिया जाएगा। भारी वाहनों को ओयू रोड या आदिकमेट रोड की ओर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी और वारासीगुडा रोड की ओर भी अनुमति नहीं दी जाएगी और सीताफलमंडी जंक्शन पर चिलकलगुडा रोड की ओर मोड़ दिया जाएगा। पुलिस ने नागरिकों से उपरोक्त परिवर्तनों पर ध्यान देने और गंतव्य तक पहुंचने के लिए उपरोक्त मार्गों से बचने के लिए वैकल्पिक मार्ग अपनाने का अनुरोध किया है।

11 साल के लड़के ने की आत्महत्या

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। अपने माता-पिता द्वारा किताबें न खरीदने से परेशान होकर एक 11 वर्षीय लड़के ने आत्महत्या कर ली। पुलिस ने यह जानकारी दी। यह घटना बुधवार को तेलंगाना के भद्राद्रि कोत्तागुडेम जिले में हुई। पुलिस के मुताबिक, सुधीर बाबू ने जिले के बेंदालापाडु में अपने घर पर फांसी लगा ली।

लड़का, एक स्कूल में कक्षा 7 का छात्र, किताबों के लिए माता-पिता से पैसे मांग रहा था। पैसे देने से इंकार करने पर वह परेशान था। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है। उसी जिले में एक अन्य घटना में, एक डिग्री छात्र की आत्महत्या से मृत्यु हो गई। बीमारी से अवसादग्रस्त एस विजय (19) ने तल्लाडा मंडल के नारायणपुरम गांव में अपने घर पर फांसी लगा ली। विजय डिग्री प्रथम वर्ष का छात्र था। उसके माता-पिता ने पुलिस को बताया कि वह बीमारी के कारण अवसादग्रस्त था।

चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवारों को अपना खर्च 40 लाख के अंदर रखना होगा : शरतचंद्र

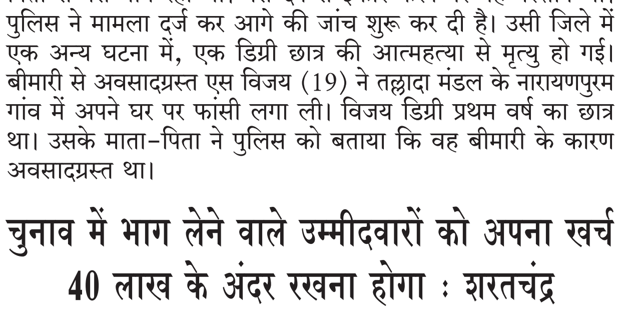

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। चुनाव व्यय के नोडल पदाधिकारी शरतचंद्र ने बताया कि अगर चुनाव प्रत्याशी अपना चुनावी खर्च नहीं दिखाएंगे तो धारा 10ए के तहत बर्खास्तगी की संभावना है। नियम 88 के अनुसार जनता को चुनाव खर्च की गणना करने का भी अधिकार है। उन्होंने कहा कि लेखांकन टीमें समय-समय पर एसओआर (शैडो ऑफ रजिस्टर) एफसी (साक्ष्य) को शामिल करेंगी। पेड न्यूज की जांच एमसीएमसी द्वारा की जाएगी और आरओ अनुकूल और आलोचनात्मक खबरों पर 96 घंटे के भीतर चुनाव उम्मीदवार को नोटिस देगा। उन्होंने कहा कि उम्मीदवार को 48 घंटे के भीतर जवाब देना होगा और इसका खर्च उम्मीदवार के चुनाव खाते में दर्ज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सी-विजिल ऐप के माध्यम से प्राप्त शिकायतों का जवाब 100 मिनट के भीतर दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस ऐप के माध्यम से शिकायत मिलने के 15 मिनट के अंदर फ्लाइंग स्क्वाड टीम को मौके पर पहुंचना होगा और 30 मिनट के अंदर रिपोर्ट आरओ को सौंपनी होगी। आरओ को संबंधित याचिका को छोड़ने या निपटाने के लिए 50 मिनट के भीतर उच्च अधिकारियों को प्रस्तुत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सी-विजिल एप में नागरिक फोटो, वीडियो और ऑडियो के माध्यम से अपनी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं। उड़न दस्ता टीमें सुमोटो के माध्यम से सी-विजिल में भी शिकायत दर्ज करा सकती हैं। फ्लाइंग स्क्वाड टीमों को सी-विजिल इन्वेस्टर गेटोर ऐप डाउनलोड करना चाहिए और तैयार रहना चाहिए। कार्यक्रम में फ्लाइंग स्क्वायड, वीडियो सर्विलांस टीम व अन्य ने भाग लिया।

एक दशक पुराने धोखाधड़ी मामले में तीन लोग गिरफ्तार

हैदराबाद, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना अपराध जांच विभाग ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया जो धोखाधड़ी के एक मामले में शामिल थे और पिछले दस वर्षों से अदालती कार्रवाही से बच रहे थे। अतिरिक्त डीजीपी (सीआईडी) महेश भागवत ने कहा कि 2013 में 29 करोड़ की धोखाधड़ी मामले में गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में राजीव राजाराम कश्यप, विमलेंद्र राजकुमार मिश्रा और रिंकू विमलेंद्र मिश्रा शामिल हैं, जो सभी मुंबई के निवासी हैं तथा अनिल बेनीप्रसाद अग्रवाल के साथ मिलकर एक कंपनी से रुपये की धोखाधड़ी की थी। प्रारंभ में, नाचाराम पुलिस ने मामला दर्ज किया और बाद में इसे अपराध जांच विभाग को स्थानांतरित कर दिया, जिसने मामले में कई संदिग्धों को गिरफ्तार किया।

पुलिस ने कामारेड्डी में 2.40 लाख बेहिसाबी नकदी जब्त की

कामारेड्डी, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस ने मंगलवार देर रात जिले के मद्नूर मंडल के सलाबतपुर चेक पोस्ट पर एक व्यक्ति से 2.40 लाख रुपये जब्त किये। पुलिस के अनुसार, सलाबतपुर चेक पोस्ट पर एक नियमित जांच के दौरान, महाराष्ट्र से कार में यात्रा कर रहे एक व्यक्ति को 2.40 लाख रुपये की बेहिसाब नकदी ले जाते हुए पाया गया। चूंकि व्यक्ति आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने में विफल रहा, इसलिए नकदी जब्त कर ली गई और आयकर अधिकारियों को जब्ती के बारे में सूचित किया गया।

सत्ता में आए तो आदिवासियों को 10 फीसदी आरक्षण : किशन रेड्डी

मुलुगु, 11 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय पर्यटन मंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी ने आज सत्ता में आने के बाद राज्य के आदिवासियों को उनकी आबादी के अनुपात में 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने का वादा किया। उन्होंने कहा कि स्थानीय निकाय चुनावों, शिक्षा और रोजगार के अवसरों में आदिवासी युवाओं और युवाओं के लिए आरक्षण लागू किया जाएगा। बुधवार को केंद्रीय मंत्री ने मुलुगु जिले के मेदाराम में सम्मक्का और सरलम्मा के दर्शन किये। बाद में उन्होंने मीडिया से बात की। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि जिले में तेलंगाना के लिए एक आदिवासी केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है और इसके निर्माण के लिए पहले चरण में 900 करोड़ रुपये आवंटित किये गये हैं। उन्होंने कहा कि वह प्रधानमंत्री को धन्यवाद दे

रहे हैं जिन्होंने आदिवासी समुदाय और तेलंगाना के लोगों की ओर से विश्वविद्यालय का नाम सम्मक्का और सरक्का के नाम पर रखा। उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार आदिवासियों की संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने और, पूरे भारत को आदिवासी नायकों के बलिदान को याद दिलाने के लिए ईमानदारी से काम कर रही है। इस मौके पर उन्होंने आदिवासियों के कल्याण के लिए केंद्र की ओर से की गई पहल के बारे में बताया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि हैदराबाद में 25 करोड़ रुपये की केंद्र सरकार की निधि से एक आदिवासी स्मारक संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा और कहा कि 6.5 करोड़ रुपये की केंद्रीय निधि से एक आदिवासी अनुसंधान संस्थान शुरू करने के लिए तैयार है।

किशन रेड्डी ने याद दिलाया कि प्रधान मंत्री ने मुलुगु जिले में रुद्रेश्वर मंदिर (रामप्पा मंदिर) को यूनेस्को की मान्यता दिलाने के लिए एक विशेष पहल की है। वह तेलंगाना वन सम्मक्का और सरलम्मा के चरणों में प्रणाम कर रहे थे। उन्होंने कामना की कि सम्मक्का और सरलम्मा, जो आदिपाराशक्ति के अवतार हैं, का आशीर्वाद तेलंगाना के लोगों पर बना रहे। उन्होंने कहा कि देश में आदिवासियों की संस्कृति और परंपराओं की रक्षा के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आदिवासी नायकों को उचित सम्मान देने पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इस अवसर पर विधायक इटेला राजेंदर, पूर्व सांसद गरिकापाटी मोहन राव, रवींद्र नाइक, रमेश राठौड़ सहित भाजपा नेता उपस्थित थे।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.